।। ओ३म् ।।

वैदिक संसार

वर्ष -४ | अंक- २ | मासिक-हिन्दी | दिसम्बर,२०१४ | इन्दौर(म.प्र.) | मूल्य-२५/- | कुल पृष्ठ-४८

भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक महोदय द्वारा पंजीकृत, पंजीयन संख्या एम.पी. एच.आई. एन. २०१२/४५०९६, डाक पंजीयन - एम.पी./आई.डी.सी./१४०५/२०१२-१४

वैदिक संसार प्रकाशन के विशिष्ट सहयोगी :

संस्थापक : माता मोहिनी देवी शर्मा मेमोरियल ट्रस्ट ,गान्धीधाम
पूर्व अध्यक्ष : जांगिड ब्राह्मण प्रादेशिक सभा, गुजरात
मुख्य आधार स्तम्भ : अखण्ड भारत गो रक्षा अभियान
उपाध्यक्ष : प्लास्टिक यूनिट्स एसोसिएशन, गान्धीधाम
सदस्य : काण्डला स्पेशल इकोनामिक इण्ड. एसो.,काण्डला

श्री नेमीचन्द जी शर्मा

भारत जमीन का टुकड़ा नहीं,
जीता जागता राष्ट्र पुरूष है।
हिमालय मस्तक है, कश्मीर किरीट है,
पंजाब और बंगाल दो विशाल कंधे हैं।
पूर्वी और पश्चिमी घाट दो विशाल जंघाये हैं।
कन्या कुमारी इसके चरण हैं, सागर इसके पग पखारता है।
यह चन्दन की भूमि है, अभिनन्दन की भूमि है,
यह तर्पण की भूमि है, यह अर्पण की भूमि है।
इसका कंकर-कंकर शंकर है,
इसका बिन्दु-बिन्दु गंगा जल है।
हम जियेंगे तो इसके लिये,
मरेंगे तो इसके लिये - अटल

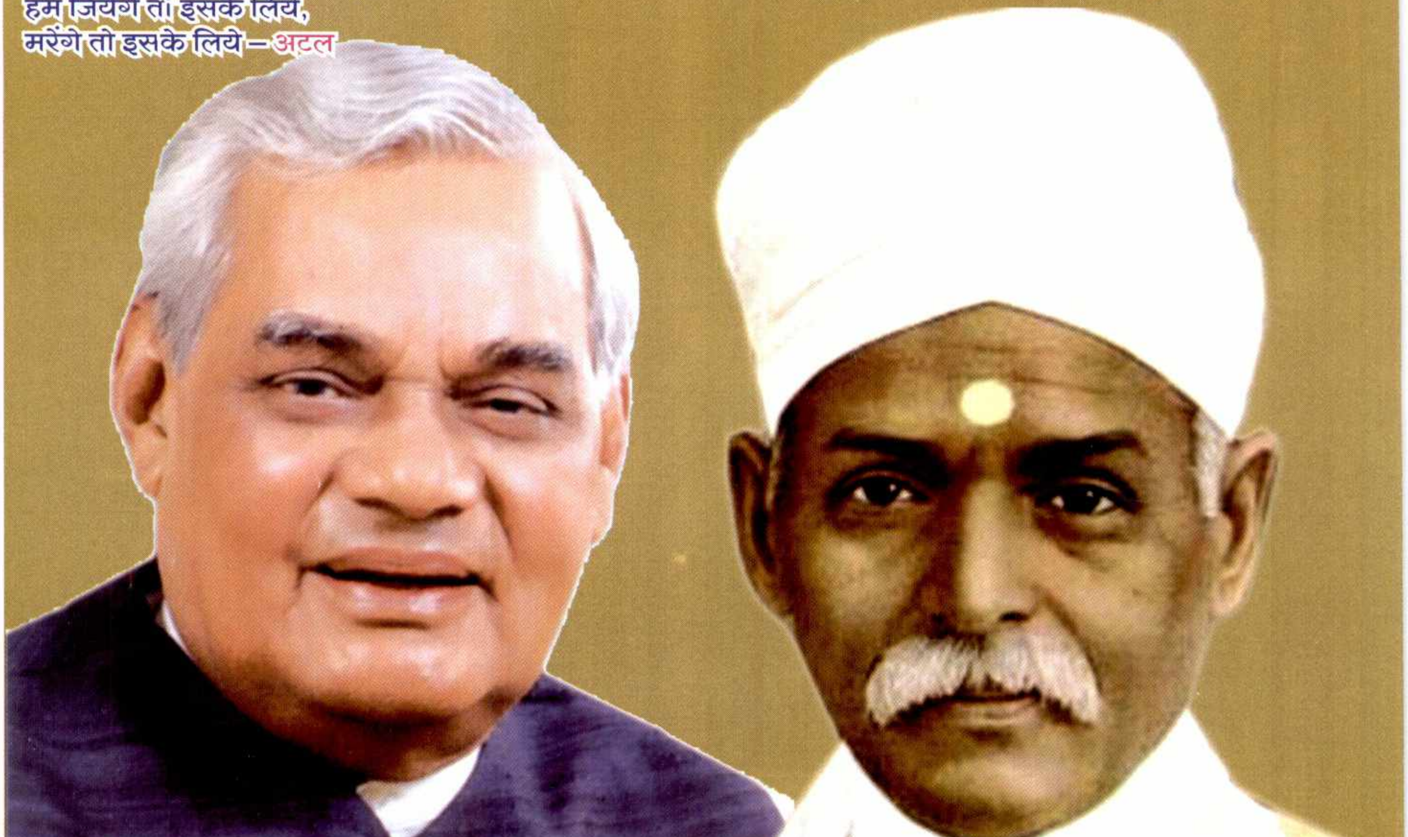

भारत रत्न
मा. अटल बिहारी वाजपेयी
पूर्व प्रधानमन्त्री
संस्थापक अध्यक्ष - भारतीय जनता पार्टी
जन्म : २५-१२-१९२४ ग्वालियर (म.प्र.)

भारत रत्न
महामना पं. मदनमोहन मालवीय
संस्थापक : बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय (१९१६)
संस्थापक : अखिल भारतवर्षीय ब्राह्मण महासभा (१९३९)
जन्म : २५-१२-१८६१ निधन : १२-११-१९४६

राष्ट्र एवं राष्ट्रीय मूल्यों को समर्पित दो महान् व्यक्तित्व

भारत रत्न से सम्मानित तथा आपका जन्म दिवस सुशासन दिवस घोषित

दोनों महान् आत्माओं को जन्म दिवस २५ दिसम्बर सुशासन दिवस पर
शत-शत नमन एवं राष्ट्रनिष्ठों को हार्दिक-हार्दिक बधाई ...

thearyasamaj.org

आर्य इण्डस्ट्रीज मस्का (मांडवी) सौराष्ट्र (कच्छ) का समारोह पूर्वक शुभारम्भ की चित्रावली

समारोह शुभारम्भ पर दीप प्रज्वलन करते स्वामी शान्तानन्द जी सरस्वती, गुजरात राज्य के गो संवर्धन राज्य मंत्री ताराचन्द भाई छेड़ा, स्वामी जी के पास बैठे है आचार्य वीरेन्द्र गुरुजी भुजोड़ी तथा आर्य समाज मांडवी के प्रधान नवीन भाई वेलाणी एवं मंत्री जी के पास बैठे हैं भाजपा के पदाधिकारी

विस्तृत विवरण पृष्ठ ४१ पर

मंत्री जी को वैदिक साहित्य भेंट करते स्वामी जी

भाजपा के पदाधिकारी को वैदिक साहित्य भेंट करते स्वामी जी

लखमशी भाई वाड़िया द्वारा अतिथि का सम्मान

लखमशी भाई वाड़िया के साथ बैठे गुरुकुल भवानीपुर के प्रधान शंकरभाई भानुशाली एवं प्रकाशक वैदिक संसार

आर्य समाज भुज की कर्मठ महिला पदाधिकारी

वाड़िया परिवार के साथ बैठे गणमान्य महानुभाव

thearyasamaj.org

प्राणी मात्र के हितकारी वैदिक धर्म का सजग प्रहरी

वैदिक संसार

आर.एन.आई. - एम.पी.एच.आई.एन. २०१२/४५०६९

डाक पंजीयन - एम.पी./आई.सी.डी./१४०५/२०१५-१७

वर्ष- ४, अंक- ०२

अवधि- मासिक, भाषा हिन्दी

प्रकाशन आंग्ल दिनांक : २५ दिसम्बर २०१४

प्रकाशन आर्ष तिथि : माघ, शुक्लपक्ष, चतुर्थी

सृष्टि संवत् : १,९७,२९,४९,११६

कलि संवत् : ५,११६

विक्रम संवत् : २०७१, दयानन्दाब्द : १९१

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक

सुखदेव शर्मा, इंदौर - ०९४२५०६९४९१

संपादक	*सह सम्पादक*
गजेश शास्त्री	नितिन शर्मा
०९९९३७६५०३१	०९४२५९५५१९१

शब्द संयोजन एवं साज सज्जा - कु. भाग्यश्री शर्मा

प्रकाशन स्थल एवं पत्र व्यवहार का पता

१२/३, संविद नगर, इंदौर-१८, मध्यप्रदेश

ई.मेल.-vaidiksansar@gmail.com

वैदिक संसार का आर्थिक आधार

एक प्रति - २५/-

वार्षिक सहयोग - २५०/- (१२ प्रति)

त्रैवार्षिक सहयोग - ६००/- (३६ प्रति)

आजीवन सहयोग - २,१००/- (१५ वर्ष)

आधार स्तंभ - ११,०००/- (न्यूनतम्)

विशिष्ट सहयोग - २५,०००/-

अन्य सहयोग - स्वेच्छानुसार

बैंक खाता धारक - वैदिक संसार

भारतीय स्टेट बैंक, शाखा-ओल्ड पलासिया, इंदौर

करंट खाता क्रमांक - ३२८५९५९२४७९

आई.एफ.एस. कोड क्र.-एस.बी.आई.एन.०००३४३२

अध्यात्म के विषय में व्याप्त अंधकार को दूर करने एवं वेदोक्त ज्ञान के प्रकाश को प्रकाशमान करने में सहायक ज्योति पुंज - वैदिक संसार

अनुक्रमणिका

विषय	प्रस्तुति	पृष्ठ क्र.
क्या धर्म परिवर्तन किया जा सकता है?	संपादकीय	०४
वेद मंत्र, भावार्थ एवं पत्रिका उद्देश्य	वैदिक संसार	०४
हमारी महान् विभूतियाँ -..... -यमी वैवस्वती	शिवनारायण उपाध्याय	०५
-श्रीमंत बाजीराव	स्वामी उमाशंकर सांख्यायन	०५
कर्मफल सिद्धान्तः एक भ्रान्ति - एक सच	रामनिवास गुणग्राहक	०६
स्वामी दयानन्द और विज्ञान	शिवनारायण उपाध्याय	०७
चारों वेदों के प्रथम व अन्तिम मन्त्र	बाबूलाल जोशी	०९
यज्ञो वै श्रैष्ठतमं कर्म	कैलाश पाटीदार 'काका'	१०
अमावस्या का वैदिक महत्व	साभार-कँवलसिंह आर्य	१०
यस्तन्न वेद किमृचा करिष्यति	रामफलसिंह आर्य	११
यदि ईश्वर वेद ज्ञान न देता तो मनुष्य पशुवत ही....	खुशहालचन्द्र आर्य	१३
प्राचीन भारत की राजनैतिक व्यवस्था	अन्नु आर्या	१४
वेद द्वारा अनुशंसित श्रम-संस्कृति की गरिमा	उमाकान्त उपाध्याय	१५
महर्षि दयानन्द दस वर्ष भी और जी जाते	देशराज आर्य	१६
एक ईन्सान के तरह-तरह के भगवान	श्रीमती ममता प्रकाश शर्मा	१७
भगवान् शब्द के वाच्यार्थ और व्यवहार	जगदीशप्रसाद आर्य	१७
नहीं बचेगा अत्याचारी	नन्दलाल निर्भय	१८
नास्तिकों वेद निन्दकः	दार्शनेय लोकेश	१९
अपना शौर्य दिखाओ	डॉ. लक्ष्मी निधि	२०
स्वामी दयानन्द सरस्वती जी	राधेश्याम गोयल	२०
यक्ष-युधिष्ठिर संवाद	मृदुला अग्रवाल	२०
राष्ट्र-सम्वर्धन एवं राष्ट्र की बाह्यन्तर सुरक्षा	देवनारायण भारद्वाज	२१
आर्यों के नाम दूर देश से चिंतन हेतु पत्र	आचार्य ज्ञानेश्वरार्यः	२२
श्रीमद्भगवद्गीता को गीता ही क्यों कहते हैं?	शिवदेवार्यः	२७
भगवद् गीता का एक सदाचार मूलक श्लोक	डॉ. भवानीलाल भारतीय	२७
जन्मपत्री तथा भविष्यवाणियाँ	मनसाराम वैदिक तोप	२९
ज्ञान के अभाव में फल-फूल रहा अंधविश्वास......	रामगोपाल सैनी	३१
नास्त्रेदेमस का भविष्यफल और रामपाल	सुरेन्द्र किशोर	३२
हमें नेताओं में नहीं, राजनीति में रुची लेनी चाहिए	गोविन्दराम आर्य	३३
समाज-सुधार के अवरोधक	पृथ्वी वल्लभदेव सोलंकी	३४
सीरिया में आर्य वंशजों को मिटाना चाहता है.....	चंद्रशेखर लोखण्डे	३५
एक अविस्मरणीय वैदिक यात्रा	ओमप्रकाश आर्य	३६
आर्यजगत् के हित चिन्तक .... के नाम पत्र	स्वामी ओमानन्द सरस्वती	३७
मृत्यु पश्चात् होने वाले अवैदिक कृत्यों पर पूर्ण.....	वैदिक संसार	३८
आर्य जगत् की प्रस्तावित गतिविधियाँ	संकलित	३९
वैदिक संसार आर्य जगत् की गतिविधियों का....	वैदिक संसार	४०
आर्य जगत् की सम्पन्न गतिविधियाँ	संकलित	४२
वैवाहिक आवश्यकताऐं	संकलित	४५
शोक सूचनाएँ	संकलित	४६

thearyasamaj.org

संपादकीय

त्वरित प्रतिक्रिया – क्या धर्म परिवर्तन किया जा सकता है?

वर्तमान में चहूँ ओर शोर सुनाई दे रहा है कोई हिन्दू को मुसलमान-ईसाई बना रहा है, तो कोई मुसलमान को हिन्दू-ईसाई बना रहा है तो कहीं ईसाई को मुसलमान और हिन्दू बनाने का प्रयास किया जा रहा है।

अब किसी व्यक्ति को हिन्दू, ईसाई, बौद्ध, मुसलमान, जैन अर्थात् ईरानी, किरानी, पुराणी तो आसानी से बनाया जा सकता है और कोई व्यक्ति चाहे तो सभी का स्वाद थोड़े-थोड़े दिनों के लिये ले भी सकता है। इसे ही धर्म परिवर्तन का नाम दिया जा रहा है। **प्रश्न उठता है कि मानव नाम के प्राणी को हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, यहूदी, पारसी, जैन-बौद्ध बनाया जाना ज्यादा आवश्यक है अथवा मनुष्य ?**

आईये ! प्रश्न-उत्तर के माध्यम से विचार करें कि धर्म के विषय में अल्पज्ञ मनुष्य द्वारा किया गया घालमेल आखिर क्या है ?

प्रश्न - क्या किसी व्यक्ति का धर्म परिवर्तन किया जा सकता है ?

उत्तर - किसी भी व्यक्ति का धर्म परिवर्तन नहीं किया जा सकता।

प्रश्न - ऐसा क्यों ?

उत्तर - क्योंकि धर्म एक मात्र है उसका विकल्प ही नहीं है तथा धर्म के बगैर मानव पशु हो जाएगा धर्म युक्त होने से ही वह मनुष्य है।

प्रश्न - आप कहते हैं धर्म एक है किन्तु हमें सर्वत्र असंख्य धर्म दृष्टिगोचर होते हैं जैसे-हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, यहूदी, पारसी, जैन, बौद्ध आदि-आदि।

उत्तर - जी हाँ ! धर्म एकमात्र होता है जिसका सम्बन्ध परमात्मा प्रदत्त ज्ञान आधारित मनुष्यकृत व्यवहार से है। आपने जितने नाम बताऐं हैं अथवा संसार में जितने भी तथाकथित धर्म प्रचलित हैं यह सब धर्म न होकर मत, पन्थ, सम्प्रदाय हैं जिनके मूल में इन्हें प्रारम्भ करने वाला न कोई कोई व्यक्ति होता है।

प्रश्न - परमात्मा प्रदत्त ज्ञान आधारित मनुष्यकृत व्यवहार का नाम धर्म है, इसे स्पष्ट कीजिए यह हमारी समझ में नहीं आया।

उत्तर - परमात्मा सम्पूर्ण संसार का निर्माता तथा पालन करता है इसी कारण उसे परमपिता कहा गया है। एक पिता अपने बच्चों का कल्याण चाहता है और किसी भी व्यक्ति के कल्याण का सम्बन्ध ज्ञान से है। इसी कारण हमारे शारीरिक माता-पिता हमें शिक्षा प्रदान करते हैं। जिनका सम्बन्ध हमारे शरीर से है तथा हमारा आत्मिक सम्बन्ध परमात्मा से हैं, परमपिता परमात्मा ने मनुष्यरूपी आत्माओं को इस संसार में सुख-शान्ति पूर्वक रहने का जो ज्ञान दिया है उसका नाम धर्म है। जैसे-सत्य बोलना धर्म है और झूठ बोलना अधर्म है, किसी भी प्राणी को मारना अथवा प्रताड़ित करना अधर्म और किसी भी आपदाग्रस्त प्राणी की सहायता करना धर्म है। परमात्मा प्रदत्त इस ज्ञान का सम्बन्ध संसार के सभी व्यक्तियों से है इसे देश-काल की सीमाओं में नहीं बांधा जा सकता। इसमें संकिर्णता नहीं व्यापकता है, इसमें घृणा, विद्वेष तथा हिंसा नहीं प्रेम, अपनत्व तथा करुणा होती है और अगर नहीं है तो फिर धर्म नहीं है और जहाँ पर धर्म नहीं होता वहाँ अधर्म होता है। वैदिक धर्म में वसुधाभर अर्थात् सम्पूर्ण पृथिवी के लोगों को एक परिवार माना गया है। धर्म सार्वकालिक और सार्वभौमिक है न तो यह उत्पन्न होता है और ना समाप्त होता है।

प्रश्न - परमात्मा का यह ज्ञान क्या सिर्फआपको ही पता है ? क्योंकि संसार के सभी बुद्धिजीवी इस्लाम, हिन्दू, ईसाई आदि को धर्म कहते हैं। आपको यह ज्ञान कहाँ से मिला, क्या यह आपके दिमाग की मनघड़न्त उपज तो नहीं है ? अथवा इतने दिनों तक यह ज्ञान कहाँ था ?

उत्तर - जी नहीं ! यह हमारे दिमाग की ना तो मनघड़न्त उपज है और ना सिर्फ हमको पता है। इस ज्ञान से वे सभी परिचित हैं जिन्होंने वेदादि शास्त्र पढ़े हैं या वेदादि शास्त्रों के विषय में जाना है। इस संसार तथा मनुष्यों की उत्पत्ति को लगभग २ अरब वर्ष हो गये हैं संसार के जो-जो व्यक्ति वे चाहे बुद्धिजीवी कहे जाते हों, अगर वे उल्लेखित मत-पन्थों को अगर धर्म कहते हैं तो वे भ्रान्ति में है अथवा अज्ञानता में जकड़े हुए हैं क्योंकि इन मत-पन्थों सम्प्रदायों की उत्पत्ति काल साढ़े चार हजार वर्ष से अधिक नहीं है जबकि परमात्मा प्रदत्त वेद ज्ञान आधारित वैदिक धर्म मनुष्य उत्पत्ति से पूर्व भी था। **जब वैदिक धर्मरूपी सूर्य का प्रकाश था तो मानव सुख-शान्ति से युक्त तथा समस्याओं से मुक्त था, जबसे वैदिक धर्म से व्यक्ति विमुख हुआ है, वह सुख-शान्ति से मुक्त और समस्याओं से युक्त हुआ है।**

और अधिक जानने के लिये मानव मात्र का उद्धारक तथा प्राणीमात्र का हितकारी साढ़े तीन हजार पुस्तकों का सार महर्षि दयानन्द सरस्वती का अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश अवश्य पढ़ें। (संक्षेप में समझने के लिये इसी अंक के पृष्ठ १३-१७ के तथा अन्य लेखों को पूर्ण मनोयोग से पढ़े -सम्पादक)●

वेद मंत्र एवं भावार्थ

ओ३म् सुरूपकृत्नुमूतये सुदुघामिव गोदुहे।
जुहूमसि द्यविद्यवि।। ऋग्वेद १/४/१

भावार्थ - जैसे मनुष्य गाय के दूध को प्राप्त होके अपने प्रयोजन को सिद्ध करते हैं, वैसे ही विद्वान् धार्मिक पुरुष भी परमेश्वर की उपासना से श्रेष्ठ विद्या आदि गुणों को प्राप्त होकर अपने-अपने कार्यों को पूर्ण करते हैं। - **महर्षि दयानन्द सरस्वती**

वैदिक संसार के उद्देश्य

* महान् योगी संन्यासी, महर्षि, अखण्ड ब्रह्मचारी, वेद प्रतिष्ठापक, तत्वज्ञानी, युगदृष्टा, स्वराष्ट्रप्रेमी, नवजागरण के सूत्रधार, अछूत एवं महिला उद्धारक, समाज सुधारक, खण्डन-मण्डन के प्रणेता, अन्धविश्वास नाशक, पाखण्ड खण्डनी ध्वजा वाहक, आर्य समाज संस्थापक, सत्यार्थ प्रकाश एवं सद्साहित्य प्रकाशक, दयालु, दिव्य दयानन्द के समस्त मानव जाति पर किए गए उपकारार्थ कार्यों को गतिमान बनाए रखने हेतु प्रयत्न करना।
* वेदों की महत्ता को पुनर्स्थापित करने हेतु वैदिक सिद्धान्तों, ऋषि दयानन्द प्रणीत सन्देशों को प्रकाशित करना।
* आमजन में व्याप्त अशिक्षा, धर्मान्धता, अन्धविश्वास, पाखण्ड, कुरीतियों के विरुद्ध जनजागरण कर उन्मूलन हेतु प्रयास करना।
* आर्य (श्रेष्ठ) विद्वान् महानुभावों के मन्तव्यों, सन्देशों का प्रचार-प्रसार कर प्रतिजन को उपलब्ध करवाना।
* आवश्यक सूचनाओं, गतिविधियों, समाचारों को प्रतिजन तक पहुँचाने का प्रयास करना।

वैदिक ऋषिका – यमी वैवस्वती

-शिवनारायण उपाध्याय
७३, शास्त्री नगर, दादाबाड़ी, कोटा (राज.)
चलभाष-०७४४२५०१७८५

यमी वैवस्वती ऋग्वेद मण्डल-१० सूक्त-१० की ऋचा संख्या १,३,५,६,७,११ व १३ की ऋषिका है। वास्तव में यह यमी और यम के संवाद के रूप में ही सारा सूक्त है। विद्वानों के इस विषय में भिन्न मत हैं। एक मत तो यह है कि यम और यमी भाई-बहिन हैं परन्तु यमी अपने भाई यम से शारीरिक सम्बन्ध बनाना चाहती है तो यम उसे अस्वीकार करके कहता है कि भाई-बहिन के मध्य में जो पवित्र संबंध है उसे तोड़कर पति-पत्नी में बदल देना धर्म के विरूद्ध कार्य है। यमी उसे स्वीकार नहीं करती है। दोनों अपने-अपने पक्ष में तर्क देते हैं। दूसरे मत के अनुसार यह पति-पत्नी का संवाद है। पति नपुंसक है इसलिए पत्नी के साथ शारीरिक सम्बन्ध नहीं बना सकता है। वह पत्नी को नियोग द्वारा दूसरे किसी व्यक्ति से सम्बन्ध बना कर सन्तान उत्पत्ति की सलाह देता है। मैं समझता हूँ कि इस सूक्त के द्वारा मुख्य रूप से यह बताया गया है कि भाई और बहिन के सम्बन्ध को पति-पत्नी के सम्बन्ध में नहीं बदला जाना चाहिए। विज्ञान की भी यही मान्यता है कि निकट सम्बन्धों में विवाह होने से श्रेष्ठ सन्तान उत्पन्न नहीं होती है। यह भी देखने में आया है कि जहाँ ऐसे सम्बन्ध हो गए हैं, वहाँ विकृत सन्तान की उत्पत्ति हुई है।

दूसरा विचार यह है कि यदि पति-पत्नी के साथ शारीरिक सम्बन्ध बनाने में असमर्थ हो, नपुंसक हो, लम्बे समय से अस्वस्थ हो, सन्तान उत्पन्न करने में असमर्थ हो तो पत्नी को यह स्वतन्त्रता मिलनी चाहिए कि वह नियोग पद्धति अपना कर अपने वास्तविक पति के लिए सन्तान उत्पन्न कर ले। यह प्रथा भी अति प्राचीन है। वैदिक धर्म ही नहीं वरन् यहूदी धर्म में भी इसे मान्यता प्राप्त है।

इस सूक्त का एक तीसरा पक्ष भी है जो इसे सूर्य और रात्रि के संवाद के रूप में लेता है। अधिकांश विद्वानों ने सूक्त के प्रथम दो भिन्न संवादों के रूप में ही मंत्रों का अर्थ किया है। मेरी दृष्टि से यह सूक्त केवल पति के पत्नी से शारीरिक सम्बन्ध न बना पाने पर पत्नी क्या करे? इसका हल सुझाता है। यम और यमी दोनों काल्पनीक व्यक्ति हैं। ●

ब्रह्मवर्त नरेश मराठा साम्राज्य का पेशवा

श्रीमंत बाजीराव (प्रथम)

-स्वामी उमाशंकर सांख्यायन
आर्य संस्कृति संस्कार प्रतिष्ठान आर्यावर्त, शैलगी
सोलापुर (महा.), चलभाष - ०८०५५४४५८४७

मराठा साम्राज्य के संस्थापक छत्रपति शिवप्रभु (शिवाजी) का अवतार माने गये (शिवप्रभु आत्मा) पेशवा श्रीमंत बाजीराव जी का वास्तविक नाम विश्वम्भर था। उनकी जन्मदात्री माता राधाबाई तथा पिता बल्लाल भटट गोत्र जमदग्नी कुल स्वामी गणेश जी थे।

श्रीमंत बाजीराव जी का जन्म संवत १७५७ शके १६२२ को हुआ था। उनका विवाह काशीबाई के साथ संवत १७७२ शके १६३७ में हुआ। उन्हें पिता के मृत्यु उपरान्त संवत १७७७ शके १६४२ में मराठा साम्राज्य का पेशवा बनाया गया।

पेशवा श्रीमंत बाजीराव जी ने पुननगरी में शनिवाड़ा महल बनाकर वहाँ से राज्य का कार्यभार देखने लगे, उसके लिए नाना फ डणवीस को कारोबारी बनाया गया था। निरंतर बीस वर्ष केवल घोड़ों पर बैठकर प्रतिदिन एक सौ साठ कोस दौड़ने वाला, केवल छः घंटे की निद्रा लेने वाला, घोड़ों पर बैठकर रोटी खाने वाला, युवाओं की सेना रखने वाले पेशवा श्रीमंत बाजीराव जी का नाम लेते ही शत्रु भयभीत हुआ नजर आता था।

बीस वर्षों में दो सौ सोलह (२१६) युद्ध लड़कर जीतने वाला, अंपराजेय पेशवा श्रीमंत बाजीराव प्रथम बाप से बेटा सवाई यह कहावत सत्य में उतारने वाला, तत्कालीन छः हजार राजवाड़ों को सरदार-सूबेदार-जागीरदारों पर धाक से ही साम्राज्य करने वाले बाजीराव के नाम को सुनकर कि बाजीराव आ रहा है दिल्ली, ऐसा सुनकर ईरान का बादशाह नादिरशाह दिल्ली से इरान भाग गया था।

(इलाहाबाद) प्रयाग का सूबेदार महमुद बंगश का विद्रोह तथा ओरछा नरेश छत्रसाल की मदद के लिए विद्रोह को कुचल कर रगड़ने वाले बाजीराव ने बांदा से जैतपुर तक बंगश को दौड़ाया। भगोड़े को पकड़कर ब्रह्मवर्त में गंगानदी में डुबाकर मरवाने वाला बाजीराव महाप्रतापी योद्धा, उत्तम राजनीतिज्ञ, प्रखर वक्ता, वैदिक विद्वान् थे, शरीर से स्वस्थ सुंदर बलशाली थे, दूरदृष्टा तथा वैदिक साम्राज्य के आधार स्तंभ व विस्तारक थे।

गांधर्ववंश का क्षत्रिय महाराजा ओरछा नरेश छत्रसाल की राजकन्या वीरांगना चंद्रकला का विवाह श्रीमंत पेशवा बाजीराव प्रथम जी से संवत १७८६ में शके १६५१ में हुआ था, तब अंशदान में मिले हुए सात जनपद के सूबे के राज्य की राजधानी ब्रह्मावर्त को बनाकर श्रीमंत बाजीराव का राजतिलक कराया गया था।

मराठा साम्राज्य का पंत प्रधान पेशवा श्रीमंत बाजीराव ब्रह्मावर्त राज्य के राजा थे। उनकी ज्येष्ठ महारानी काशीबाई तथा कनिष्ठ महारानी चंद्रकला (मस्तानी) थी। श्रीमंत बाजीराव की पत्नी काशीबाई के पुत्र युवराज बल्लाल द्वितीय अर्थात् बालाजी बाजीराव अर्थात् नाना साहब पेशवा प्रथम तथा रघुनाथ राव एवं श्रीमंत बाजीराव की द्वितीय पत्नी चंद्रकला का पुत्र श्री रामसिंह व श्री कृष्णसिंह थे।

श्रीमंत बाजीराव प्रथम की मृत्यु विष प्रयोग से हुई। मध्यप्रदेश में रावेर नामक ग्राम के क्षेत्र में संवत १७९७ शके १६६२ में, आयु के ४०वें वर्ष में पेशवा श्रीमंत बाजीराव की मृत्यु का समाचार सुनते ही उनके अनुज सेनापति चिमाजीराव जी ने अपना प्राण छोड़ दिया तब वे ३७ साल के थे।

श्रीमंत बाजीराव के ज्येष्ठ पूत्र बल्लाल को पेशवा बनाया गया तथा श्रीमंत चिमाजीराव के पुत्र सदाशिव भाऊ को सेनापति बनाया गया (संवत १७९७ शके १६६२)। ●

thearyasamaj.org

कर्मफल सिद्धान्त : एक भ्रान्ति-एक सच

-राम निवास गुणग्राहक
सम्पादक-ऋषि स्मृति प्रकाश, महर्षि दयानन्द
सरस्वती स्मृति भवन, जोधपुर (राज.)
चलभाष-०७५९७८९४९९१

कर्मफल सिद्धान्त मनुष्य के जीवन व्यवहार को सन्तुलित एवं न्यायपूर्ण बनाये रखने में सबसे अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वैदिक धर्म के इतर जितने भी मत-पन्थ संसार में धर्म के नाम पर अपना कार्य-व्यापार चला रहे हैं, उनमें कर्मफल तो है लेकिन कोई सिद्धान्त नहीं है। उन सबका कर्मफल उनके द्वारा कल्पित भगवान की ही तरह कल्पनाकारों की मनोभावनाओं पर आधारित है। जैसे वे किसी विवेकशील, निष्पक्ष, जिज्ञासु के सामने अपने माने हुए भगवान के अस्तित्व को सिद्ध नहीं कर सकते, वैसे ही उनका कर्मफल भी सदा असिद्ध और असम्बद्ध ही रहता है और रहेगा। वेद और वैदिक धर्म में कुछ भी काल्पनिक नहीं है, सब कुछ तथ्यों और तर्कों पर आधारित है। वैदिक धर्म के गूढ़ सिद्धान्तों को जानने-समझने और उन पर कलम चलाने का काम इतना सरल नहीं है कि एक व्यक्ति जीवन के ५०-६० वर्ष लोक-व्यवहार, परिवार-पालन और सांसारिक झंझटों में लगाकर जीवन के अन्तिम पड़ाव में अपने २-४ वर्षों के अध्ययन के आधार पर वैदिक सिद्धान्तों की गहराई को समझ और समझा सके। आर्य समाज में आज ऐसे धनाढ्य स्वघोषित विद्वानों की कमी नहीं है जो सेवामुक्त होकर अपने फण्ड या पेंशन के धन से अपनी मनमानी पुस्तकें लिख-छपाकर भारी छूट या अत्यल्प मूल्य पर बेचकर आर्य जिज्ञासुओं को पं. चमूपति, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, स्वामी दर्शनानन्द और स्वामी वेदानन्द जैसे मनीषी विद्वानों के श्रेष्ठ साहित्य से वंचित करने का अनजाना अपराध कर रहे हैं। सब जानते हैं कि एक नर्सिंग का कोर्स करने वाला हृदय व किडनी के रोगी का आपरेशन नहीं कर सकता। लोअर कोर्ट के वकील को सुप्रीम कोर्ट में बहस करने की अनुमति नहीं दी जाती मगर आर्य समाज में हमारे अभिमन्यु कुमार खुल्लर जैसे सज्जन दार्शनिक विषयों को लेकर, कर्मफल सिद्धान्त जैसे गूढ़तम विषय पर कुछ भी लिखने-समझाने के लिए पूर्ण स्वतंत्र हैं। इतना होने पर भी हमारे मित्र चाहते हैं कि आर्य संन्यासी व विद्वान् इनकी उठाई गई समस्याओं पर समाधान अवश्य दें।

मान्यवर! मेरी विनम्र प्रार्थना है कि आपने जिन कई जिज्ञासाओं की बात की है, उनकी तो ईश्वर जाने लेकिन जिस एक पक्ष को उजागर करते हुए आपने जो कुछ लिखा है उसे पढ़कर आपके साथ प्रेम, सहानुभूति और अपनापन रखने वाला आर्य आपको एक ही सुझाव देगा कि आप पुरानी पीढ़ी के आर्य विद्वानों के ग्रन्थों का अधिकतम, अध्ययन करें। समस्याएँ आपकी हैं और बहुत ही बालकपन वाली हैं, इसलिए इनका समाधान आपको अधिकाधिक स्वाध्याय करके ही खोजना पड़ेगा। आपका मानसिक स्तर अभी वेद को अन्तिम प्रमाण स्वीकार करने योग्य भी नहीं है तो कर्मफल सिद्धान्त जो एक नहीं कई जन्मों के आर-पार देख सकने वाली बौद्धिक दृष्टि रखने वालों के लिए थोड़ा बहुत स्पष्ट हो पाता है, को जानने-समझने के लिए तो आपको बहुत तप करना पड़ेगा। अभिमन्यु जी अपनी क्षमता से कहीं बड़ा दिखने के लिए इस परिपक्व आयु में बालकों जैसा कच्चापन दिखा रहे हैं। कई देशों के लोगों की संख्या बहुत बढ़ रही है, इस बढ़ती जनसंख्या के सम्बन्ध में अभिमन्यु जी वैदिक धर्मियों से कैसा उत्तर चाहते हैं। इसके लिए कैसा वेद प्रमाणित उत्तर उन्हें चाहिए। बढ़ती जनसंख्या के लिए वेद का प्रमाण मांगना बड़ी विचित्र बौद्धिकता है।

अभिमन्यु जी पूछते हैं - भारी मानव-विनाश की संगति कर्मफल सिद्धान्त में कैसे बिठाएंगे। अगर कोई मनुष्य कुतर्की न हो, विवाद खड़े करने की अपेक्षा ज्ञान पाने की भावना से काम ले तो वह - **'अवश्यमेव हि भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाऽशुभम्'** से वह अपना काम चला सकता है। जिसे भारी जन विनाश की संगति बिठानी हो वह प्रथम विनाश का ग्रास बने सब लोगों-प्राणियों की कर्म-सम्पत्ति का सटीक ज्ञान प्राप्त करें, उसके बाद कर्मफल व्यवस्था के ईश्वरीय सिद्धान्त की समस्त जानकारी प्राप्त करें तब जाकर संगति बिठाने की बात करें। मुझे नहीं लगता कि मान्य अभिमन्यु जी के अतिरिक्त कोई आर्य पुरुष यह सब करने की हिम्मत दिखाएगा। वेद के प्रमाण से काम चलता हो तो -**'अनूनं पात्रं निहितं न एतत् पक्तारं पक्व पुनराविशाति'** -अथर्व. मंत्र कहता है -हे मनुष्य! तेरा कर्मफल एक ऐसे पात्र में रखा है कि उसमें कुछ भी न्यूनता-अधिकता नहीं हो सकती। जैसे कि एक पात्र में जो कुछ पकाने को रखा है, वही पककर पुनः प्राप्त होता है। यह कर्मफल व्यवस्था सम्बन्धी वेद का अटल सिद्धान्त है, अभिमन्यु जी को इस पर भरोसा कर लेना चाहिए। अगर आपको प्राकृतिक आपदाओं में होने वाले जनविनाश को ईश्वरीय कर्मफल व्यवस्था के अन्तर्गत होना मानने में संकोच व आपत्ति है तो आप खूब सोच विचार कर आर्य जनता को यह बताएँ यह सब कैसे घटित हुआ? क्या यह सब ईश्वर की व्यवस्था के बाहर जाकर किसी अन्य शक्ति का उद्दण्ड उपद्रव माना जाए? क्या परमात्मा किसी भी प्राणी के कर्मफल की व्यवस्था नहीं करता? क्या आपको लगता है कि कुछ की करता है, कुछ की नहीं कर पाता? आप बताएँ कि ईश्वर सर्वशक्तिमान्, सर्वज्ञ व सर्वनियन्ता है कि नहीं? यह सम्पूर्ण विश्व पूर्णतः ईश्वर के नियंत्रण में नियमबद्ध होकर चलता है या अव्यवस्थित-अनियन्त्रित होकर? अभिमन्यु जी क्रोध मत करना, विचार करना कि आपने आपत्ति खड़ी करने से पहले इन प्रश्नों के संतोषप्रद उत्तर खोजने का प्रयास किया था? अगर किया तो सबको बतायें, नहीं किया तो अब करें और उत्तर दें।

अभिमन्यु जी आपके शब्द - 'मानव द्वारा इतनी पीड़ा, यातना और परिणाम स्वरूप मृत्यु को भी क्या कर्मफल सिद्धान्त की परिधि में लाया जा सकता है? क्या इनके द्वारा ईश्वर पीड़ा व मृत्यु देने के नये-नये औजारों का निर्माण करता है?' बता रहे हैं कि

शेष पृष्ठ ९ पर....

hearyasamaj.org

गतांक से आगे....

स्वामी दयानन्द और विज्ञान

-शिवनारायण उपाध्याय
७३, शास्त्री नगर, दादाबाड़ी, कोटा (राज.)
चलभाष-०७४४२५०१७८५

अब हम स्वामी दयानन्द के वेद भाष्य के आधार पर उनके यातायात साधनों के विषय में उनके विचारों का अध्ययन करते हैं। स्वामी दयानन्द अपने काल में यातायात के जो साधन थे उनसे सन्तुष्ट नहीं थे। उस काल में विज्ञान की दृष्टि से तो केवल ट्रेन ही एकमात्र साधन था। समुद्री यात्रा हेतु भाप से चलने वाले जहाज काम में लाये जा रहे थे। स्वामी जी चाहते थे कि ऐसे यानों का अविष्कार हो जो स्थल, जल और आकाश में गमनागमन कर सकें तथा विद्युत या भाप के इंजीन से उनको चलाया जावे। यानों में इस प्रकार के यन्त्र लगे हों जो उनकी गति नियन्त्रण रखने में समर्थ हों। उनके द्वारा यान को आवश्यक होने पर तुरन्त रोका जा सके तथा आगे पीछे जिधर चाहें चला सकें। उनका यह ही मानना था कि इस प्रकार का यान बनाया जाना संभव है जो स्थल, जल तथा आकाश में भ्रमण कर सके। स्वामी जी ने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में एक अध्याय **'अथ नौ विमानादि विद्या विषय संक्षेपः'** इसी विचारधारा पर लिखा है। अब हम इस विषय को वहीं से उन्हीं के शब्दों में अध्ययन करना चाहेंगे।

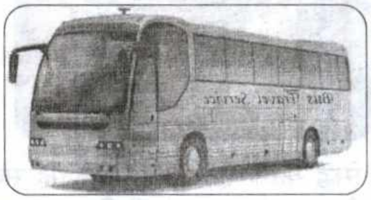

तुग्रो ह भुज्युमश्विनोदमेघे रयिं न कश्चिन्ममृवाँ अवाहाः।
तमूहथुर्नौभिरात्मन्वतीभिरन्तरिक्षप्रुद्भिरपोदकाभिः।। ऋ. १.११६.३

(तुग्रो ह.) **'तुजि'** धातु से **'रक्'** प्रत्यय करने से तुग्र शब्द सिद्ध होता है। इसका अर्थ हिंसक, बलवान, ग्रहण करने वाला और स्थान वाला है। क्योंकि वैदिक शब्द सामान्य अर्थ में वर्तमान है। जो शत्रु को हनन

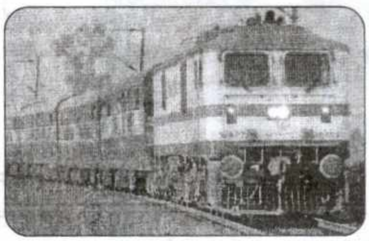

करके अपने विजय बल और धनादि पदार्थ और जिस-जिस स्थान में सवारियों से अत्यन्त सुख का ग्रहण किया चाहे, उन सबका नाम तुग्र है। **(रयिम्)** जो मनुष्य उत्तम विद्या, सुवर्ण आदि पदार्थों की कामना वाला है, उसका जिनसे पालन और भोग होता है उन धनादि पदार्थों की प्राप्ति, भोग और विजय की इच्छा को आगे लिखे हुए प्रकारों से पूर्ण करें। **(अश्विना)** जो कोई सोना, चांदी, तांबा, पीतल, लोहा और लकड़ी आदि पदार्थों से अनेक प्रकार की कलायुक्त नोकाओं को रचकर, उनमें अग्नि, वायु और जल आदि का यथावत् प्रयोग कर और पदार्थों को भरकर, व्यापार के लिए **(उदमेघे)** समुद्र और नदी आदि में **(अवाहाः)** आवे, जावे तो उसके द्रव्यादि पदार्थों की उन्नति होती है (अर्थात् व्यापार में इससे लाभ होता है) जो कोई इस प्रकार से पुरूषार्थ करता है वह **(न कश्चिन्ममृवान्)** पदार्थों की प्राप्ति और उनकी रक्षा सहित होकर दुःख से मरण को प्राप्त कभी नहीं होता क्योंकि वह पुरूषार्थी होकर आलसी नहीं रहता। वे नौका आदि जिनको सिद्ध करने से होते हैं अर्थात् जो अग्नि, वायु और पृथिव्यादि पदार्थों में शीघ्र गमनादि गुण और अश्विनाम से सिद्ध हैं वे ही यानों को धारण और प्रेरणा आदि अपने गुणों के वेगवान् कर देते हैं। वेदोक्त युक्ति से सिद्ध किये हुए नाव विमान और रथ अर्थात् भूमि पर चलने वाली सवारियों का **(उहथुः)** जाना आना जिन पदार्थों से देश देशान्तर में सुख से होता है। यहाँ पुरुष व्यत्यय से **'उहतुः'** इसके स्थान में **'उहथुः'** ऐसा प्रयोग किया गया है। उनसे किस किस प्रकार की सवारी सिद्ध होती है सो लिखते हैं **(नौभिः)** अर्थात् समुद्र में सुख से जाने आने के लिए अत्यन्त उत्तम नौका होती है **(आत्मन्वतीभिः)** जिनसे उनके मालिक अथवा नौकर चलाकर जाते आते रहें। व्यवहारी और राजपुरुष लोग इन सवारियों से समुद्र में जावें आवें तथा **(अन्तरिक्ष प्रुद्भिः)** अर्थात् जिनसे आकाश में जाने आने की क्रिया सिद्ध होती है जिनका नाम विमान शब्द करके प्रसिद्ध है तथा **(अपोदकाभिः)** वे सवारी ऐसा शुद्ध और चिनकन होनी चाहिए, जो जल से न गलें और न जल्दी टूटें फूटें। इन तीन प्रकार की सवारियों की जो रीति पहले कह आये और जो आगे कहेंगे - उन्हीं के अनुसार बराबर उनको सिद्ध करें। फिर वे इसी विषय को निरूक्त के आधार पर बताते हैं-वायु और अग्नि का नाम अश्वि है क्योंकि सब पदार्थों में धनन्जय करके वायु और विद्युत रूप से अग्नि ये दोनों व्याप्त है तथा जल और अग्नि का नाम भी **'अश्वि'** है, क्योंकि अग्नि ज्योति से युक्त और जल रस से युक्त होकर व्याप्त हो रहा है। **अश्वैः** अर्थात् वे वेगादि गुणों से भी युक्त हैं। जिन पुरुषों को विमान आदि सवारियों की सिद्धि की इच्छा हो वे वायु, अग्नि और जल से उनको सिद्ध करें। यह ओर्णवार्य्य ऋषि का मत है तथा कई ऋषियों का ऐसा मत है कि अग्नि की ज्वाला और पृथिवी का नाम अश्वि है। पृथिवी के विकार काष्ठ, लोहा आदि के कलायन्त्र चलाने से भी अनेक प्रकार के वेगादि गुण सवारियों वा अन्य कारीगरियों में किये जाते हैं। कई विद्वानों का ऐसा मत है कि **'अहोरात्रौ'** अर्थात् दिन और रात का नाम अश्वि है क्योंकि इनसे भी सब पदार्थों के संयोग और वियोग होने के कारण से वेग उत्पन्न होते हैं। .... 'जर्भरी' और 'तुर्फ रीतू' ये दोनों पूर्वोक्त अश्वि के नाम हैं। जर्भरी अर्थात् विमान आदि सवारियों के धारण करने वाले और 'तुर्फरीतू' अर्थात् कला यन्त्रों के हनन से वायु, अग्नि, जल और पृथिवी के युक्ति पूर्वक प्रयोग से विमान आदि सवारियों का धारण, पोषण और वेग होते हैं। जैसे घोड़े और बैल चाबुक मारने से शीघ्र चलते हैं वैसे ही कला कौशल से धारण और वायु आदि को कलाओं करके प्रेरने से सब प्रकार की शिल्प विद्या सिद्ध होती है। **'उदन्यजे'** अर्थात् वायु, अग्नि और जल के प्रयोग से समुद्र में सुख करके गमन हो सकता है।

तिस्रः क्षपस्त्रिरहातिव्रजद्भिर्नासत्या भुज्युमूहथुः पतङ्गैः।
समुद्रस्य धन्वन्नार्द्रस्य पारे त्रिभी रथैः शतपद्भिः षळश्वैः।। ऋ. १.११६.४

(नासत्या.) जो पूर्वोक्त अश्वि कह आये हैं वे **(भुज्युमूहथुः)** अनेक प्रकार के भोगों को प्राप्त करते हैं क्योंकि जिनके वेग से तीन दिन-रातों में **(समुद्र.)** सागर **(धन्वन्)** आकाश और भूमि के पार नौका, विमान और रथ करके **(व्रजद्भिः)** सुख पूर्वक पार जाने में समर्थ होते हैं। **(त्रिभी रथैः)** अर्थात् पूर्वोक्त तीन प्रकार के वाहनों से गमनागमन करना चाहिए। जैसे उन यानों से अनेक प्रकार के गमनागमन हो सकें तथा **(पतंङ्गैः)** जिनसे तीन प्रकार के मार्गों में यथावत् गमन हो सकता है।

thearyasamaj.org

शिल्पविद्या विमानादि का ज्ञान पूर्व से वेदों में विद्यमान

अनारम्भणे तदवीरयेथामनास्थाने अग्रभणे समुद्रे।
यदश्विना ऊहथुर्भुज्युमस्तं शतारित्रां नावमातस्थिवांसम्।। ऋ. १.११६.५

(**अनारम्भणे**) हे मनुष्य लोगों! तुम पूवोक्त प्रकार से अनारम्भण अर्थात् आलम्बरहित समुद्र में अपने कार्यों की सिद्धि करने योग्य यानों को रचलो। (**तद्वीरथेयाम्**) वे यान पूर्वोक्त अश्वनों से ही जाने आने के लिए सिद्ध होते हैं। (**अनास्थाने**) अर्थात् जिस आकाश और समुद्र में बिना आलम्ब से कोई नहीं ठहर सकता, (**अग्रभणे**) जिसमें हाथ से पकड़ने का आलम्ब कोई भी नहीं मिल सकता, (**समुद्रे**) ऐसा जो पृथिवी पर जल से पूर्ण समुद्र प्रत्यक्ष है तथा अन्तरिक्ष का नाम भी समुद्र है क्योंकि वह भी वर्षा के जल से पूर्ण रहता है उसमें किसी प्रकार का आलम्बन सिवाय नौका और विमान से नहीं मिल सकता, इससे इन यानों को पुरूषार्थ से रच लेवें। (**यदश्विनौ उहथुर्भु.**) जो यान वायु आदि अश्वि से रचा जाता है वह उत्तम भोगों को प्राप्त करा देता है क्योंकिं (**अस्तम्**) जो उनसे चलाया जाता है वह पूर्वोक्त समुद्र, भूमि और अन्तरिक्ष में सब कार्यों को सिद्ध करता है। (**शतारित्राम्**) उन नौकादि सवारियों में सैकड़ों अरित्र अर्थात् जल की थाह लेने, उनके थामने और वायु आदि विघ्नों से रक्षा के लिये लोह आदि के लंगर भी रखना चाहिए जिससे जहाँ चाहें वहाँ उन यानों को थामें। इसी प्रकार उनमें सैकड़ों कल बन्धन और थामने के साधन रखने चाहिए। इस प्रकार के यानों से (**तस्थिवासम्**) स्थिर भोग को मनुष्य लोग प्राप्त होते हैं।

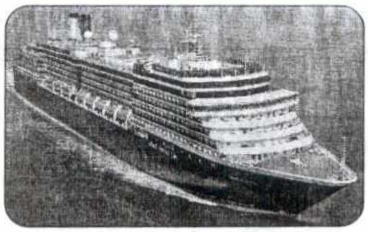

यमश्विना ददथुः श्वेतमश्वमघाश्वाय शश्वदित्स्वस्ति।
तद्वां दांत्रं महि कीर्तेन्यं भूत्पैद्वो वाजी सदमिद्धव्यो अयः।। ऋ.१.११६.६

(**यमश्विना**) जो अश्वि अर्थात् अग्नि और जल है उनके संयोग से (**श्वेतमश्वम्**) भाप रूप अश्व अत्यन्त वेग देने वाला होता है जिससे कारीगर लोग सवारियों को (**अघाश्वाय**) शीघ्र गमन के लिए वेग युक्त कर देते हैं जिस वेग की हानि नहीं हो सकती उसको जितना बढ़ाया चाहे बढ़ सकता है। (**अश्वदित्स्वस्ति**) जिन यानों में बैठकर समुद्र और अन्तरिक्ष में निरन्तर स्वस्ति अर्थात् नित्य सुख बढ़ता है। (**ददथुः**) जो कि वायु, अग्नि और जल आदि से वे गुण उत्पन्न होता है उसको मनुष्य लोग सुविचार से ग्रहण करें। (**वाम्**) यह सामर्थ्य पूर्वोक्त अश्वि संयुक्त पदार्थों ही में है। (**तत्**) सो सामर्थ्य कैसा है कि (**दात्रम्**) जो दान करने के योग्य (**महि**) अर्थात् बड़े-बड़े शुभ गुणों से युक्त (**कीर्त्तनयम्**) अत्यन्त प्रशंसा करने के योग्य और सब मनुष्यों को उपकार करने वाला (**भूत्**) है। क्योंकि वही (**पैद्वः**) अश्व, मार्ग में शीघ्र चलने वाला है। (**सदमित्**) अर्थात् जो अत्यन्त वेग से युक्त है। (**हव्यः**) वह ग्रहण और दान देने के योग्य है। (**अर्य्यः**) वैश्य लोग तथा शिल्प विद्या का स्वामी उसको अवश्य ग्रहण करें क्योंकि इन यानों के बिना द्वीपान्तर में जाना-आना कठिन है।

त्रयः पवयो मधुवाहने रथ सोमस्य वेनामनुविश्व इद्विदुः।
त्रयः **स्कम्भासः स्कभितास आरभे त्रिर्नक्तं याथस्त्रिर्वश्विना दिवा।।**
ऋ. १/३४/२

यह यान किस प्रकार का बनाना चाहिए कि (**त्रयः पवयो मधुः**) जिसमें तीन पहिये हो, जिनसे यह जल और पृथिवी के ऊपर चलाया जाय और मधुर वेग वाला हो। उसके सब अङ्ग वज्र के समान दृढ़ हों, जिनमें कला यन्त्र भी दृढ़ हो, जिनसे शीघ्र गनम होवे। (**त्रयः स्कम्भासः**) उनमें तीन-तीन थम्मे ऐसे बनाने चाहिये कि जिनके आधार सब कला यन्त्र लगे रहें। तथा (**स्कभितासः**) वे थम्मे भी दूसरे काष्ठ वा लौह के साथ लगे रहें (**आरा**) जो कि नाभि के समान मध्य काष्ठ होता है उसी में सब कला यन्त्र जुड़े रहते हैं। (**विश्वे**) सब शिल्प विद्वान् लोग ऐसे यानों को सिद्ध करना अवश्य जानें।

(**सोमस्य वेनाम्**) जिनसे सुन्दर सुख की कामना सिद्ध होती है (**रथे**) जिस रथ में सब क्रीड़ा सुखों की प्राप्ति होती है, (**आरभे**) उसके आरम्भ में अश्वि अर्थात् अग्नि और जल ही मुख्य हैं। (**त्रिर्नक्तं याथस्त्रिर्वश्विना दिवा**) जिन यानों से तीन दिन और तीन रात में द्वीप द्वीपान्तर में जा सकते हैं।

त्रिर्नो अश्विना यजता दिवे-दिवे परि त्रिधातु
पृथिवीमशायतम्।
तिस्त्रो नासत्यारथ्या परावत आत्मेव वातः
स्वसराणि गच्छतम्।। ऋ. १/३४/७

फिर यह सवारी कैसी बनानी चाहिए कि (**त्रिर्नो अश्विना य.**) (**पृथिविमशायतम्**) जिन सवारियों से हमारा भूमि, जल और आकाश में प्रतिदिन जाना-आना बनता है। (**परित्रिधातु**) वे लोहा, तांबा, चांदी आदि तीन धातुओं से बनती हैं और जैसे (**रथ्या परावतः**) नगर वा ग्राम की गलियों में झट पट जाना-आना बनता है वैसे दूर देश में भी उन सवारियों से शीघ्र जाना-आना होता है। (**नासत्या.**) इसी प्रकार विद्या के निमित्त पूर्वोक्त जो अश्वि हैं उनसे बड़े-बड़े कठिन मार्ग में भी सहज से जाना-आना करें। जैसे (**आत्मेव वातः स्व.**) मन के वेग से समान शीघ्र गमन के लिए सवारियों से प्रतिदिन सुख से सब भूगोल के बीच जावें-आवें।

अरित्रं वां दिवस्पृथु तीर्थे सिन्धूनां रथः।
धिया युयुज्र इन्दवः।। ऋ. १/४६/८

(**अरित्रं वाम्**) जो पूर्वोक्त अरित्रयुक्त यान बनते हैं वे (**तीर्थेसिन्धूनां रथः**) जो रथ बड़े-बड़े समुद्रों के मध्य से भी पार पहुँचाने में श्रेष्ठ होते हैं (**दिवस्पृथु**) जो विस्तृत और आकाश तथा समुद्रों के मध्य से भी पार पहुँचाने में भी श्रेष्ठ होते हैं, उन रथों में जो मनुष्य यन्त्र सिद्ध करते हैं वे सुखों को प्राप्त होते हैं। (**धिया युयुज्र**) उन तीन प्रकार के यानों में (**इन्दवः**) वाष्पवेग के लिए एक जलाशय बनाके उसमें जल सिंचन करना चाहिए जिससे वह अत्यन्त वेग से चलने वाला यान सिद्ध हो।

वि ये भ्राजन्ते सुमखास ऋष्टिभिः प्रच्यावयन्तो अच्युता चिदोजसा।
मनोजुवो यन्मरुतो रथेष्वा वृषव्रातासः प्रषतीरयुग्ध्वम्।। ऋ. १/८५/४

(**वि ये भ्राजन्ते.**) हे मनुष्य लोगों! (**मनोजुवः**) अर्थात् जैसा मन का वेग है वैसे वेग वाले यान सिद्ध करो। (**यन्मरुतो रथेषु**) उन रथों में (**मरुत**) अर्थात् वायु और अग्नि को मनोयोग के समान चलाओ और (**आ वृषव्रातासः**) उनके योग में जलों का भी स्थापन करो। (**पृषतीर युग्ध्वम्**) जैसे जल के वाष्प घूमने की कलाओं को वेग वाली कर देते हैं वैसे ही तुम भी उनको सब प्रकार से युक्त करो। जो इस प्रकार से इन शिल्प विद्या रूप श्रेष्ठ यज्ञ करने वाले सब भोगों से युक्त होते हैं, (**अच्युता चिदोजसा.**) वे कभी दुःखी होकर नष्ट नहीं होते और सदा पराक्रम से बढ़ते जाते हैं। क्योंकि कला कौशलता से युक्त वायु और अग्नि आदि

शेष पृष्ठ २४ पर....

चारों वेदों के प्रथम व अन्तिम मन्त्र

- बाबूलाल जोशी
बी-६२, एम.आई.जी. कॉलोनी
रविशंकर शुक्ल नगर, इन्दौर (म.प्र.)
चलभाष-०७३१-२४३२२८५

ओ३म्।। अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्।
होतारं रत्नधातमम्।। - ऋग्वेद १/१/१

काव्यार्थ - मैं स्तुति करता अग्नि प्रभु, पुरधारक जगदीश।
यज्ञ प्रकाशक आदि से, रत्न प्रदाता ईश।।

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।। - ऋग्वेद

काव्यार्थ - तव संकल्पन अध्यवसाय, हों समान चहुँ ओर।
मन समान, पुलकित हृदय, शोभित हों सब छोर।।

इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु
श्रेष्ठतमाय कर्मणऽआप्यायध्वमघ्याऽइन्द्राय भागं
प्रजावतीरनमीवाऽअयक्ष्मा मा व स्तेनऽईशत माघशं सो
ध्रुवाऽअस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि।।
- यजुर्वेद १/१

काव्यार्थ - अन्न और बल के लिए, प्रभु आश्रय तुम एक।
पराक्रमी हो वायु सम, जगदुत्पादक नेक।।
सम्पादन शुभ कर्म हितं, हम हों तव संयुक्त।
गाय हमारी स्वस्थ हों, रोग आदि से मुक्त।।
भय से बाधित हो नहीं, हों बछड़ों से युक्त।
हिंसक चोर न गो स्वामी, रक्षण हो उपयुक्त।।
राष्ट्रोन्नति के हेतु हों, शुभकर्मी यजमान।
वर्धित पशुधन सर्वदा, रक्षक ईश महान।।

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्।
योऽसावादित्ये पुरुषः सोऽसावहम्। ओ३म् खं ब्रह्म।।
- यजुर्वेद ४०/१७

काव्यार्थ - ज्योति रूप रक्षक सदा, आच्छादित सम्पूर्ण।
द्रश्यमान इस जगत में, सर्व व्याप्त परिपूर्ण।।
ख मण्डल के मध्य हूँ, पूर्ण पुरुष परमात्म।
ओ३म् रूप में व्यापता, जो है मम निज नाम।।

अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये।
नि होता सत्सि बर्हिषि।। - सामवेद ।।१।।

काव्यार्थ - उत्तम पदार्थ ज्ञान हित, स्तुति की हमने ईश।
विद्यमान तू विश्व में, हे दाता जगदीश।।

स्वस्ति नऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।
- सामवेद ।।१८७५।।

काव्यार्थ - कीर्ति और ऐश्वर्य युत, सुख दो ईश महान।
पुष्टि प्रदाता, ज्ञाता, धारक, स्वतः रूप कल्याण।।

ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वा रूपाणि बिभ्रतः।
वाचस्पतिर्बला तेषां तन्वो अद्य दधातु मे।।
- अथर्ववेद १/१/१

काव्यार्थ - सप्त विभक्तियाँ तीन वचन, इक्कीस रूपाभास।
वाणी के वाचस्पति प्रभु, कर दो ज्ञान प्रकाश।।
विविध रूप विस्तार बल, वर्धित हो मम ज्ञान।
आज इसी सामर्थ्य से, प्रभु देवें वरदान।।

पनाय्यं तदश्विना कृतं वां वृषभौ दिवो रजसः पृथिव्याः।
सहस्रं शंसा उत ये गविष्टौ सर्वां इत् ताँ उप याता पिबध्यै।।
- अथर्ववेद २०/१४३/९

काव्यार्थ - आप बड़ाई योग्य हैं, मंत्री राजन् श्रेष्ठ।
भूमि अरू आकाश के, हो सम्बन्धित ज्येष्ठ।।
विद्या प्राप्ति सहस्त्र गुण, दोनों आप सुपात्र।
सोम तत्व के पान हित, हो आदर के पात्र।। ●

पृ. ०६ का शेष **कर्मफल सिद्धांत.....**

आपकी सोच कुतर्कों के बीहड़ जंगल में भटक कर पूरी तरह से दिग्भ्रमित हो गई है। आपके मन-मस्तिष्क में कहीं न कहीं कुरान वाला शैतान घर किये बैठा है। आपको लगता है कि ये सब काम ईश्वर के नहीं शैतान के हैं। आपको निश्चित रूप से अभी बहुत स्वाध्याय की आवश्यकता है। आप जाने-अनजाने में -**'विद्या विवादाय....'** पथ पर चल पड़े हैं। आपके हृदय में जिज्ञासा का स्थान आक्रोश और आवेश ने ले लिया है। आपके द्वारा उठाई गई आक्रोश पूर्ण जिज्ञासाओं पर कोई गम्भीर विद्वान् कलम नहीं उठायेगा। जिज्ञासा में विनम्रता और कुछ सीखने-पाने की भावना होती है जो आपकी भाषा शैली में नहीं है। मैं तो माननीय मित्र सुखदेव जी से भी निवदेन करना चाहता हूँ कि वे -**'वैदिक संसार'** की गरिमा और विश्वसनीयता का ध्यान रखें। अभिमन्यु जी आर्य जगत् से इतर पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादकों के समर्थन व प्रोत्साहन की बात कर रहे हैं क्या वे वेद और वैदिक कर्मफल व्यवस्था का सामान्य ज्ञान रखते हैं? बन्धुवर! रोग के उपचार के लिए डॉक्टर के पास जाना होता है न कि वकील के। पुत्र को गणित का ट्यूशन कराना हो तो भूगोल का अध्यापक काम नहीं आता। मैं पुनः सच्चे हृदय से, सच्चे प्रेम और अपनेपन के साथ, आपकी हित दृष्टि यही निवेदन करुँगा कि आप ऋषि के ग्रन्थों के साथ पहली पीढ़ी के आये विद्वानों के ग्रन्थों का श्रद्धा सहित स्वाध्याय करें। आयु के इस पड़ाव में यही आपके लिए सर्वाधिक कल्याण प्रद होगा। ●

thearyasamaj.org

thearyasamaj.org

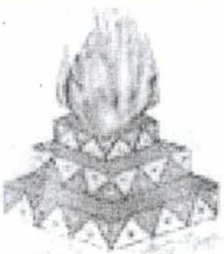

'यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म'

-कैलाश पाटीदार 'काका'
आर्य समाज, गाँव-सुवासा, जिला-उज्जैन (म.प्र.)
चलभाष-९५८९१२६६७४

स्वर्ग अर्थात् सुख, शांति, स्वास्थ्य, दीर्घायु, विद्या, बल, बुद्धि, पुत्र, धन, सम्पत्ति, यश, कीर्ति आदि की इच्छा करने वाले व्यक्ति को यज्ञ करना चाहिए। यज्ञ कुण्ड में डाली गयी घृत की एक बूंद से ही बहुत से परमाणु करोड़ों में बनते हैं जो वायुमण्डल में फैलकर पर्यावरण को शुद्ध करते हैं एवं विषैली गैसों को नष्ट करते हैं। यज्ञ कुण्ड से निकलने वाला धुआँ ऊपर पहुँचकर ओजोन परत में बने हुए छिद्रों को बन्द करने में समर्थ होता है जिसके कारण पराबैंगनी किरणें (UltraVoilet Rays) जैसी हानिकारक किरणों के कारण धरती में फैलने वाले कैंसर, चर्मरोग आदि अनेक रोगों से हमारा बचाव होता है। यज्ञ के धुएँ से क्षयरोग, चेचक, हैजा आदि अनेक घातक रोगों के विषाणु नष्ट होते हैं तथा केसर व चावल को मिलाकर हवन करने से प्लेग के कीटाणु भी नष्ट होते हैं, ये विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. डीलिट व फ्रांस के वैज्ञानिक ट्रिलवर्ट आदि की घोषणाएँ हैं। यज्ञ कुण्ड में डाली गयी घी और सुगन्धित व रोगनाशक सामग्री बर्बाद नहीं होती, इसे समझाने के लिए आलंकारिक दृष्टान्त दिया जा रहा है:-

एक यजमान ने यज्ञ किया व यज्ञकुण्ड में घी व अन्य सामग्री की आहूति का दान किया, फलतः दान करके वह **देवता** कहलाया जबकि अग्नि देवता घी और सुगन्धित व रोगनाशक सामग्री को ग्रहण करने से लेवता बन गया तब अग्नि कहता है कि यजमान घी और अन्य सामग्री की आहूति दान कर देवता बन गया तो मैं भी देवता हूँ, मैं क्यों लेवता बनूँ और उसने उस घी और सुगन्धित सामग्री के परमाणुओं को वायु को दान कर दिया। वायु कहता है यजमान देवता, अग्नि देवता तो मैं क्यों लेवता बनूँ, **मैं भी देवता हूँ** अतः उसने घी और सुगन्धित सामग्री के परमाणुओं को बादल-पर्जन्य को दान कर दिया। बादल ने सोचा **यजमान, अग्नि, वायु, सब देवता हैं तो मैं क्यों देवता नहीं** और उसने उस घी व रोगनाशक व सुगन्धीत सामग्री के परमाणुओं को जल को दान कर दिया। **जल भी तो देवता है** उसने उस घी और सुगन्धित व रोगनाशक सामग्री के परमाणुओं को धरती माता को दान कर दिया और इस प्रकार धरती में वृष्टि के द्वारा वह यज्ञाहुति पुनः नीचे पहुँचती है तथा उससे युक्त जल से पुनः गेहुँ, चावल आदि अन्न उत्पन्न होते हैं और घास भी उगती है। उस घास को पुनः गाय खाती है और दूध देती है उसके दूध से पुनः घी बनाया जाता है। इस प्रकार यज्ञ कुण्ड में डाली गयी घृत की बून्दें घूमते हुए पुनः घी में बदल जाती हैं। अतः घी और सामग्री का नष्ट होना मानना सर्वथा मिथ्या है।

अयं यज्ञो विश्वस्य भुवनस्य नाभिः - अथर्ववेद ९/१०/१४
यह यज्ञ ही सम्पूर्ण संसार की नाभि (केन्द्र) है।
"यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म"
यज्ञ ही सब कार्यों में सर्वश्रेष्ठ कर्म है।
यज्ञमय जीवन ही हमारा श्रेष्ठ-सुन्दर जीवन है। ●

अमावस्या का वैदिक महत्व

साभार - कँवलसिंह आर्य
बल्लूवाड़ा, रेवाड़ी (हरि.)

वेद कहता है कि जिस प्रकार सूर्य के प्रकाश में प्रत्येक वस्तु का स्वरूप जैसा है, वैसे का वैसा ही साफ-साफ नजर आता है तथा उसमें कोई भी भ्रान्ति नहीं रहती। उसी प्रकार वेदों के अध्ययन, मनन द्वारा जो बुद्धि में ज्ञान का प्रकाश होता है, उसमें भी कर्म, ज्ञान, उपासना, ईश्वर, जीवात्मा एवं प्रकृति के सही-सही स्वरूप का बोध होता है। हमारी इस पुरातन व सनातन संस्कृति के अध्ययन के अभाव में आज ईश्वर वा ईश्वर भक्ति अथवा पदार्थों के स्वरूप का ज्ञान प्रायः भ्रान्तियुक्त सा हो गया है। उदाहरण के लिए हम यदि **अमावस्या के दिन को ही लें जिसका वर्णन अथर्ववेद काण्ड ७, सूक्त ७९ में शुभ, बलवर्धक पुत्रप्राप्ति, सुख-शांति आदि अनेक गुणों की खान कहा है, लेकिन समाज में वेदाध्ययन के अभाव में अमावस्या को भूत-प्रेतों वाली अमावस्या, डरावनी काली रात, अशुभ आदि अनेक बुरी वृत्तियों से भरपुर कह रखा है।** इसके विपरीत, वेदों ने अमावस्या का सही स्वरूप कहा है कि अमावस्या के दिन सूर्य तथा चन्द्रमा साथ-साथ रहते हैं। सूर्य तेज **तथा प्रकाश का प्रतीक है तथा सूर्य की किरणों में फसलें पकती हैं। दूसरी ओर चन्द्रमा शीतलता तथा सौम्यता का प्रतीक है जो औषधियों तथा वनस्पतियों में रस भरता है। अतः दोनों का सम्बन्ध है।** उसी प्रकार हमारी वृत्ति सूर्य के समान तेजस्वी, ज्ञानवान तथा चन्द्रमा के समान हमारा मन शीतल तथा शान्त रहने के गुण वाला हो। इस मन्त्र में ईश्वर कहते हैं कि-हे अमावस्या! '**ते महित्वा**' अर्थात् तेरी महिमा है कि '**यत् संवसन्तः देवाः**' सब विद्वान् नर-नारी प्रेमपूर्वक साथ-साथ मिलकर रहते हुए 'भागधेयम् अकृण्वन्' अर्थात् हवि का भाग करते हैं अर्थात् यज्ञ करते हुए दीर्घायु, धन, सम्पदा, सुख-शान्ति प्राप्त करते हैं। **अतः हमें वेदानुसार अमावस्या के दिन, विद्वान् गुरुजनों के संग मिलकर यज्ञ करना चाहिए।** आगे इस मन्त्र में कहा '**हे विश्ववारे**' अर्थात् वरण करने योग्य अमावस्या, '**सुभगे**' तू सौभाग्य देने वाली है, '**तेन**' तेरे द्वारा जब हम यज्ञ करते हैं तो तू हमारे यज्ञ को पूर्ण करती हुई हमें सुख देती है। तथा '**सुवीरम्**' वीर सन्तानें देती हैं, '**रयिम्**' हर प्रकार का धन (बल, बुद्धि, ज्ञान) हमें देती हैं। अतः यदि हम अमावस्या के दिन यज्ञ करते हैं तो बलशाली सन्तान प्राप्त करते हैं और यह धनवान बनाती है। अगले **अथर्ववेद मन्त्र (७/७९/२) में ईश्वर ज्ञान देते हैं कि जैसे अमावस्या ही कहती है - 'अहम् एव अस्मि'** अर्थात् मैं ही अमावस्या हूँ। '**सुकृतः माम् आवसन्ति**' अर्थात् उत्तम कर्म करने वाले देव मेरे में निवास करते हैं अर्थात् अमावस्या के दिन सब मिलकर यज्ञ करते हैं। **इन मन्त्रों में यह भाव समझाया गया है कि अमावस्या वाले दिन सब मिलकर यज्ञ करें, यह नर-नारियों को पुण्य तथा आशीर्वाद देने आती है। आज अमावस्या से सम्बंधित जो अन्धविश्वास फैलाया गया है उसका कारण वेद विद्या का अभाव ही कहा जाएगा जिस कारण आज समस्त नर-नारी अमावस्या के दिन के शुभ आशीर्वादों तथा उत्तम, वीर सन्तानों से वंचित हो रहे हैं। अतः हम वेदों से अमावस्या का सही स्वरूप सुनें, समझें तथा अमावस्या के दिन यज्ञ आयोजित करके देश को वीर सन्तानें प्रदान करते हुए एक दृढ़ राष्ट्र के रूप में विकसित करें।** ●

thearyasamaj.org

यस्तन्न वेद किमृचा करिष्यति

-रामफल सिंह आर्य
महामन्त्री-आर्य प्रतिनिधि सभा हि.प्र.
सुन्दरनगर, जिला-मण्डी (हि.प्र.)
चलभाष-०९४१८४७७७१४

मनुष्य को भगवान ने बड़ी विचित्र बुद्धि दी है जिसका प्रयोग करके वह बड़े-बड़े आश्चर्यजनक कार्यों को सिद्ध कर लेता है। वे कार्य भी देखने में आते हैं जिनके बारे में पूर्व में न कभी सुना न देखा। आज से लगभग एक सौ पचास वर्ष पूर्व क्या कोई यह कह सकता था कि सैंकड़ों मनुष्य सैंकड़ों मील प्रति घण्टे की गति से आकाश मार्ग में सुखपूर्वक यात्रा करते हुए बड़ी सरलता से अपने अभीष्ट स्थान पर जा सकेगें या समुद्र की गहराई में भी पनडुब्बी में बैठकर उतनी ही सुगमता में आ जा सकेगें। अभी कुछ ही वर्ष पूर्व कोई कह सकता था कि किसी तार या अन्य साधन से जुड़ा होने पर भी हम चलते-फिरते विश्व के किसी कोने में बैठे किसी भी व्यक्ति से बातचीत कर सकेगें। या बिना किसी कागज पत्र या लेखनी के विश्व के किसी भी स्थान पर एक क्षण में कोई भी पत्र (मेल) भेजा जा सकता है। परन्तु ये सब विस्मयकारी अविष्कार मनुष्य की इसी विचित्र बुद्धि के परिणाम हैं। जीवन का कोई भी क्षेत्र क्यों न हो, शिक्षा, राजनीति, शिल्प, निर्माण, चिकित्सा, यातायात, खेल, आदि-आदि में विज्ञान के प्रवेश ने एक क्रान्ति उत्पन्न की है। बुद्धि के इस कार्य को प्रत्येक व्यक्ति नमन करेगा। ये चमत्कार कदापि संभव न हो सकते थे यदि ईश्वर सृष्टि के आदि में ही मानव को वेद का ज्ञान न देता। वेद के ज्ञान से ही समस्त ज्ञान-विज्ञान, कला-कौशल आदि इस धरा पर संभव हो सका। परन्तु यदि उसको नहीं जाना, जिसकी कृपा से ये सब कार्य सिद्ध होते हैं अर्थात् ईश्वर को नहीं जाना तो जो कुछ जाना है उसका कोई लाभ नहीं। ऋग्वेद का निम्न मन्त्र यही तो कह रहा है:-

ऋचो अक्षरे परमे व्योमन्यस्मिन्देवा अधि विश्वे निषेदुः।
यस्तन्न वेद किमृचा करिष्यति य इत्तद्विदुस्त इमे समासते।।

ऋ. १/१६४/३९

अर्थात् जिस व्यापक अविनाशी परमेश्वर में सब विद्वान् और पृथ्वी आदि लोक स्थित हैं कि जिसमें सब वेदों का मुख्य तात्पर्य है जो उस ब्रह्म को नहीं जानता, वह ऋग्वेदादि से भी क्या कुछ सुख को प्राप्त हो सकता है? नहीं-नहीं किन्तु जो वेदों को पढ़के, धर्मात्मा योगी होकर उस ब्रह्म को जानते हैं वे सब परमेश्वर में स्थित हो मुक्ति रूप परमानन्द को प्राप्त होते हैं इसलिये जो कुछ पढ़ना-पढ़ाना हो, वह अर्थज्ञान सहित होना चाहिये। (सत्यार्थ. तृतीय समु.)

महर्षि इसी मन्त्र को पुनः सप्तम् समुल्लास में उद्धृत करके फिर लिखते हैं **'जो आकाश के समान व्यापक सब देवों का देव परमेश्वर है उसको जो मनुष्य न जानते, न मानते और न ही उसका ध्यान करते हैं वे नास्तिक मन्दमति सदा दुःख सागर में डूबे रहते हैं, इसलिये सदा उसी को जानकर सब मनुष्य सुखी होते हैं।'** महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज के इस मन्त्र के अर्थ में लिखे ये शब्द अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं मनन करने योग्य हैं। सब वेदों का मुख्य तात्पर्य किसमें है अर्थात् क्या है कि उस ब्रह्म को जानना जिसमें सब लोक-लोकान्तर स्थित हैं। फिर किस लिये उसे जानें, कि जिससे मुक्ति रूप परमानन्द की प्राप्ति हो सके। मनुष्य कितना भी ज्ञान-विज्ञान अर्जित कर ले, कितने ही साधन विकसित कर ले परन्तु उसको सच्चा सुख यदि कभी प्राप्त होगा तो केवल ईश्वर के पास प्राप्त होगा अर्थात् उसी को जान कर, उसकी उपासना से होगा। सांसारिक पदार्थों में सच्चा सुख कहाँ? जो पदार्थ एक समय सुख प्रदान करने वाला दिखाई देता है, वही दूसरे क्षण दुःख का कारण बन जाता है। एक वस्तु को पाने के उपरान्त हम फिर दूसरी वस्तु को पाने की ओर दौड़ते हैं और जीवन भर यह दौड़ समाप्त नहीं होती। जो हमारी दौड़ का लक्ष्य था, जिसको जानना चाहिये था वह तो जाना ही नहीं, फिर यह दौड़ समाप्त कैसे होगी? विज्ञान के आधार पर अनेकों साधन विकसित कर लिये, करने भी चाहियें, परन्तु केवल मात्र इन्हीं तक सीमित नहीं रह कर उस मूल तत्व को जानना परम आवश्यक है, उसके बिना शान्ति कहाँ? मन्त्र कह रहा है कि **'यः तत् न वेद, किम् ऋचा करिष्यति'** जो 'उसको' नहीं जानता, वह 'इसको' जानकर भी क्या कर लेगा? 'उसको' किसको? ईश्वर को जिसमें सब कुछ स्थित है, जो परम व्योम है, वह जो अविनाशी अक्षर अर्थात् ब्रह्म है। उसको जाने बिना केवल **'ईदम्'** को जानकर पूर्ण सुख कभी प्राप्त नहीं किया जा सकता। आधुनिक विज्ञान का वेत्ता वैज्ञानिक **'इदम् विद्'** तो है परन्तु तत् विद्=तत्वविद् नहीं है इसीलिये उसे पूर्ण नहीं कहा जा सकता।

आप यह कह सकते हैं कि इस संसार का कार्य चलाने के लिये इदम्विद् होना ही पर्याप्त है, जो कुछ आज वैज्ञानिकों ने बना लिया है उसने इस संसार की कायापलट करके रख दी है फिर यह अपूर्ण कैसे? इसका उत्तर यह है कि निःसन्देह भौतिक विज्ञान ने जो उन्नति की है, वह एक क्रान्तिकारी परिवर्तन लेकर आई है परन्तु क्या मनुष्य पूर्ण सुखी एवं शान्त हो गया? उत्तर है, नहीं। अपितु अशान्ति बढ़ी है, क्लेश बढ़े हैं, अपराध बढ़े हैं, शोषण, स्वार्थ, हिंसा, बलात्कार, अपहरण, धन लिप्सा, भ्रष्टाचार, तनाव भी उसी अनुपात में बढ़े हैं। एकाकीपन एवं अवसाद भी आश्चर्यजनक रूप से बढ़ा है। पर्यावरण दूषित हुआ है, आतंकवाद, घृणित राजनीति निरन्तर बढ़ी है। फिर यह कैसी उन्नति है, इसे सर्वांगीण कैसे कहा जा सकता है। जो साधन एक मनुष्य से दूसरे मनुष्य को अलग करके उन्हें परस्पर शत्रु बना दे वह पूर्ण हो सकता है? ईश्वर को न जानने और न मानने की सबसे बड़ी हानि तो यह है कि ऐसा भाव मनुष्य को स्वार्थी एवं आत्मकेन्द्रित कर देता है। इसके विपरीत ईश्वर को जानने एवं मानने वाला व्यक्ति सब को अपने में एवं अपने को सब में स्थित देखता है। वह कभी स्वार्थी और आत्मकेन्द्रित नहीं होता। अपने सामने वह किसी को रोते तड़पते नहीं देख सकता। कष्ट में कराहते व्यक्ति के पास से वह आखें मूंद कर कभी नहीं जा सकता। अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिये वह कभी किसी के मुख का निवाला नहीं छीन सकता। यह अन्तर है **इदम्विद्** और **तत्विद्** में।

हमारे आर्यावर्त के प्राचीन मनीषियों ने इस विषय में गहन अन्वेषण किया, अथक साधना एवं परिश्रम किया और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को 'तत्' अर्थात् ईश्वर से जोड़ कर उसका विकास किया। उदाहरण के रूप में शिक्षा को ही ले लीजिये। शिक्षा ही किसी समाज का मूल आधार हुआ करती है। जैसी शिक्षा होगी वैसा ही समाज बनेगा। उस समय शिक्षा का उद्देश्य केवल पैसा कमाने वाली मशीन निर्मित करना नहीं था अपितु एक

thearyasamaj.org

ऐसे मानव का निर्माण करना था जो राष्ट्र के सर्वांगीण विकास में एक महत्वपूर्ण कड़ी बन कर जुड़े। जो समाज में जुड़ कर उसे लूटने के स्थान पर '**त्याग**' करना सीखे। ऐश्वर्य भोगी होने के स्थान पर तपस्वी हो। विद्या तो यहाँ कहा ही उसे जाता था कि जो '**मुक्त कर दे**' '**सा विद्या या विमुक्तये**'। क्या आधुनिक शिक्षा भी यही सिखा रही है। आज विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्व-विद्यालयों में दी जाने वाली शिक्षा बन्धन कराने वाली है या मुक्ति कराने वाली? यह अन्तर क्यों आया? जब इस क्षेत्र से हमने ईश्वर को हटा दिया और केवल भौतिकता को आधार बना लिया तो दु:ख के अतिरिक्त परिणाम और भला क्या हो सकता था? क्योंकि केवल प्रकृति का उपासक स्थाई एवं नितान्त सुख कभी नहीं पा सकता क्योंकि प्रकृति में वह है ही नहीं। खेद है कि अपने ऋषियों, मुनियों द्वारा करोड़ों वर्षों से जांची परखी शिक्षा पद्धति को भूल कर जब हम भौतिकता की चकाचौंध से प्रभावित होकर पथभ्रष्ट हुए तो हमारे समाज का ढांचा चरमरा उठा और पूर्वजों द्वारा निर्मित सभ्यता का विशाल दुर्ग धराशायी हो गया। यहाँ पर हमें स्मरण हो रहा है महर्षि नारद का वह प्रसंग जो कि छान्दोग्य उपनिषद् में आता है। महर्षि नारद बहुत बड़े विद्वान् थे तनिक उनकी विद्या का तो अवलोकन कीजिये :-

ऋग्वेदं भगवोऽध्येमि, यजुर्वेदं सामवेदमाथर्वणं, चतुर्थं, इतिहास पुराणं, पंच, वेदानां वेदं, पित्र्यं, राशिं, दैवं, निधिं, वाक्योवाक्यमेकायनं, देवविद्या, ब्रह्मविद्यां, भूतविद्यां, क्षत्रविद्यां, नक्षत्रविद्यां सर्पदेवजनविद्यां, एतद्भगवोऽध्येमि। - छान्दो. ३०७/१/२

अर्थात् नारद ने कहा - मैं ऋग्, यजु, साम एवं अथर्व चारों वेदों को जानता हूँ। इसके अतिरिक्त इतिहास, पुराण (ब्राह्मण कल्पादि), वेदों का वेद व्याकरण तथा निरूक्त, पित्र्य=वायु विज्ञान, राशि=गणित विद्या, दैव=प्रकृति विज्ञान, नीधि=भूगर्भ विद्या, तर्क शास्त्र एकायन=ब्रह्मविज्ञान, इन्द्रियविज्ञान, भक्ति शास्त्र, पंचभूतज्ञान, धनुर्वेद, ज्योतिष शास्त्र, सर्पविज्ञान, देवजन विज्ञान, गन्धर्वविद्या को मैं जानता हूँ, इतना मैंने अध्ययन किया है।

परन्तु नारद जी फिर कहते हैं कि इतना अध्ययन करने के उपरान्त भी '**सः अहं मन्त्रविद् एव अस्मि न आत्मिद्**', मैं केवल मन्त्रविद् ही हुआ हूँ आत्मविद् नहीं। यह थी हमारे ऋषियों की सत्य के प्रति निष्ठा और ज्ञान-पिपासा। आज कोई दो शब्द पढ़कर भी अपने को महान् मान बैठता है परन्तु नारद जी इतना ज्ञान अर्जित करने के उपरान्त भी जो न्यूनता है उसके प्रति चिन्तित हैं। **सः अहम् शोचामि**=वह मैं शोकमग्न रहता हूँ, **तं मा भगवान् शोकस्य पार तारयतु**-हे सनत्कुमार जी आप मुझे शोक सागर से पार उतारिये। यदि आज के युग में कोई इस योग्यता का व्यक्ति हो तो उससे इस विनम्रता एवं सत्य की स्वीकारोक्ति की आशा की जा सकती है? उसके लिये तो महर्षि नारद या महर्षि दयानन्द जैसा विशाल एवं शुद्ध पवित्र हृदय ही चाहिये। अर्थात् नारद जी का अभिप्राय है कि वे शास्त्रों का अध्ययन करके **इदं विद्** तो हो गये हैं परन्तु **तत्विद्** नहीं हुए। जीवन का चाहे कोई भी क्षेत्र क्यों न हो, जहाँ-जहाँ से हमने ईश्वर का स्पर्श हटा दिया वहीं-वहीं क्लेश व्याप्त हो गये।

अब सप्तम समुल्लास में इस मन्त्र के द्वारा लिखे गये भावार्थ पर भी ध्यान दीजिये। देव लिखते हैं कि जो लोग ईश्वर को न जानते, न मानते और न ही उसका ध्यान करते हैं, वे मन्दमति सदा ही दु:ख सागर में डूबे रहते हैं। कितने मार्मिक शब्द हैं। मनुष्य जन्म का मुख्य उद्देश्य है ईश्वर की प्राप्ति। वह बिना जाने, बिना माने और बिना ध्यान अर्थात् योगाभ्यास के कैसे हो पायेगी? कदापि नहीं हो सकती। इसके बिना दु:खों से निवृत्ति नहीं। चाहे कितना भी धन कमा लें, ऊँचे-ऊँचे महल खड़े कर लें, विज्ञान के आधार पर चाहे कितने ही अविष्कार कर लें, यदि ईश्वर को नहीं जाना, नहीं माना और न उसका ध्यान किया तो फिर अन्त में पछताने के अतिरिक्त और कुछ भी हाथ न लगेगा। हम विज्ञान के विरोधी नहीं, न ही उसके द्वारा जीवन को सरल बनाने के, अपितु उसके प्रबल समर्थक हैं, जैसा कि स्वयं महर्षि दयानन्द जी ने स्थान-स्थान पर लिखा है कि विज्ञान को सिद्ध करके उससे पूर्ण लाभ उठाना चाहिये परन्तु केवल यही भौतिक विज्ञान ही अन्तिम लक्ष्य नहीं है। विज्ञान के नियम तो स्वयं अपने नियामक की ओर संकेत करके कह रहे हैं कि इन सारे रहस्यों के पीछे जो शक्ति है, हम उसी के बनाये हुए हैं। जड़ पदार्थ स्वयं किसी नियम का निर्माण नहीं कर सकते। प्रत्येक नियम का एक उत्तम नियामक अवश्य होता है।

प्रश्नोपनिदषद् का ऋषि कहता है-**तं वेद्यं पुरुषं वेद यथा मा वो मृत्युः परिव्यथा इति।** (प्रश्नो ६/६) अर्थात् भयावह मृत्यु तुम्हें व्यथा, दु:ख न दे सके इसके लिये जानने योग्य पुरुष=ईश्वर को जानो। उसके जानने के पश्चात् अन्य सांसारिक दु:ख तो क्या मृत्यु का महाभय भी तुम्हें दु:ख न दे सकेगा। ईश्वर को जाने बिना, प्रत्येक ज्ञान, प्रत्येक कार्य अधूरा है। उसके स्पर्श के बिना संसार का कोई भी कार्य पूर्ण नहीं हो सकता। आईये! एक उदाहरण द्वारा समझते हैं:-

एक व्यक्ति जब अपने अन्तिम समय में पहुँचा तो मरने से पूर्व अपनी वसीयत कर गया। उसने वसीयत में लिखा कि मेरे पास मेरी सम्पत्ति उन्नीस ऊँट हैं और मेरे तीन बेटे हैं उनमें इस सम्पत्ति का विभाग इस प्रकार से कर दिया जाये कि बड़े बेटे को सम्पत्ति का १/२ भाग, दूसरे को १/४ भाग और तीसरे बेटे को १/५ भाग दे दिया जाये। वह व्यक्ति तो मर गया परन्तु इस वसीयत के अनुसार इस सम्पत्ति का बंटवारा हो कैसे यह किसी की भी समझ में नहीं आ रहा था। क्योंकि उन्नीस ऊँटों का आधा होता है ९ १/२ ऊँट, १/४ होता है ४ ३/४ और १/५ होता है ३ ४/५ ऊँट जो किसी प्रकार से भी संभव नहीं है।

अब ऊँटों को काट कर तो भाग किये नहीं जा सकते। बड़ी उलझन पड़ गई। करें तो क्या करें? संयोग से वहाँ एक साधु आ निकला वह भी एक ऊँट पर सवार था। उसने पूछा कि भाई क्या बात है कुछ चिन्तित दिखाई देते हो। उन्होंने अपनी समस्या उस साधु के आगे रखी और बोले कि हमारा बापू पता नहीं हमारे लिये यह कैसी पहेली खड़ी कर गया है। साधु ने कहा कि पहेली कुछ भी नहीं बड़ा ही सरल कार्य है यह तो। ऐसा करो कि अपने १९ ऊँटों में मेरा भी एक ऊँट मिला लो। अब बँटवारा कर लो। अब ऊँट हो गये बीस, बीस का १/२ भाग हुआ दस, बड़े लड़के को कहा कि यह तुम्हारा भाग ले जाओ। फिर दूसरे लड़के को कहा कि तुम्हारा भाग है १/४, वह बना पांच ऊँट तुम भी ले लो। शेष बचा छोटा लड़का उसका भाग था १/५, वह बना 4 ऊँट। उसने भी ले लिये। इस प्रकार से १०+५+४=१९। फिर भी शेष बचा एक ऊँट। लड़कों ने कहा कि इसका क्या करें। साधु बोला कि भाई यह तो मेरा है, मैं ले जाऊँगा।

प्रिय पाठक गण देखा आपने। यह बीसवाँ ऊँट और कोई नहीं ईश्वर का स्पर्श है जो प्रत्येक पदार्थ को पूर्ण करता है फिर भी अलग रहता है। शेष बच जाता है। उसको जानकर ही मनुष्य वास्तविक एवं सच्चे सुख को प्राप्त कर सकता है। जो उसको नहीं जानता वह ऋचा अर्थात् वेद को जानकर भी क्या कर लेगा? ●

thearyasamaj.org

यदि ईश्वर वेद ज्ञान न देता तो मनुष्य पशुवत ही रह जाता

- खुशहालचन्द्र आर्य
मार्फत-गोविन्दराम जी आर्य एण्ड सन्स
९२०, महात्मा गांधी रोड, (दो तल्ला) कोलकता-०७
चलभाष-९०३८४८५१५५

ईश्वर ने मनुष्य के सहयोग के लिए जिससे वह अपना जीवन सुचारू रूप से चला सके, इस उद्देश्य से सृष्टि की रचना की जिसमें सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी, जल, वायु, समुद्र, नदी-नाले, पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, कीट-पतंग आदि बनाएँ। सृष्टि रचने के बाद ईश्वर ने तिब्बत के पठार पर एक कृत्रिम गर्भाशय बनाकर, उसमें रज-वीर्य का समावेश करके युवा लड़के-लड़कियाँ उत्पन्न की जिससे आगे भी सृष्टि चलती रहे। यदि ईश्वर मनुष्य उत्पत्ति के समय युवाओं को उत्पन्न न करके यदि बच्चे या वृद्ध पैदा करता तो बच्चों का पालन-पोषण कौन करता? और वृद्धों से आगे का संसार नहीं चलता। इसीलिए नवयुवक-नवयुवतियाँ उत्पन्न की। ईश्वर ने मनुष्यों की उत्पत्ति के साथ ही चार ऋषियों जिनके नाम अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा था, जिनके कर्म सर्वोत्तम होने से पुण्य आत्माएँ थी, उनके मुख से चार वेद जिनके नाम ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद हैं, इनको उनके मुख से उच्चारित करवाया। वैसे वेद, ईश्वरीय ज्ञान है, ऋषियों के मुख से तो केवल उच्चारित ही करवाया गया है। जैसे माईक में मनुष्य बोलता है, माईक तो केवल उसकी आवाज को तेज आवाज में प्रसारित कर देता है ठीक इसी प्रकार ईश्वर, वेद ज्ञान को ऋषियों के हृदय में प्रकाशित कर देता है और ऋषियों ने उस ज्ञान को अपने मुख से उच्चारित करके सब मनुष्यों के सामने प्रकट कर दिया। वैसे तो वेद ज्ञान उपस्थित सभी लोगों ने सुना, पर ब्रह्मा ऋषि जो सबसे अधिक प्रखर और तीव्र बुद्धि वाले थे, उन्होंने वेद ज्ञान को सुन कर कण्ठस्थ कर लिया और फिर वे उपस्थित लोगों को सुनाने लगे। उपस्थित लोग अपने पुत्र व पौत्रों को सुनाने लगे। इस प्रकार यह परम्परा लाखों, करोड़ों वर्ष तक चलती रही। जब कागज, स्याही, कलम, दवात का अविष्कार हो गया तो यह चारों वेद लिपिबद्ध कर दिये गये। तब से अभी तक चले आ रहे हैं। इसीलिए वेदों का दूसरा नाम श्रुति भी है यानी सुन-सुनाकर चलने वाला ज्ञान। मैं यहाँ यह लिखना अति आवश्यक समझता हूँ कि वैदिक धर्म की महानता यह है कि यह ईश्वरीय ज्ञान होने से मानव-मात्र का धर्म है। इसमें मानव-मात्र के लिए ही नहीं बल्कि प्राणी-मात्र के लिए भी कोई भेद-भाव या कोई छोटा-बड़ा नहीं है कारण ईश्वर सब का पिता है और सब जीव उसके पुत्रवत् हैं। इसलिए किसी प्रकार का भेद-भाव होने का प्रश्न ही नहीं उठता। बाकी जितने भी मत, पंथ, सम्प्रदाय हैं जिनको धर्म भी कहा जाता है, वे सब मनुष्यों के बनाए हुए हैं। मनुष्य चाहे कितना भी महान् क्यों न हो, परन्तु मनुष्य होने के नाते अल्पज्ञ प्राणी है। उसमें अपना और पराये का भेद भाव कम या अधिक अवश्य रहेगा। इसीलिए अन्य जितने भी मत, पंथ व सम्प्रदाय है, वे अपने ही मानने वालों का पक्ष लेते हैं यानी उनके ही हित चिन्तक है, दूसरों के नहीं। पर वैदिक धर्म ही एक मानवीय धर्म है जो सब के लिए समान है।

इसी विषय को आगे बढ़ाते हुए यह लिखना उचित है कि ईश्वर ने मनुष्य को पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ दी हैं, उनके लिए ईश्वर ने पाँच जड़ देवता जिनको तत्व भी कहते हैं, दिये हैं। जिनके द्वारा ज्ञानेन्द्रियों में वह शक्ति आती है जिससे वे अपना काम कर पाती हैं। जैसे आँखों के लिए ईश्वर ने जड़ देवता अग्नि बनाया है जिससे आँखें रूप देख पाती हैं। इसी प्रकार कानों के लिए आकाश बनाया है जिससे कान शब्दों को सुनता है। नाक के लिए पृथ्वी बनाई है जिससे नाक गन्ध या दुर्गन्ध का ज्ञान करता है। जिव्हा के लिए ईश्वर ने जड़ देवता पानी बनाया है जिससे वह रस का अनुभव कर सके। त्वचा के लिए हवा बनाया है जिससे त्वचा स्पर्श का अनुभव कर सके। यह पाँचों तत्व ईश्वर मनुष्य की उत्पत्ति से पहले ही बना देता है। मनुष्यों में एक इन्द्रिय और होती है जिसे बुद्धि कहते हैं। यह मनुष्यों में अन्य जीवों से अधिक होती है। इस बुद्धि के लिए ईश्वर ने वेद ज्ञान दिया। वेद ज्ञान से बुद्धि यह समझ पाती है कि मुझे क्या काम करने चाहिए और क्या काम नहीं करने चाहिए। वेद ज्ञान, मनुष्य का बुद्धि के द्वारा पथ-प्रदर्शन करता है जिससे वह अच्छे व पुण्यकार्यों को करता हुआ मोक्ष की ओर अग्रसर होता है, जो जीव का अन्तिम लक्ष्य है यह मनुष्य योनि में ही प्राप्त होता है। जैसे एक वैज्ञानिक कोई मशीन बनाता है, तो उसका कैसे प्रयोग किया जावे इसके लिए वह प्रयोग करने की विधि या तरीका एक छोटी पुस्तक में लिख देता है जिसको देखकर उस मशीन का प्रयोग किया जाता है, इसी प्रकार ईश्वर ने मनुष्यों की उत्पत्ति के साथ ही यह वेद ज्ञान दे दिया जिसको पढ़कर या सुनकर अपने व दूसरों के जीवन को सुचारू रूप से चला सकें और अन्त में मोक्ष को प्राप्त कर सकें।

यहाँ आपको यह बताना बहुत जरूरी है कि जीवों में दो किस्म का ज्ञान होता है। एक स्वाभाविक दूसरा नैमित्तिक। स्वभाविक ज्ञान पशु-पक्षियों में अधिक होता है कारण उनको इसी ज्ञान से पूरा जीवन व्यतीत करना होता है। इस ज्ञान से जीव खाना-पीना, सोना-जागना, उठना-बैठना तथा बच्चे पैदा करना ही नित्य कर्म कर सकता है, इसका जीव को कोई फल नहीं मिलता। नैमित्तिक ज्ञान वह होता है जो सीखने से सीखा जाये। यह ज्ञान पशु-पक्षियों में बहुत कम और मनुष्यों में बुद्धि अधिक होने के कारण यह ज्ञान भी अधिक होता है। कारण इस ज्ञान का बुद्धि से सम्बन्ध है। आप देखते होगें कि कुत्ते का बच्चा, पैदा होते ही पानी में तैरने लग जाता है कारण यह कुत्ते के लिए स्वाभाविक ज्ञान है। पर मनुष्य का बच्चा, पैदा होते ही पानी में नहीं तैर सकता। यदि पानी में छोड़ोगे तो वह डूब जायेगा और जब तक उसको तैरना सिखाया नहीं जायेगा तब तक वह पानी में नहीं तैर सकेगा कारण यह मनुष्य के लिए नैमित्तिंक ज्ञान है।

मनुष्य का स्वाभाविक ज्ञान, खाने-पीने, सोने-जागने, उठने-बैठने तक ही सीमित है। बाकी काम वह सीखने से सीखता है। स्वभाविक ज्ञान के कार्यों में मनुष्य को भी फल नहीं मिलता, बाकी नैमित्तिक ज्ञान से किये हुए अच्छे या बुरे कार्यों का ईश्वर मनुष्य को अच्छे कार्यों का सुख के रूप में, बुरे कार्यों का दुःख के रूप में फल देता है। मनुष्य की पढ़ाई, लिखाई सब नैमित्तिक ज्ञान से होती है। इसीलिए ईश्वर ने मनुष्य को अपना तथा दूसरों के जीवन को सुखी व उन्नत बनाने के लिए उसे क्या काम करने चाहिए और क्या काम नहीं करने चाहिए। इसीलिए ईश्वर ने मनुष्य की उत्पत्ति करते ही, उसे चार ऋषियों द्वारा चार वेदों का ज्ञान दे दिया। जिनको सुनकर या पढ़कर वह अपने जीवन को शुभ कार्यों को करते हुए उत्तरोत्तर उन्नत व समृद्ध शाली बना सके, साथ ही अष्टांग योग द्वारा यम, नियमों को जीवन में

thearyasamaj.org

धारण करते हुए, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान को करते हुए समाधि का आनन्द ले सके और मृत्यु के बाद मोक्ष के परम आनन्द को ईश्वर के सान्निध्य में रहते हुए प्राप्त कर सके जो जीव का अन्तिम लक्ष्य है। इसके बाद मनुष्य की कोई इच्छा बाकी नहीं रह जाती है यानी यह मनुष्य की अन्तिम इच्छा है। यदि ईश्वर प्रारम्भ में ही मनुष्यों को वेद ज्ञान नहीं देता, तो मनुष्य भी अन्य पशु-पक्षियों की भाँति असभ्य रूप में रहता हुआ पशुवत् ही अपना जीवन व्यतीत करता। इसलिए सभी मनुष्यों को अभिष्ट है कि वह वैदिक धर्म को अपनाकर अपने व अन्यों के जीवन को उन्नत व सफल बनावे। ●

प्राचीन भारत की राजनैतिक व्यवस्था

-अन्नु आर्या
जमालपुर गोमटी, जिला-खगड़िया विहार, बिहार
चलभाष-०८४३४०६७२०९

भारत के प्राचीन ऐतिहासिक वांङ्मय का गंभीरता से अनुशीलन करने के पश्चात् यह प्रमाणिकता के साथ स्पष्ट प्रतीत होता है कि सृष्टि निर्माण के बाद परमपिता परमात्मा द्वारा ज्ञान का प्रादुर्भाव मनुष्यों में उच्चस्थ प्रवृत्ति वाले ऋषियों के हृदय में हुआ है, जैसे कि आदित्य, अंगिरा, अग्नि, वायु नाम के ऋषियों से यह ज्ञान ब्रह्मा से लेकर कपिल, कणाद, गौतम, जैमिनी पातंजलि एवं अन्य ऋषियों द्वारा समान्य मनुष्यों तक पहुँचायी गयी है, गुरु-शिष्य परम्परा के द्वारा। स्वाभाविक ज्ञान तो मनुष्यों और अन्य प्राणियों में जन्मजात होता है, जैसे-भय, भूख, राग, द्वेष, निन्द्रा और मैथुन, लेकिन नैमित्तिक ज्ञान जो मानवीय जीवन को सार्थकता प्रदान करता है, वह तो सर्वज्ञ परमात्मा की कृपा से ही प्राप्त होता है, जिसको प्राप्त कर जीवन को उन्नत बनाने के लिए व्यवस्था बनाई जाती है, जो सर्वोच्च ज्ञान प्राप्त ऋषियों के अधीनस्थ ज्ञानियों की सभा द्वारा संचालित होती थी।

संसार के सभी विद्वान् यह मानते हैं कि ऋग्वेद विश्व का प्राचीनतम ग्रंथ है और इसी से ज्ञान-विज्ञान का विकास हुआ है तो हमें विचारना है वैदिक कालीन भारत की राजनैतिक व्यवस्था कैसी थी? वैदिक कालीन प्रजातंत्र में यह स्पष्ट निर्देश है कि जन प्रतिनिधि के रूप में राजा का निर्वाचन होता था और चयन किया जाता था योग्यता के आधार पर।

तैतिरीय ब्राह्मण। अष्टक-८, अध्याय-८, अनुवाक-८ का वचन है कि-

सर्वा सामेव प्रजानां सूयते सर्मा एवं प्रजा राजेति वदनि।।
विश एवैतन्मध्यतोडमिसिध्यते। तस्माद्वादस विशांप्रियः।।

अर्थात् राजा चुना जाता था प्रजा के द्वारा, ग्राम और 'बिश' (ग्रामों के समूह) द्वारा योग्य और प्रिय व्यक्ति को।

राजा के योग्यता के बारे में मनुस्मृति का कथन है -

प्रनिहोभ्यस्त्रयी विद्या शाश्वतीम
आश्रवीक्षिली चात्म, विद्या तार्तारम्भाश्च लोकतः।
इन्द्रियाणां जये योगं क्षमातिषेति वाजिशम
जितेन्द्रिय हि शवनोति वशेस्थार्पायतु - प्रजा।

अर्थात् राजा त्रयी विद्या अर्थात् ब्रह्मविद्या, आत्मविद्या और पदार्थविद्या, जो दण्डनीति, अर्थनीति, यंत्रविद्या आदि का ज्ञाता हो और अपनी इन्द्रियों पर जय प्राप्त किया हो अर्थात् जितेन्द्रिय हो तब ही प्रजा को वश में करने की क्षमता आती है।

यही नियम राजा के सभासद के लिए भी निर्धारित था चारों वर्णों के योग्य व्यक्तियों के द्वारा परिषदें गठित होती थी, यह परिषद राज्य संचालन हेतु राजा और सभासद का चयन करता था। शतपथ ब्राह्मण ५.४.११ में स्पष्ट लिखा है राजा की शक्ति लोक सम्मति पर अवलंबित थी। राजा की प्रतिज्ञा या शपथ ग्रहण एतरेय ब्राह्मण से पता लगता है कि राज्याभिषेक के समय राजा को निम्न प्रतिज्ञा लेनी पड़ती थी।

याच्य रात्रीमजायेऽहं याच्यं प्रतोस्मि
तदुभय, जन्तरेणेष्ठा पूर्व में लोकं
सुकृतमायुः प्रजां वृजीया यढि ते
दुह्ययेयम्''

अर्थात् यदि प्रजा पर अत्याचार करके मैंने पुण्य बल प्राप्त किया है तो मैं स्वर्ग से और संतान से वंचित हो जाऊँ।

इस प्रकार की कठोर प्रतिज्ञा लेनी पड़ती थी राजा को जन प्रतिनिधि के रूप में। राजा का अर्थ अपने क्षेत्र का चयनित व्यक्ति था।

इसी योग्यता और वचन बद्धता के आधार पर प्राचीन भारत में सुधुम्न, भूरिधुम्ण, इन्द्र धुम्ण, कुवलयाश्च, यौवनाश्च, अरवपति, शश बिंदु, हरिशचन्द्र, अंवरीष, ननक्तु, सयोति, ययाति, अनरण्य, अक्षसेन अर्थात् इक्ष्वाकु वंश के राम, लव, कुश पर्यन्त का सुन्दर सुखमय और सुशिक्षित शासन था। ये सब सार्वभौमिक राजा कहलाते थे। इनकी योग्यता से ही प्रजा ने इनके शाशन को वंशानुगत माना था।

समय-समय पर उच्चस्थ ऋषि और आप्त पुरुष विद्वज्जन राजाओं के राजकीय व्यवस्था का निरीक्षण किया करते थे। छान्दोग्योपनिषद में एक वर्णन मिलता है जब कैकय देश के राजा अश्वपति के दरबार में प्राचीनशीलता, सत्ययज्ञ, इन्द्रधुम्न, जन, बुडिल, उद्यालक नामक ऋषि पहुँचते हैं तो राजा अश्वपति कहते हैं-

''न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मध्यपः।
नाना हिताग्निर्नाविद्वान् न स्वैरि स्वैरिणी कुतः।।
यक्ष्यमाणो वै भगवन्तोऽस्मिं यावदे कै कस्मा ऋत्विजे धनं
दास्यामि तावद भगवदक्यते दास्यामि वसन्तु में भगवन्त इति

अर्थात् मेरे राज्य में न चोर, न कायर, न शराबी, न यज्ञ न करने वाला, न अविद्वान्, न व्यभिचारी है तो फिर व्यभिचारिणी कहाँ?

शेष पृष्ठ ३० पर....

thearyasamaj.org

वेद द्वारा अनुशंसित श्रम-संस्कृति की गरिमा

स्मृति शेष-प्रो. उमाकान्त उपाध्याय
पी-३०, कालिन्दी, कोलकाता
चलभाष-९४३२३०१६०२

प्राय: दो प्रकार के लोग देखे जाते हैं-कुछ ऐसे लोग हैं जो स्वभाव से क्रियाशील हैं (एक्टिव हैबिट्स), उन्हें काम करने में आनंद आता है, कुछ ऐसे भी लोग होते हैं जिन्हें काम करने की इच्छा ही नहीं होती, ये आलसी, प्रमादी स्वभाव के होते हैं। क्रियाशील प्रकृति के लोग संसार में उन्नति करते हैं और अपने जीवन में सफल रहते हैं और वे समाज, देश, राष्ट्र सबके लिए उपयोगी होते हैं, क्रियाशील लोग समाज के लिए भूषण के सामान होते हैं।

अथर्ववेद का एक मंत्र है-''**श्रमेण तपसा सृष्टा ब्रह्मणा वित्त ऋते श्रिता:**''-अथर्व. १२.५.१, इसका अर्थ यह हुआ कि व्यक्ति व राष्ट्र दोनों की उन्नति के लिये प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य को परिश्रम, तप और संयम से संयुक्त किया है। आर्थिक उन्नति, शारीरिक उन्नति, धन-संपत्ति की प्राप्ति के लिये प्रभु-विश्वास, ऋताचार, न्यायोचित मार्ग का अवलंबन करना मनुष्य को उचित है।

हमारा नित्य का अनुभव है कि हम जिस अंग से काम करना बंद कर देते हैं वह अंग निर्बल, निष्क्रिय हो जाता है। ऐसे निष्क्रिय व्यक्ति भी हो सकते हैं और निष्क्रिय राष्ट्र भी हो सकते हैं। द्वितीय विश्व-युद्ध में फ्रांस के एक विश्व-प्रसिद्ध कमाण्डर को जर्मनी के सैनिकों ने लड़ाई के मैदान में पकड़ लिया। जब उसे बंधक बनाकर हथकड़ी पहनाकर बर्लिन की सड़कों पर ले जा रहे थे तो किसी पत्रकार ने उससे पूछा-आप तो संसार के दो-चार गिने चुने कमाण्डरों में हैं, फिर आप कैसे बंधक बनाए जा सके? उस कमांडर ने बिना लाग-लपेट के उत्तर दिया कि **कमांडर सिर्फ युद्ध का संचालन करता है, जिस समय जर्मनी के सैनिक कवायद, परेड और युद्ध का अभ्यास करने में परिश्रम कर रहे थे उस समय फ्रांस के सैनिक होटलों और क्लबों में युवतियों और नृत्यांगनाओं की कमर में हाथ डाल कर शराब में धुत होकर नाच रहे थे। इस शराबी, पियक्कड़, नचनिया संस्कृति की विलासिता का यही फल होना था। यह है परिश्रमहीनता, विलासिता का व्यक्तिगत और राष्ट्रीय दुष्परिणाम।**

आलसी लोगों का सिद्धांत है-''**अजगर करै न चाकरी, पंछी करै न काम। दास मलूका कह गए, सब के दाता राम।।**'' ऐसे आलसी भाग्यवादियों को राष्ट्रकवि दिनकर जी की उक्ति ध्यान में रखनी चाहिए-

ब्रह्मा का अभिलेख पढ़ा करते निरुद्यमी प्राणी।
धोते शूर कुअंक भाल का बहा भुओं से पानी।।

ऐतरेयब्राह्मण में श्रम की महत्ता का बड़ा प्यारा वर्णन है। वहाँ कहा गया है-

नानाश्रान्ताय श्रीरस्ति इति रोहित! शुश्रुतुं।
पापो नृषद्वरो जन इन्द्र इच्चरत: सखा। चरैवेति चरैवेति।

इसका अर्थ है कि श्रम से लक्ष्मी, श्री, शोभा मिलती है। निठल्ले बैठे रहने वालों को पाप दबोच लेता है। ऐश्वर्य के देव इन्द्र उसी के मित्र बनते हैं जो निरन्तर चलता रहता है, श्रम करता रहता है। वहाँ श्रमगीत बहुत विस्तार से दिया हुआ है। विस्तार-भय के कारण हम एक-दो बातें ही और लिख रहे हैं-गतिशील परिश्रमी की जांघों में फूल खिलते हैं। परिश्रम का आत्मा सुभूषित होकर फल प्राप्त कर लेता है। परिश्रमी के पाप मर जाते हैं सो चलते रहो, तपस्वी बने रहो, आलसी, आरामतलब मत बनो। बैठे हुए का सौभाग्य बैठ जाता है खड़े हूओं का सौभाग्य खड़ा रहता है, सोने वालों का सौभाग्य सो जाता है। गतिशील का, उद्यमी का, सौभाग्य भी प्रगति करता है। चलता हुआ मनुष्य, क्रियाशील मनुष्य जीवन का मधु, जीवन की मिठास, जीवन का आनंद प्राप्त करता है। चलते हुए को ही स्वादिष्ट फल मिलता है। सूर्य का श्रम देखो, वह सदा चलता रहता है, कभी आलस्य में नहीं पड़ता। अत: चलो, चलते रहो, चलते रहो।

कृषक अपने कृषि कार्य में, उद्योगी अपने उद्योग में, श्रमजीवी अपने कार्य में, किं बहुना, प्रत्येक कार्य में सफलता श्रम से ही मिलती है। अत: परमेश्वर ने मानव जीवन की सफलता के लिए हमें परिश्रमी बनाकर उत्पन्न किया है। **सफलता का दूसरा चरण है-तप। आग तापना, एक पैर पर खड़ा रहना, काँटों पर लेटना, जीभ में सूजा ठोंक लेना आदि तप नहीं, पाखंड है।** तप का अर्थ है ''**तप: स्वकर्म वर्तित्वम्**'' अर्थात् अपने कर्तव्य कर्म में कष्ट सहना, शीत, ताप, अनुकूल, प्रतिकूल परिस्थितियों को सहना तप कहाता है।

हमारे देश में बेकारी दूर करने के लिए ''**मनरेगा**'' अच्छा प्रोग्राम है किन्तु उसमें श्रम और तप कम और झूठ के आधार पर रूपयों की लूट ज्यादा हो रही है, सरकार ने वृद्धों और विधवाओं को पेन्शन देने की योजना बनायी है। विधवाओं और ६५-७० साल के वृद्धों को छोटे-छोटे कुटीर उद्योगों और लघु उद्योगों के साथ जोड़ देने से उत्पादन बढ़ेगा, बेरोजगारी दूर होगी और लोगों को सहायता भी मिलेगी। उदाहरण के लिए हथकरघा, चटाई बनाना, अचार, अमचुर, चिप्स, बड़ी, सौस, पापड़ बनाने जैसे सैकड़ों धन्धे इन कामों के साथ जोड़ें जा सकते हैं, इससे काम करने वालों का आत्मसम्मान और आत्मविश्वास बढ़ता है। आज गाँव में आम, इमली, आँवला, फ्रूट-प्रोसेसिंग अनेकों कार्य थोड़े परिश्रम से भी सिद्ध हो जाते हैं।

मन्त्र में अगली कड़ी-''**ब्रह्मणा वित्ते ऋत श्रेत:**'' ऋत का अर्थ है '**सत्य**', उचित, ईमानदारी आदि और ब्रह्म का अर्थ है ज्ञान-सिद्धांत और प्रयोग-दोनों, वस्तुत: ज्ञान की सफलता प्रयोग और व्यवहार में ही है-''**यस्तु क्रियावान्, स एव विद्वान्**''-जो ज्ञान को प्रयोग में ला सके वही वास्तव में विद्वान् है, किन्तु उसके साथ सत्य, ईमानदारी, उपभोक्ता को उपयोगिता का लाभ मिले तभी ज्ञान और क्रिया में ऋत तत्व आ पायेगा। आज बचे-खुचे खाद्य पदार्थों को री-साइकलिंग करके सौस, केमिकल, सिरका, न जाने क्या क्या पदार्थों को मिलाकर बर्गर संस्कृति में सैकड़ों पदार्थ खिलाये जा रहे हैं। बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ लोगों में स्वाद और आवश्यकता पैदा करने के लिए बड़े-बड़े तकनीकी विद्वानों पर हजारों करोड़ रूपये खर्च कर रहे हैं। यह अप-संस्कृति है। वेद-मन्त्र इस संस्कृति को ''**ब्रह्मणा वित्ते ऋत श्रेत:**'' कहकर निषेध कर रहा है।

योग्यतम की जीत (Survival of the fittest) यह पशु-संस्कृति, जंगली विचारधारा है। बड़ी मछली छोटी मछली को खा जाती है। इसी

thearyasamaj.org

सिद्धान्त के आधार पर आज "**वालमार्ट**" आदि अनेकों कम्पनियाँ छोटे-छोटे व्यवसायियों को खाए जा रही हैं। अब छोटे-छोटे फेरीवाले, छोटे दुकानदार, सब समाप्त हो जाने के कगार पर खड़े दिखाई दे रहे हैं, लगता है कि यदि कोई देव-पुरुष इन बहुराष्ट्रीय शोषण करने वालों को नियंत्रित नहीं कर पायेगा तो सारे मध्यवित्त ७०-८०% लोग, २५-३०% बहुराष्ट्रीय कंपनियों के आर्थिक दास, गुलाम बन कर जीने को मजबूर हो जायेंगे। राष्ट्रकवि दिनकर जी ने कभी लिखा था-

"विद्युत् की इस चकाचौंध में देख, दीप की लौ रोती है।
हरी, हृदय को थाम, महल के लिए झोपड़ी बलि होती है"।

आज की यह सर्वग्राही बहुराष्ट्रीय तकनीक सुरसा की तरह मानव की स्वतंत्रता को निगल जाने के लिए तैयार है। इस युग में केवल व्यवसाय और उत्पादन ही नहीं, ज्ञान, चिंतन, विचारसरणी, सभी को गुलाम बनाने की योजना बड़ी पक्की, सुचिन्तित दिखाई पड़ रही है। आज के युग में ब्रेनवाश का भय बहुत भयानक लग रहा है। ●

महर्षि दयानन्द दस वर्ष भी और जी जाते

यदि महर्षि दयानन्द, दस वर्ष भी और जी जाते।
ढोंग और पाखण्ड यहाँ, कहीं ढूंढे नहीं पाते।।
वेद की पुस्तक सब पढ़ते, कहीं नहीं अंधकार होता,
मूर्ति पूजा कहीं नहीं रहती, नहीं भ्रमित संसार होता।
भ्रम जाल में फंसकर, नहीं कोई लाचार होता,
सामाजिक सौहार्द रहता, आपस में नहीं तकरार होता।।
निराकार, व्यापक ईश्वर को हम कण-कण में पाते।।१।।
ढोंग और पाखण्ड......

हिन्दी सबकी भाषा होती, भ्रातृभाव, व्यवहार होता,
मांसाहारी कोई नहीं रहता, नहीं पशुओं का संहार होता।
कर्मानुसार व्यवस्था होती, नहीं जन्म से कोई अवतार होता,
हिंसक स्वभाव नहीं रहता, आपस में सबके प्यार होता।।
करके पाप, पुण्य पाने को तीर्थ स्थानों पर नहीं जाते।।२।।
ढोंग और पाखण्ड......

हर आंगन में होता हवन-यज्ञ, पर्यावरण सब शुद्ध होता,
सदाचारी सब मानव होते, नहीं पापाचार यहाँ होता।
आजादी के बाद भी भारत, अपनी गैरत नहीं खोता,
सारी दुनियाँ लोहा मानती, यहाँ वैदिक राज पुनः होता।।
आतंकवाद यहाँ नहीं होता, सब सुख की निद्रा सोते।।३।।
ढोंग और पाखण्ड......

वेद के पंडित सांसद होते, राष्ट्रधर्म सर्वोपरि होता,
धर्म युक्त व्यवस्था होती, शासन प्रजा के हित होता।
विद्या, धर्म, राजार्य सभा में कार्य सारा विभिक्त होता,
निष्पक्ष न्याय व्यवस्था होती, नहीं निर्दोष कोई दण्डित होता।।
मनुस्मृति और गीता को पढ़कर भारत की शान बढ़ाते।।४।।
ढोंग और पाखण्ड......

डेरे और आश्रम नहीं होते, नहीं कोई कपटी और छली होता,
तथाकथित सन्त स्वयंभू नहीं, पीर पैगम्बर बली होता।
भूमिगत कुटियाओं में नहीं, बाबाओं का तन्त्र होता,
गुरु मन्त्र की जगह कान में, सब के गायत्री मन्त्र होता।।
स्वप्न में कोई बाबा, नहीं स्वर्ण भण्डार दिखलाते।।५।।
ढोंग और पाखण्ड......

बंग और पाक अलग नहीं होते, भारत वर्ष अखण्ड होता,
शत्रुदल में भय होता और भारत का तेज प्रचण्ड होता।
राम राज्य पुनः होता यहाँ, नहीं अलग से कोई खण्ड होता,
जाति-पाति नहीं होती यहाँ, नहीं आरक्षण का दण्ड होता।।
भेदभाव नहीं रहता यहाँ, सभी आर्य कहलाते।।६।।
ढोंग और पाखण्ड......

भ्रूण हत्या नहीं होती, नहीं शादी में दहेज होता,
ब्रह्मचर्य सब पालन करते, नहीं कोई निस्तेज होता।
सीधा सादा जीवन होता, दुष्कर्मों से परहेज होता,
सोलह संस्कार निभाते सब, किसी को नहीं कोई गुरेज होता।।
यश फैलता सारे जग में, हम ऋषि सन्तान कहलाते।।७।।
ढोंग और पाखण्ड......

नहीं मिलावट होती यहाँ, नहीं खान-पान अशुद्ध होता,
अज्ञानी यहाँ कोई नहीं रहता, हर कोई प्रबुद्ध होता।
चीन, पाक सब धाक मानते, नहीं कभी कोई युद्ध होता,
पुनर्जन्म में आस्था होती और जीवन सब का शुद्ध होता।।
काम अधूरा रह गया ऋषि का, अब हम सब पछताते।।८।।
ढोंग और पाख्ण्ड यहाँ, कहीं ढूंढे नहीं पाते।।

- देशराज आर्य, से.नि. प्रधानाचार्य
रेवाड़ी, हरि., चलभाष-०९४१६३३७६०९

thearyasamaj.org

एक ईन्सान के तरह-तरह के भगवान

-श्रीमती ममता प्रकाश शर्मा
पाली मारवाड़ (राज.)

कभी-कभी मेरे जेहन में ख्याल आता है, कि ईश्वर ने सब मनुष्यों को एक जैसा बनाया और हम जोर-जोर से चिल्ला-चिल्ला कर यह दावा भी करते हैं। फिर भी **हम अपनी-अपनी सुविधानुसार समय-समय पर एक एक करके धर्म, सम्प्रदायों, कबीलों, जातियों और उसमें भी गोत्रों के अनुसार एक-एक करके विभाजित कर पृथक-पृथक एक नया भगवान तैयार कर देते हैं और कर रहे हैं।**

ऐसा करके हम क्षणिक झूठी तसल्ली तो प्राप्त कर सकते हैं, परन्तु आत्म संतुष्टि नहीं। और साथ ही हम अपने आप को और भावी पीढ़ी को भी गहन अन्धकार में धकेलते जा रहे हैं क्यों?

जबकि वर्तमान में ये चाहिए की हम ईन्सानियत शान्ति और भाईचारे वाले धर्म को बढ़ावा दे। और सृष्टि के निर्माण और विकास में अपने योगदान देने को तत्पर रहे।

हम ईन्सानों ने तो अपने अहम् में अपने द्वारा निर्मित भगवान् को भी शामिल कर लिया और जो नियम हम दूसरों पर लागू नहीं कर सकते, उन नियमों को हम ईश्वर, ईस या अल्ला का आदेश या वाणी कहकर मनवा लेते हैं। और भोले-भाले लोगों को उन नियमों को मानने पर बाध्य करते हैं या यू कहें कि उन नियम कायदों को उन पर थोप कर उसकी आड़ में हम अपनी मनमानी करते हैं। इस जद्दोजहद में हम आपस में बंटते जा रहे हैं। ये बंटवारा एक दिन हमारे बीच इतनी गहरी घृणा की खाई बना देगा कि हम चाह कर भी आपस में नहीं मिल सकेंगे। और हमारे बीच भीषण टकराव उत्पन्न होगा। और हम अपने-अपने नियमों, कानूनों, प्रार्थनाओं आचार-विचार, व्यवहार को लेकर लड़ेंगे और जाने कब ये लड़ाई विकराल रूप धारण कर लेगी किसी को पता भी नहीं चलेगा। और हमारे ही हाथों हमारी सृष्टि के साथ-साथ हमारे असेम्बल भगवान् भी नष्ट हो जायेंगे। उसे शायद कुछ लोग कयामत का नाम भी दे दे।

क्या ईन्सान इतना महान् हो गया है, की उस परम सत्ता से साक्षात्कार किये बिना ही अपनी कोरी कल्पना से उस ईश्वर का चित्रण करने निकला जिसको उस परमात्मा ने बनाया। वाह रे ईन्सान।

हकीकत यह है कि हमने ही अपनी सुविधानुसार जो नियम हमें अच्छे लगे उनको कानूनी जामा पहनाकर पेश किया ताकि उनका कोई विरोध न कर सके। इसलिए **हमने ईश्वर, ईसा और अल्ला के नाम का सहारा लिया। और अपना बचाव करते हुए उस भगवान् को नाहक ही बदनाम कर दिया।**

मानव ने अपनी बौद्धिक शक्ति का अनुचित प्रयोग करते हुए अनेकों निर्दोष मासूमों, जानवरों, बच्चियों, महिलाओं के साथ घोर अत्याचार किया, कर रहे हैं और ऋषि दयानन्द के संदेश वेदों की और नहीं लौटे तो इसमें वृद्धि ही करेंगे।

क्या यही धर्म है?, क्या यही ईश्वर, ईसु या अल्ला है?, और उसका ईन्साफ है?

या फिर हम शक्तिशाली ईन्सानों की मनमानी?

नहीं! कोई, भी ईश्वर ईसु या अल्लाह ऐसी इजाजत नहीं दे सकता और देता है तो फिर वो इन तथाकथित नामों का हकदार नहीं है।

कोई भगवान या किसी भी धर्म में अगर ये कहा जाता है कि मेरा नाम लेकर निर्दोषों का रक्त बहाओ, किसी की जान ले लो तो वो गलत है। बस यही गलत किसी ने नहीं कहना चाहिए इसीलिए तो हमने इतने कठोर नियम बनाये हैं।

अरे जिस ईश्वर ने सृष्टि का निर्माण किया है। अनेकों प्रकार के जीव जन्तुओं को पैदा किया है तो उनका जीवन चक्र भी वो ही चलाता है। इसमें हमने कौनसा तीर मार लिया। सब कुछ प्रकृति का है और उसी में समाहित है। फिर हम उसी माया को थोड़ी इकठी करके बांट देते हैं तो क्या हम उस परम सत्ता की बराबरी कर लेते हैं?

हाँ ईश्वर ने हम ईन्सानों को कुछ विशेष गुण और बुद्धि से शृंगारित किया है। वो इसलिए की हम उसकी बनाई सृष्टि का सदुपयोग कर सके ना की विध्वंश। परन्तु हमने तो सम्पूर्ण सृष्टि पर अपना कब्जा कर लिया और सभी का उपयोग हम स्वयं ईश्वर बनकर कर रहे हैं।

आज हमारी वजह से सम्पूर्ण सृष्टि प्रदूषित हो रही है। हम आज प्रकृति के नैसर्गिक वातावरण में हस्तक्षेप कर रहे हैं और कुछ स्थानों को पर कांक्रिट की ईमारतों को खड़ा करके हम समझते हैं हमने विकास कर लिया है तो क्या ये हमारी मूर्खता का प्रदर्शन नहीं है। और क्या हमारे भगवान् ने यही सिखाया है....? ●

भगवान् शब्द के वाच्यार्थ और व्यवहार

-जगदीशप्रसाद आर्य
गिरदौड़ा, नीमच (म.प्र.)
चलभाष-८९८९६१५३४२

भगवान शब्द पढ़ते या सुनते ही स्वभावतः सर्वशक्तिमान् उपासनीय परमेश्वर पर ध्यान केन्द्रित हो जाता है। संस्कार ही ऐसे है, वर्तमान में इसी अर्थ में यह प्रचलित है। इसीलिये रामकृष्णादि के भक्त उन्हें सर्वशक्तिमान उपास्य परमेश्वर स्वीकार करते हैं और आर्य समाजियों के लिये कहते हैं कि ये भगवान को नहीं मानते। **महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास में ईश्वर के अनन्त नाम स्वीकार करते हुए सौ नामों की व्याख्या की है। इसमें भगवान् शब्द को लेकर लिखा- भज सेवायाम् इस धातु से 'भग' इससे मतुप (प्रत्यय) होने से भगवान् शब्द सिद्ध होता है। 'भगः सकलैश्वर्य सेवनं वा विद्यते यस्य स भगवान्'** जो समग्र ऐश्वय से युक्त वा भजने के योग्य है इसीलिये उस ईश्वर का नाम भगवान् है।

प्रसिद्ध आर्य विद्वान् आर्य मुनि जी कृत गीता भाष्य में भगवान् शब्द की व्याख्या में इस श्लोक को उध्दृत किया है-

ऐश्वर्यस्य समग्रस्य धर्मस्य यशसः श्रियः।
ज्ञान-वैराग्ययोश्चैव षण्णां भग इतीरिता।।

अर्थात् सम्पूर्ण ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, ज्ञान और वैराग्य इन छः विशेषताओं का नाम **'भग'** है। अतः जिस प्रकार धन वाला धनवान, बल वाला बलवान, ज्ञानवान उसी प्रकार जिसमें ऐश्वर्यादि उपर्युक्त छट्ट विशेषतायें हैं उसे भगवान् कहते हैं।

जिस परमेश्वर से आर्य लोग नित्य ही -

तेजो असि तेजो मयि धेहि, वीर्यमसि वीर्य मयि धेहि।
बलमसि बलं मयि धेहि, ओजो असि ओजो मयि धेहि।
मन्युरसि मन्युं मयि धेहि, सहो असि सहो मयि धेहि।

की कामना करते हैं; भगवान् श्री परमेश्वर का एक नाम है, जिसमें तेज, वीर्य, बल, ओज, मन्यु (सात्विक क्रोध) और सहनशक्ति सम्पूर्णता से उपस्थित है। फिर जिस मानव में मानवीय अपेक्षा से इन गुणों का प्राधात्य हो तो वह अवश्य ही भगवान् कहा जा सकता है। पूर्वोक्त ऐश्वर्यादि छह और परवर्ती कहे तेज इत्यादि छह गुणों में परस्पर साम्य भी बैठाया जा सकता है।

महर्षि दयानन्द द्वारा उपदेश मंजरी (पूजा प्रवचन में) प्राचीन महर्षियों के लिये भगवान विशेषण का प्रयोग किया है। जैसे-भगवान् कपिल, भगवान् मनु, भगवान् वात्स्यायन, भगवान् कणाद्, भगवान् पतंजलि। ऋषि के जीवनी लेखक स्वामी सत्यानन्द जी ने श्रीमद्दयानन्द प्रकाश में १३६ बार महर्षि दयानन्द के लिये भगवान् शब्द का प्रयोग किया है। इसी प्रकार ऋषि जीवनी कार देवेन्द्र बाबू ने भी जन्मस्थान निर्णय प्रसंग में महर्षि के लिये ३५ बार भगवान शब्द का प्रयोग किया है।

इस प्रकार महापुरूषों के नाम के प्रथम आदरार्थ भगवान शब्द का प्रयोग सामान्यतया: होता रहा है। नवीनतम में भगवान् रजनीश ले सकते हैं। भगवान् शब्द वाच्य होकर भी वे सर्वशक्तिमान परमेश्वर नहीं हो जाते है। आदरास्पद तो वे हैं, होने ही चाहिये। इस आदरार्थ भगवान की परिपाटी से भगवान् बुद्ध और भगवान् महावीर कहे गये और कहे जाते हैं। अन्यथा ईश्वर की सत्ता को सिरे से खारिज करने वालों को सर्व शक्तिमान परमात्मा कैसे कह दिया जाता।

सत्यार्थ प्रकाश प्रथम सम्मुलास के प्रारम्भ में ही स्वामी जी ने एक प्रश्न उठाकर उसका उत्तर दिया है। प्रश्न-परमेश्वर से भिन्न अर्थों के वाचक विराट् आदि नाम क्यों नहीं? ब्रह्माण्ड, पृथिवी आदिभूत, इन्द्रादि देवता और वैद्यक शास्त्र में शुण्ठ्यादि ओषधियों के भी नाम है वा नहीं? उत्तर- हैं, परन्तु परमात्मा के भी है। प्रकरण को आगे बढ़ाते हुए ऋषि द्विअर्थी शब्द सैन्धव को लेकर एक कथा लिखते हैं। घोड़ा और नमक दोनों सही अर्थ होते हुए भी गमन समय में घोड़ा और भोजन समय में नमक का ही ग्रहण करना होगा इसके विपरीत नहीं। यह औचित्य सिद्ध किया है।

भगवान वाची महापुरूष परमेश्वर नहीं हो सकते क्योंकि परमेश्वर की सर्वज्ञता, सर्वशक्तिमत्ता और सर्व व्यापकता किसी में भी नहीं होने से। उनकी अल्पज्ञता अल्प शक्तिमत्ता और एक देशीयता पदे-पदे सिद्ध है।

महापुरूषों को परमेश्वर बना होने पर मानव समाज की एक महती हानि यह होती है कि अल्प सामर्थ्य मनुष्य को भलाई छोड़ बुराई की और चलने का बहाना मिल जाता है। वह कहता है 'वो तो साक्षात भगवान थे परमात्मा थे इसलिये सत्य पर धर्म पर चल सके, दुष्टों को दमन कर सके, इन्द्रिय निग्रह कर सके इत्यादि। हम ईश्वर नहीं हमारे में वह सामर्थ्य कहाँ। ऐसे बहाने कर सब धर्म-कर्म अवतारों के लिये छोड़, अपने सामर्थ्य भर भी सत्कर्मादि न करके स्वयं कुपथ गामी हो। किसी अवतार की प्रतिक्षा करते रहते हैं और घोषित अवतारों न्यूनताओं को मानव लीला बताकर सत्पथ का मार्ग ही अवरूद्ध कर देते हैं।

अत: महापुरूषों को भगवान् कहें, आदर पूरा दें उनके आदर्शों का यथा सामर्थ्य आचरण करें, इस प्रकार स्व गुणों में वृद्धि कहते चलों, मानवोन्नति का सही मार्ग यही है। भगवान् शब्द मानव और ईश्वर दोनों पर घटता है पर कहाँ किसका वाचक होगा यह प्रकरण से तय होगा। ●

नहीं बचेगा अत्याचारी

सन्तों के लक्षण सुनों, आज लगाकर ध्यान।
ईश भक्त, धर्मात्मा, वेदों के विद्वान्।।
वेदों के विद्वान्, सदाचारी, गृहत्यागी।
धैर्यवान, विनम्र, परोपकारी, वैरागी।।
सादा जीवन उच्च-विचारों के जो स्वामी।
वेदों का उपदेश करें, वे सन्त हैं नामी।।

जगत् गुरु दयानन्द थे, ईश्वर भक्त महान्।
दयासिन्धु धर्मात्मा, थे वैदिक विद्वान्।।
थे वैदिक विद्वान्, ब्रह्मचारी, तपधारी।
दु:खियों के हमदर्द, सदाचारी, उपकारी।।
किया घोर विषपान, भयंकर कष्ट उठाया।
किया वेद प्रचार, सकल संसार जगाया।।

दयानन्द ऋषिराज का, जग पर है अहसान।
दोष लगाता था उन्हें, रामपाल शैतान।।
रामपाल शैतान, स्वयं बनता था ईश्वर।
करता था उत्पात, रात-दिन कामी पामर।।
बरवाला में किलानुमा, आश्रम बनाया।
उस पापी ने बड़ा-जुल्म प्रजा पर ढाया।।

उसके कुकर्म देखकर, जागे आर्य कुमार।
पोल खोल दी दुष्ट की, किया वेद प्रचार।।
किया वेद प्रचार, नहीं योद्धा दहलाए।
आचार्य बलदेव-तपस्वी आगे आए।।
किया गजब का काम, चलाया फिर आन्दोलन।
बन्द करो पाखण्ड दहाड़े मिल आर्य जन।।

रामपाल शैतान ने, गुण्डे लिए बुलाय।
आर्य जन थे निहत्थे, गोली दी चलवाय।।
गोली दी चलवाय, नहीं पापी शर्माया।
हुआ दम्भ में चूर, न ईश्वर का भय खाया।।
दो थे आर्य वीर, एक थी देवी प्यारी।
तीनों हुए शहीद, सुनों अब सब नर-नारी।।

कत्ल केस में, फँस गया, रामपाल मक्कार।
जाता था ना कोर्ट में, मित्रों! करो विचार।।
मित्रों! करो विचार, अजब है प्रभु की माया।
इस पापी का पाप, देख लो सम्मुख आया।।
देशद्रोह में फँसा, हुई पापी की ख्वारी।
''नन्दलाल'' कह, नहीं बचेगा अत्याचारी।।

-पं. नन्दलाल निर्भय, ''पत्रकार''
ग्राम-बहीन (पलवल), हरियाणा,
चलभाष-०९८१३८४५७७४

thearyasamaj.org

नास्तिको वेद निन्दकः

-आचार्य दार्शनेय लोकेश
सी-२७६, गामा-१, ग्रेटर नोएडा (उ.प्र.)
चलभाष-०९४१२३५४०३६

पिछले कुछ दिनों से हिन्दू कैलेण्डर ग्रुप में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष जुड़े अंग्रेजी लोगों से कुछ ऐसी Mails दिखने लगी है कि मन सन्तापित हो उठता है। ये दो अंश ऐसी ही Mails से हैं। लगता है एक से एक मैक्समूलर पैदा होने लगे हैं।

ऋग्वेद के ५/४०/६ मन्त्र के उद्धरण से अत्रि ऋषि द्वारा दूरबीन के द्वारा अरविंद नामक सूर्य को देखने की बात कही है जबकि सच्चाई ये है कि न तो तुरीपेण का अर्थ तुरी यन्त्र है और ना ही अविन्दत का अर्थ सूर्य है। वेद प्रतिष्ठित धरती भारत में वैदिक अध्ययन की प्रगति का ऐसा ही हाल रहा तो वह दिन दूर नहीं जब '**तच्चक्षुर्देवहितं....शरदः शतमदीनाः स्याम..... शरदः शतात्** (यजु. ३६.२४)' मन्त्र में आये हुए '**मदीनाः**' शब्द का पता नहीं क्या कुछ अर्थ लगा लिया जायेगा। कल्पना करते हुए डर लगता है।

तुरीय एक विशेषण शब्द है ना कि संज्ञा। अगर आपको दूरबीन शब्द का अर्थ रखना होगा तो आपको '**तुरी यन्त्र**' कहना होगा। इसके लिए कोई भी मानक संस्कृत शब्द कोष भी देख सकते हैं। तूर्य और तुरीय का आत्मा की चौथी अवस्था से तात्पर्य है। **तुरी** शब्द के तृतीया विभक्ति में ''**तुर्याः, तुरिभ्याम्, तुरीभ्यः**'' रूप बनते हैं न कि ''**तुरीयेन**''। तुरी शब्द के अभिप्राय से आपको इस तरह कहना होगा, (एक उदाहरण) यथा-**मेघैः आच्छादितं सूर्यं तुर्याः दृष्टवान्**''। आम संस्कृत भाषा में भी '**तूर्य**' भाषा का '**चतुर्थ**' ही अभिप्राय होता है। इसके लिए कतिपय उदाहरणों में से एक सटीक उदाहरण पं. कालिका प्रसाद शर्मा के '**सामुद्रिक शास्त्र**' से दे रहा हूँ।

एक वर्षे अपि त्रिंशत् स्यात् द्विवर्षे द्विगुणं भवेत्।
त्रिवर्षे चैव नवतिः तूर्य वर्षे शताधिकम्।।

पूर्वोक्त वेद मन्त्र (ऋग्वेद ५/४०/६) के मन्त्र दृष्टा स्वयं अत्रि ऋषि हैं, वे मन्त्र में आये हुये शब्द की अभिज्ञा नहीं हैं। आया हुआ अत्रि शब्द भी एक विशेषण है और इसका बहुत अच्छा अर्थ पं. हरिशरण वेदालंकार ने अपने वेद भाष्य में किया है। जिज्ञासु भद्र जन देख सकते हैं।

ऐसे ही एक अनर्थ (ऋग्वेद ८/६/३०) '**वासर**' शब्द के साथ किया जा रहा है। कालांतर में यह शब्द '**वार**' का पर्याय बन गया किन्तु वैदिक सन्दर्भ में इसका ये अर्थ कदापि नहीं है। **सुखं वासयति जनान्** अर्थ से यह ज्योति के अर्थ में आया है। ज्योति सब को बसाने वाली और अंधकार विनष्ट करने वाला होता है।

शायद सभी को मालूम हो और जिनको न भी हो तो उनको भी ये बात मालूम हो जानी चाहिए कि

''ऋषियो मन्त्राणाम् दृष्टारः सन्ति न तु कर्तारः। वेदाः ब्रह्मणो निःश्वासभूताः कथ्यन्ते। यतो हि वेदाः स्वयं प्रादुर्भूताः भवन्ति, तस्मादेव तेषां पुरुषकर्तृत्वं न सम्भवति।''

अब यह विचारने की बड़ी बात बनती है कि वे ऋषि जो ''**ध्यानावस्थित तद्गतेनमनसा पश्यन्ति यं योगिनो....**'' ध्यान मात्र से सर्वस्व के दृष्टा पुरुष हैं उनको एक सूर्य को देखने के लिए आप '**दूरबीन यन्त्र**' पकड़े हुए देख रहे हैं। सृष्टि के आदि में ये ऋषि क्या ऐसे किसी दूरबीन के साथ पैदा हुए थे? इतनी जड़ क्यों हो गयी है ये मनुष्य बुद्धि? सायन भाष्य पर ऐसी टिप्पणी कुछ पाश्चात्य टिप्पणीकारों ने ही की है और ऐसी टिप्पणी करने से उनका कुचक्र वेदों की अपौरुषेयता के महान भाव को आघात पहुँचाना है और वही कर रहे हैं ये तथाकथित '**वैदिक विद्वान्**' भी। धन्य हैं, महर्षि दयानन्द सरस्वती, जिन्होंने इस कुत्सित विचार प्रवाह को अवरूद्ध किया है। आइये, यहाँ उनकी कुछ वेद परक महान् अवधारणाओं का पुनर्स्मरण कर लिया जाये-

१. जैसे मनुष्यों के शरीर से श्वास बाहर आ कर फिर भीतर को जाता है उसी प्रकार सृष्टि के आदि में ईश्वर वेदों को उत्पन्न करके संसार में प्रकाश करता है। प्रलय में संसार में वेद नहीं रहते परन्तु उनके ज्ञान के भीतर वे बीजांकुर्वत् सदा बने रहते हैं।

२. ईश्वर की विद्या होने से वेदों को नित्य ही जानना।

३. जिसने ब्रह्मा को उत्पन्न किया और ब्रह्मादि को सृष्टि के आदि अग्नि आदि ऋषियों के द्वारा वेदों का उपदेश भी किया उसी परमेश्वर की शरण को हम लोग प्राप्त होवें।

यजुर्वेद ९/७ को उद्धत करते हुए ये लोग असत्य कह रहे हैं कि वेदों में २७ नक्षत्र स्पष्ट हैं। सच्चाई ये हैं कि इस मन्त्र में नक्षत्र विषयक बात की ही नहीं गयी है। वेदों में, अब तक जो मैं देख पाया हूँ, अथर्ववेद १९/७/२ (देखें श्री मोहन कृति आर्ष तिथि पत्रक -सं. २०७१ पृ. ७५) से अन्यत्र नक्षत्र क्रम और उनकी गिनती उपलब्ध नहीं है। ब्राह्मण, आरण्यक षडवेदांगादि जो '**विद्यास्थान**' हैं उनमें अगर कहीं वैषम्य दिखे तो तब जो वेद में है वही लिया जाना चाहिए।... और यही है स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का वेदों के प्रति '**भद्रतम**' भाव। इसी से प्रेरित और प्रशिक्षित होना चाहता है दार्शनेय लोकेश। मेरा सब विद्वज्जनों से कहना है कि श्री मोहन कृति आर्ष तिथि पत्रक रूपी कार्य से इस प्रेरणा का ही कारण सम्बन्ध है।

अस्तु, उक्त तर्क जो कि यजुर्वेद के नवें अध्याय में आये हुए सातवें मन्त्र को जो २७ नक्षत्रों के समर्थन में दिया गया है, एक कुतर्क है। सभी लोगों से मेरा कहना है कि आप स्वयं देख लें और देखे बिना चुप न बैठ जाएँ। आप पाएंगे कि इस मंत्र में नक्षत्रों की तो बात ही नहीं की गयी है, क्या २७ और क्या २८।

मनु.-''**यो अनधीत्य............ गच्छति सान्वयः**''(-**शास्त्रादेश है कि जन्मना कश्चिदपि ब्राह्मणो न भवति, वेध्ययनरहितो शुद्रतुल्यो भवति।**) लगता है कि कैसे भी तो वेद का उद्धरण रखते हुए इनमें, अपने को '**वेदज्ञ**' अर्थात् ब्राह्मण जताने की भड़ास पनप रही है।

वैसे तो इन और इन जैसी कई बातों का विषय विद्वान् सीमान्तिक उत्तर दे चुके हैं किन्तु कुछ अतिरिक्त है जो मुझे कहना है और खास कर उन सज्जनों से जो हिंदी के ही पाठक हैं।

फलित ज्योतिष के विरोध में जाते दिखते यथार्थ तथ्यों से ये तथाकथित विद्वान् घबरा उठे हैं क्योंकि इससे फलित ज्योतिष एक तिकड़म मात्र सिद्ध हो रहा है। अस्तु, २८ और समान नक्षत्र सुनना तो इनको '**बज्रपात**' से कम नहीं लग रहा है। इसीलिए इनकी विवशता हो गयी है ऊल-जलूल तर्क रखना।

शेष पृष्ठ ३० पर....

thearyasamaj.org

अपना शौर्य दिखाओ

वीरव्रती संकल्प पूर्ण नर, होते नहीं निराश,
कदम-कदम पर मंजिल उसकी, सांस-सांस में आस!
जब तक साँस चलेगी उसकी, कदम नहीं रूक पाते,
महाकाल के समक्ष भी, मस्तक नहीं झुकाते।
जीवन है संग्राम, लड़ेंगे, कभी न माने हार,
ऐसे नरसिंहों की होती, दुनियाँ में जयकार।
आत्मबली के लिए, विश्व में, कुछ भी नहीं असंभव,
मन में हो विश्वास अगर तो, सब हो जाता संभव।
भयाक्रान्त नर भय के कारण, मुर्दा बन जाता है,
इच्छा शक्ति विहिन व्यक्ति, क्या मंजिल पा सकता है?
दिशा हीन, बन दीन व्यथा में, अश्रु नहीं बहाओं,
अग्निपथी बन, क्रान्तिदुत बन, अपना शौर्य दिखाओ।
मुर्दे ही कंधों पर चढ़कर, श्मशान जाते हैं,
जिन्दा है जो लोग लाश को, कंधों पर लाते हैं।
काहिल जन के लिए, जान लो, अवसर कभी न आता,
पुरूषार्थ भरा नर, कदम-कदम पर अवसर पाता जाता।
समय बड़ा बलवान जो जाने, अवसर नहीं गवाँता,
अवसर को सोपान बनाकर मंजिल पर चढ़ जाता।
कर्मवीर के लिए, चमन में काँटे भी मुस्काते,
कायर जन को देख चमन के फूल भी शरमाते।

-डॉ. लक्ष्मी निधि
निधि विहार, न्यू बाराद्वारी,
साकची, जमशेदपुर, झारखण्ड
चलभाष-०९९३४५२१९५४

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी

अंधेरे पथ में वो मशाल बनके आया था,
बढ़ते पाखण्ड में मलाल मनके आया था।
सत्य की राह जमाने को दिखाने के लिये,
मूलशंकर वो दयानन्द बनके आया था।

हर घड़ी राष्ट्र का चिन्तन जिन्हें सताया है,
मन वेदों के कहीं और न लग पाया है।
मरने जीने का सबब जिनका सत्य होता है।
ऋषि दयानन्द सा सदियों में पैदा होता है।

मलिन संस्कृति भारत में जब भी होती है,
दिव्य शक्ति तभी भारत में जन्म लेती है।
मिटा अविद्या सत्य राह दिखाने के लिये,
विश्व में देश की पहचान बन उभरती है।

हम दृढ़ प्रतिज्ञ आर्य जब कहायेगें,
हर घर वेद की हम ज्योति को जलायेंगे।
वैदिक धर्म के जो कार्य किये हैं, तुमने,
तेरे उपकार को ऋषिवर भूला न पायेगें।

- राधेश्याम गोयल "श्याम"
न्यू कॉलोनी कोदरिया, महू, इन्दौर (म.प्र.)
चलभाष:-०९६१७५९७९१०

यक्ष-युधिष्ठिर संवाद

प्रस्तोता - मृदुला अग्रवाल
१९ सी, सरत बोस रोड, कोलकाता-२०
चलभाष-०९८३६८४१०५१

प्रश्न - महत् पद पाने में मनुष्य किस प्रकार सफल हो सकता है?
उत्तर - तपके द्वारा ही मनुष्य महत् पद प्राप्त कर सकता है।
प्रश्न - मनुष्य बुद्धिमान कैसे हो सकता है?
उत्तर - वृद्धों की सेवा करने पर।
प्रश्न - असत् पुरुषों का क्या आचरण होता है?
उत्तर - पराई निंदा करना।
प्रश्न - किसान की प्रिय वस्तु क्या है?
उत्तर - वर्षा है।
प्रश्न - धनियों के लिये क्या श्रेष्ठ है?
उत्तर - गो पालन करना।
प्रश्न - संतानैषण वालों के लिये क्या श्रेष्ठ है?
उत्तर - पुत्ररत्न की प्राप्ति।
प्रश्न - जीवित होकर भी मृत समान-कौन है?
उत्तर - जो माता, पिता, कुटुम्बी एवं अतिथियों का यथा-योग्य पोषण नहीं करता।

संकलनकर्ता - दिव. शान्तिस्वरूप जी

प्रश्न - पृथ्वी से महान् कौन है?
उत्तर - माता है।
प्रश्न - आकाश से उच्चतर कौन है?
उत्तर - पिता है।
प्रश्न - जीवित होकर मृत समान कौन है?
उत्तर - दरिद्र (धनहीन)।
प्रश्न - विष से हानिकारक क्या है?
उत्तर - कामना विष से भी अधिक हानिकारक है।
प्रश्न - तप क्या है?
उत्तर - स्वधर्म में सर्वदा निरत रहना ही तप है।

thearyasamaj.org

प्रश्न – क्षमा किसे कहते हैं?
उत्तर – सर्व द्वन्द्वों का सहन करना।
प्रश्न – ज्ञान क्या है?
उत्तर – परमात्म तत्व के यथार्थ बोध की प्राप्ति।
प्रश्न – दया क्या है?
उत्तर – समस्त प्राणियों को सुखी देखने की भावना।
प्रश्न – मनुष्य का सबसे महान् शत्रु कौन है?
उत्तर – क्रोध।
प्रश्न – सच्चा साधु कौन है?
उत्तर – प्राणीमात्र का हित-चिंतक ही सच्चा साधु है।
प्रश्न – आलस्य क्या है?
उत्तर – धर्म का पालन न करना।
प्रश्न – संच्चा दान क्या है?
उत्तर – आर्तं प्राणियों की रक्षा करना।
प्रश्न – पण्डित कौन है?
उत्तर – धर्मज्ञ ही श्रेष्ठ पण्डित है।
प्रश्न – मूर्ख कौन है?
उत्तर – जो नास्तिक है।
प्रश्न – दम्भी कौन है?
उत्तर – अहंकार से अपने को बड़ा माननेवाला ही दम्भी है।
प्रश्न – अक्षय नरक भोगने का अधिकारी कौन है?
उत्तर – सम्पन्न होते हुए भी अपने आश्रितों को '**ना**' करने वाला।
प्रश्न – ब्राह्मणत्व क्या है?
उत्तर – आचार ही ब्राह्मणत्व है।
प्रश्न – वशीकरण मंत्र क्या है?
उत्तर – प्रिय बोलना ही सबको वश करने की कुंजी है।
प्रश्न – सद्गति प्राप्त करने का अधिकारी कौन है?
उत्तर – कर्मनिष्ठ ही सद्गति प्राप्त करने का अधिकारी है।
प्रश्न – सुखी कौन है?
उत्तर – अऋणी और प्रवास (विदेश-परदेश) में वास न करनेवाला।
प्रश्न – आश्चर्य क्या है?
उत्तर – नित्य प्रति प्राणियों को काल के गाल में जाते देखकर भी स्वयं को अमर समझने वाला।
प्रश्न – श्रेष्ठ मार्ग कौन सा है?
उत्तर – महापुरुष जिस मार्ग का अनुसरण करते हों।
प्रश्न – धनी कौन है?
उत्तर – सुख-दुःख में समान, भूत-भविष्य से निःस्पृह, शांत एवं प्रसन्नचित्त मनुष्य ही धनी है। ●

राष्ट्र - सम्वर्धन

प्रिय राज्य प्रशासन के नायक।
हो प्रजा अभ्युदय उन्नायक।।
हो कहीं असत अन्याय नहीं।
कोई अनाथ असहाय नहीं।
यम क्षमता श्रम की सराहना,
हो प्रजा कृपण कृशकाय नहीं।
सर्व शत्रुओं को भयदायक।
हो प्रजा अभ्युदय उन्नायक।। १।।
भूमि उर्वश गोवर्धन हों।
शक्ति सन्तुलन अश्वचरण हों।
हों अभय विहारी नर-नारी,
संगठन श्रेय संकर्षण हों।
संकल्प समुच्चय फलदायक।
हो प्रजा अभ्युदय उन्नायक।। २।।
यश शक्ति सन्तुलन कितना हो।
वैदिक राजाओं जितना हो।
अखिल विश्व संरक्षण पाये,
प्रिय तुम में तप बल इतना हो।
हो विश्व तुम्हारा गुण गायक।
हो प्रजा अभ्युदय उन्नायक।। ३।।
स्त्रोत – गोमदू षु णासत्याश्वावद्यातमश्विना।
वर्ती रूद्रा नृपाय्यम्।। यजु. २०-८१

– देवनारायण भारद्वाज
'वरेण्यम्' अवन्तिका (प्रथम)
रामघाट मार्ग,अलीगढ़(उ.प्र.)
दूरभाष-०५७१२७४२०६१

राष्ट्र की बाह्यन्तर सुरक्षा

हे जनगण मन शासक वृषान।
हो सावधान! हो सावधान!!
सम्पूर्ण प्रजा आरक्ष आप।
पुरूषार्थ पोषण दक्ष आप।
बाहर भीतर के सकल शत्रु,
सुन शब्द आपके जाये काँप।
पा जाये नागरिक परित्राण।
हो सावधान! हो सावधान।। १।।
तेरी सर्वोदय शिक्षा में।
सेनापति की संरक्षा में।
सर्वत्र समुन्नति सम्मति हो,
सद् स्नेह और सद् इच्छा में।
रख स्नेह सन्तुलन स्वाभिमान।
हो सावधान! हो सावधान।। २।।
जो दुराचार दुष्कर्मी हों।
द्रोही-लोभी भयचर्मी हों।
बाहर के अथवा भीतर के,
जो शत्रु सभी हठधर्मी हों।
दो उन पर अपना बाण-तान।
हो सावधान! हो सावधान।। ३।।
स्त्रोत – न यत्परो नान्तरऽ आदधर्षत् वृषणवसू।
दुःशँ सो मर्त्यो रिपुः ।। यजु. २०-८२।।

आर्यों के नाम दूर देश से चिंतन हेतु पत्र

-ARYA SAMAJ
No. 98 Charonet Raod, (Soi Donkusol 3)
Watpork, Khet-Sathom, Bangkok 10120
Thailand, G.P.O. Box : 799

समादरणीय श्रीयुत, सादर नमस्ते
ईश्वरकृपयात्र कुशलं तत्रापि भवतु।

२८ अक्टुबर से १२ नवम्बर २०१४ तक सिंगापुर, बैंकाक, मलेशिया देशों की यात्रा की। यद्यपि २ वर्ष पूर्व मैंने इन देशों की यात्रा की थी, किन्तु सा.आ.प्र. सभा के प्रधान मान्य सुरेशचन्द्र जी के विशेष आग्रह पर तथा अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के आयोजन के कारण पुन: यात्रा का कार्यक्रम बना लिया। सम्मेलनों में ३०० से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया, जिसमें U.S., U.K., CANADA, AUSTRALIA, MAURITIUS आदि अनेक देशों के आर्य सज्जन भी सम्मिलित हुवे। सिंगापुर आर्यसमाज की स्थापना को १०० वर्ष हो गये तथा बैंकाक आर्यसमाज को ७५ वर्ष। हजारों किलो मीटर दूर देशों में, जब वैदिक आर्य परम्परा वाले व्यक्तियों, परिवारों, समाजों को प्रत्यक्ष देखते हैं तो हृदय में आनन्दातिरेक की अनुभूति होती है। कुछ छोटी-छोटी अव्यवस्थाओं को छोड़कर सम्मेलन सफल रहा।

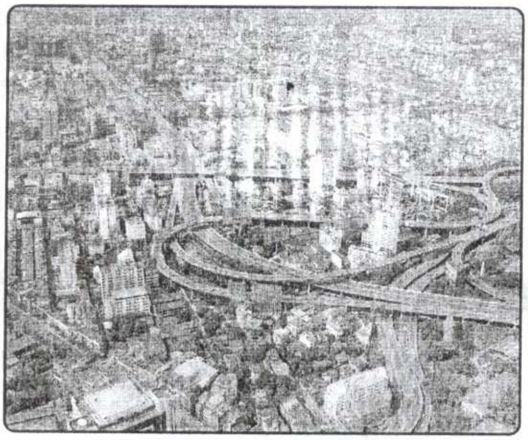

पाश्चात्य और पौर्व्य विकसित देशों की बाह्य चकाचौंध करने वाली भौतिक प्रगति को देखकर अधिकांश व्यक्ति प्रभावित होते हैं और वैसा ही बनने का विचार करते हैं, प्रयास भी करते हैं किन्तु सूक्ष्म दार्शनिक दृष्टि न होने के कारण वे आन्तरिक स्थिति का अवलोकन नहीं कर पाते हैं और भ्रान्त धारणा बन जाती है कि ये सुखी है, शान्त है, सन्तुष्ट है। किन्तु वास्तव में ऐसा होता नहीं है। **बिना आत्मा-परमात्मा को जाने, सच्चे वैदिक ज्ञान के अनुरूप अपने जीवन को चलाये बिना मनुष्य कितनी ही धन सम्पत्ति प्राप्त क्यों न करले, पूर्ण सुखी नहीं हो सकता। दु:खों से घिरा रहता है।**

वैदिक ऋषियों ने ईश्वर का ध्यान, आर्ष ग्रन्थों का स्वाध्याय, सत्पुरुषों का संग, पुनर्जन्म, कर्मफल, समाधि, वैराग्य, व्रत, तप, संयम आदि आध्यात्मिक विषयों तथा सिद्धान्तों को **''सांपराय''** शब्द से इंगित किया है, जो मनुष्य इन विषयों का ज्ञान और तत्सम्बन्धी आचरण नहीं करते **हैं वे ''मूढ़''** संज्ञक मनुष्य होते हैं, ऐसे मनुष्यों की मान्यता यह होती **है कि** ''This is the first and last life, There was no life before this life and there will be no life after this life.'' यही जीवन है, न इससे पूर्व जन्म था, न मरने के पश्चात् होगा। अपने इस चार्वाक/विरोचन/नास्तिकवादी सिद्धान्त के कारण अपनी बुद्धि, शक्ति, साधन, समय, चातुर्य, श्रम का पूर्ण रूप से इसी जीवन को, अधिकाधिक सामर्थ्यवान् बनाकर अधिकाधिक भोगों को भोगने का प्रयास करते हैं और इस एकांगी क्षेत्र में वे सफल हो जाते हैं। किन्तु इस जीवन के बाद सर्वथा विनाश है, अन्धेरा ही अन्धेरा है, दु:ख ही दु:ख है।

जब किसी व्यक्ति-समाज-राष्ट्र के जीवन का लक्ष्य ही भिन्न होगा, तो दिशा भी भिन्न होगी, मार्ग भी भिन्न होगा, साधन भी भिन्न होंगे, और शैली भी। बुद्धिमान् व्यक्ति अन्य व्यक्ति के रूप, रंग, आकृति, बल, वृद्धि, सामर्थ्य, पद, प्रतिष्ठा, भौतिक सम्पत्ति, ऐश्वर्य आदि को देखकर यह नहीं मान लेता कि यह पूर्ण सुखी है, शान्त है। **पूर्ण सुखी होने की कुछ कसौटियाँ हमारे ऋषियों ने निर्धारित की हैं, यदि व्यक्ति उन कसौटियों पर खरा उतरता है, तो वह सुखी हो सकता है, यदि उन पर व्यक्ति उत्तीर्ण नहीं होता है, तो वह निश्चित् रूप से अशान्त, चिंतित भयभीत दु:खी रहता है चाहे बाह्य लक्षणों से दिखाई न दे। प्रेय मार्ग के पथिक, चाहे पश्चिम में हों या पूर्व में या अपने देश में ये बिना श्रेय मार्ग के सिद्धान्त, शैली को अपनाये, पूर्ण सुखी हो ही नहीं सकते हैं, चाहे कितनी ही भौतिक उन्नति क्यों न कर लेवें।** सच्चे ईश्वर तथा ईश्वराज्ञा को न मानने वाला व्यक्ति, असमान्य/प्रतिकूल परिस्थितियों में अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए अन्य व्यक्ति/परिवार/समाज/राष्ट्र का अहित करने को समुद्यत हो जाता है। जिन मनुष्यों को, अन्त:करण में ईश्वर के अस्तित्व का बोध नहीं होता है अथवा **जो शब्द प्रमाण वा अनुमान प्रमाण से ईश्वर को स्वीकारते तो हैं, किन्तु व्यवहार में ईश्वराज्ञा के विरूद्ध आचरण करते हैं, उनकी भी आत्मा में परमात्मा का प्रकाश विलुप्त हो जाता है। ऐसे व्यक्ति बुरे कामों को करते समय, ईश्वर की ओर से भय, शंका तथा लज्जा-स्वरूप संकेतों का ग्रहण नहीं कर पाते हैं और वे स्वच्छन्द होकर, निर्लज्ज होकर, पाप-अपराधों को करते रहते हैं।** हे प्रमेश्वर! हम अपने से निम्न स्तर के मनुष्यों को देखकर खिन्न होते हैं, घृणा-ग्लानी करते हैं, किन्तु इससे क्या लाभ? जब आत्मनिरीक्षण करते हैं तो स्वयं में भी अनेक अवगुण दिखाई देते हैं। अवगुण न हों या न्यून हों, फिर भी अन्यों के दोषों को दूर करने का साहस, उत्साह, पराक्रम हमारे में नहीं है। ये साहस, बल, पराक्रम आदि गुण तब तक पूर्ण रूप से नहीं उभरेंगे, जब तक हम स्वयं दोष रहित नहीं होंगे। इसलिए अब तो हमारी आपसे यही प्रार्थना है कि सर्व प्रथम हमारे समस्त दुर्गुणों को विनष्ट कर दो और समस्त भद्रगुणों से हमें परिपूर्ण कर दो। तब आपके विशेष ज्ञान-बल-सामर्थ्य से मुक्त होकर न केवल अपने आर्यावर्त की, अपितु सम्पूर्ण विश्व की अवैदिक परम्पराओं को समाप्त करके, उनके स्थान पर विशुद्ध वैदिक शिक्षा, संस्कृति, सभ्यता खान पान, आचार-विचार वाली गौरवमयी-अस्मिता की स्थापना करने में समर्थ हो जायेंगे और आपका **''कृण्वन्तो विश्वमार्यम्''** का आदेश पुरा कर देंगे, इस आशा विश्वास के साथ - **ज्ञानेश्वरार्य:**

- आचार्य ज्ञानेश्वरार्य
वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़,
जिला-सांबरकाठा (गुजरात)
चलभाष - ०९०९९७००३८५

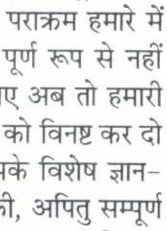

thearyasamaj.org

ऋषि भक्तों ! शिव भक्तों को सच्चे शिव के दर्शन की प्रेरणा देने हेतु चलो लाड़पुरा

मोहिनेश्वर महादेव प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव

दिनांक : 12 से 16 जनवरी 2015 तक

स्थान : ग्राम लाड़पुरा,

व्हाया : थांवला, जिला – नागौर (राज.)

नोट : अजमेर से मात्र 40 कि.मी.की दूरी पर नागौर रोड़ पर

आयोजक : माता मोहिनीदेवी शर्मा मेमोरियल ट्रस्ट, गान्धीधाम (कच्छ), गुजरात

हे शिव ! आपने कृपा कर शिव भक्त मूलशंकर को सच्चे शिव के दर्शन की प्रेरणा प्रदानकर महर्षि दयानन्द सरस्वती जैसा अनमोल रत्न मानव जाति को दिया और जर्जरित आर्य जाति तथा परतन्त्रता की बेड़ियों में जकड़े आर्यावर्त का उद्धार किया।

ठीक इसी प्रकार देवता स्वरुप श्री नेमीचन्द जी शर्मा को भी मात्र सच्चे शिव के दर्शन हेतु कृपा करो। मात्र इसलिये क्योंकि आपने श्री नेमीचन्दजी एवं उनके परिवार पर अपनी महती कृपा कि असीम वर्षा की है और कर भी रहे हो तथा श्री नेमीचन्द जी सच्चे शिव को बहुत कुछ जानते हुए बहुत कुछ आपके निकट भी है इसीलिये पूर्ण सच्चे शिव को प्राप्त करने के लिये मात्र आपकी कृपा के बगैर यह संभव नहीं !!!

श्री नेमीचन्द जी शर्मा पर परम पिता परमात्मा की महत्ती कृपा की असीम वर्षा

1) भग धारी – सकल ऐश्वर्य अर्थात् परमात्मा ने भग प्रदान किये है। (धर्म,यश,श्री,ज्ञान,बल और वैराग्य)

2) दैनिक अग्निहोत्री – वेद निष्ठ, ऋषिभक्त श्री भगवानदत्त जी शर्मा तथा आपकी धर्मपत्नी माता गुलाबदेवी जी गान्धीधाम (दोनों स्मृति शेष) की प्रेरणा से करीब 10 वर्षों से परिवार में दैनिक यज्ञ।

3) गो भक्त – इस आधुनिक युग में गान्धीधाम जैसे औद्योगिक नगर में मात्र गो माता की जय तक सीमित न रहकर करीब 10 देशी गायों का पालन पूर्ण सेवा भावना से। गायों की सेवा हेतु वेतनधारी सेवक नियुक्त, पैतृक गांव लाड़पुरा स्थित गो शाला के निर्माण एवं संचालन में समय–समय पर विपुल सहयोग, गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित किये जाने हेतु जन जागृति बाबद् अखण्ड भारत गो रक्षा अभियान के माध्यम से राजस्थान, दिल्ली,हरियाणा, पंजाब, जम्मू कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तरांचल, उत्तरप्रदेश, बिहार, सिक्कीम, पं. बंगाल, उड़ीसा, छत्तीसगढ़, आंध्रप्रदेश, तेलंगाना, तमिलनाडू, केरल, कर्नाटक, गोवा, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, गुजरात के अनेक स्थानों पर 35 दिवस तक सतत गाय की उपयोगिता का प्रचार–प्रसार।

शेष पृष्ठ 24 पर

thearyasamaj.org

पृष्ठ 23 का शेष भाग

4) वैदिक साहित्य प्रकाशन में विपुल योगदान – डॉ. सोमदेव जी शास्त्री मुम्बई द्वारा रचयित अथर्ववेद संदेश का प्रकाशन, स्वामी शान्तानन्द जी सरस्वती गुरुकुल भवानीपुर द्वारा रचयित पुस्तकों के प्रकाशन में सहयोग, वैदिक संसार पत्रिका को समय–समय पर विपुल सहयोग तथा पूर्ण संरक्षण।

5) दान वृत्ति – लाड़पुरा बस स्टेण्ड पर प्याऊ का निर्माण, ग्राम लाड़पुरा में राजकीय माध्यमिक विद्यालय में कमरे व बरामदे का निर्माण, पुष्कर स्थित धर्मशाला में सभागार का निर्माण, वैदिक संसार को वैदिक धर्म प्रचारार्थ मारुति कार भेंट, आर्य समाज गान्धीधाम द्वारा संचालित गतिविधियों में समय–समय पर सहयोग, कमजोर आर्थिक स्थिति के प्रतिभाशाली 5 विद्यार्थियों को प्रतिवर्ष छात्रवृत्ति तथा आवश्यकमंदों को शिक्षा, चिकित्सा, विवाह आदि अन्य कठिनाईयों में सहयोग, जीर्ण – शीर्ण मंदिरों के निर्माण में विपुल सहयोग।

6) ऋषि दयानन्द के भक्तों का संग – स्वामी शांतानन्द जी सरस्वती–भवानीपुर, डॉ. सोमदेव जी शास्त्री वैदिक विद्वान–मुम्बई, श्री वाचोनिधि जी आर्य, महामंत्री–आर्य समाज गान्धीधाम, श्री दयानन्द जी शर्मा, उद्योगपति एवं वरिष्ठ समाजसेवी (दक्षिण अफ्रीका), श्री गुरुदत्त जी शर्मा, कोषाध्यक्ष आर्य समाज गान्धीधाम, श्री मोहन जी जांगिड, मंत्री आर्य समाज गान्धीधाम, श्री खेमचन्द जी जांगिड, सदस्य आर्य समाज, गान्धीधाम, श्री नरेन्द्र जी शर्मा 'अल्पज्ञ', सुखदेव शर्मा, प्रकाशक वैदिक संसार आदि अनेक बन्धुओं से प्रगाढ़ता तथा जीवन्त सम्पर्क।

7) ज्ञानी – विलक्षण व्यवसायिक बुद्धि, वैदिक धर्म सिद्धातों तथा अंधविश्वास पाखण्ड का ठीक–ठीक परिचय।

8) निष्ठा – धर्म, मानव सेवा, आतिथ्य सत्कार तथा मूक प्राणियों के प्रति दया एवं स्नेहिल सम्बन्ध बनाने और निभाने के प्रति गहन निष्ठा।

9) परिवार – जैसे स्वयं वैसी ही धर्मपरायण, सेवाभावी, हंसमुख, मिलनसार अर्थात् गृहस्थ रुपी गाड़ी के दोनों पहिये समान धर्मपत्नी श्रीमती संतोषदेवी सिलक। जैसे आप दोनों वैसी ही आपकी संतान, सुपुत्री श्रीमती अन्नुदेवी शर्मा धर्मपत्नी श्री मुकेश जी शर्मा, जयपुर, कुमारी दिव्या शर्मा एवं एकमात्र कुल दीपक रौनक शर्मा।

10) व्यवसाय – आयात–निर्यात (पालीमर्स, कपड़ा तथा कोयला)

॥ ओ

माता मोहिनी देवी शर्मा मेमोरियल ट्रस्ट

गुगरिया (जांगि

समस्त स्नेहीजनों

एवं हार्दिक

श्री नेमीचन्द जी शर्मा

कु. दिव्या शर्मा

thearyasamaj.org

, गान्धीधाम (कच्छ) गुजरात की ओर से

ड) परिवार का

को सादर नमस्ते

आमंत्रण

श्रीमती संतोषदेवी शर्मा

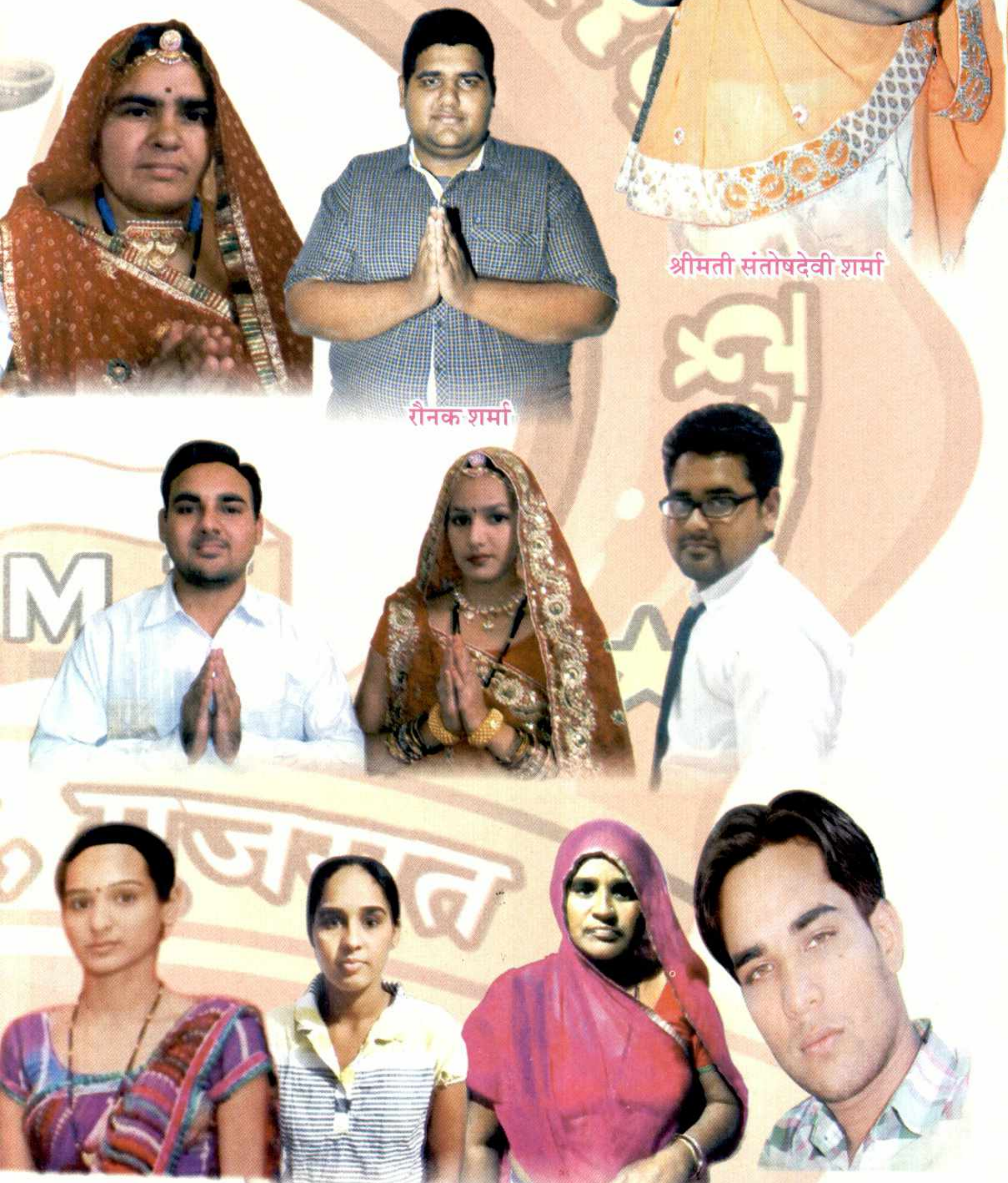

रौनक शर्मा

हमारे प्रेरणा स्त्रोत :

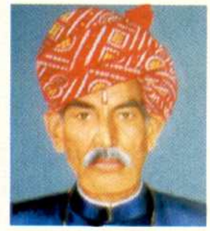

स्मृति शेष :
श्री जंवरलाल जी शर्मा

स्मृति शेष :
श्रीमती मोहिनी देवी शर्मा

आयोजन के मुख्य कार्यक्रम

दि : 12 जनवरी 2015

कलश यात्रा – प्रातः10:15
ध्वजारोहण – सायं 4:15

दि :13 जनवरी 2015

यज्ञ – सायं 4:15

दि :14 जनवरी 2015

यज्ञ – सायं 5:15
भजन संध्या – रात्रि 9 से

दि :15 जनवरी 2015

संत प्रवचन – दोप. 12 से
कवि सम्मेलन – रात्रि 8:30 से

दि :16 जनवरी 2015

यज्ञ – प्रातः 8:15
मूर्ति स्थापना – दोप. 12:15
पुष्पवर्षा – दोप. 12:15
(हेलीकाप्टर द्वारा)

पूर्णाहुति – दोप. 12:30
अतिथि सत्कार – दोप. 12:45
महाप्रसादी – दोप. 1:15 से

स्थान : ग्राम लाड़पुरा,
व्हाया : थांवला,
जिला – नागौर (राज.)

thearyasamaj.org

माता मोहिनी देवी शर्मा मेमोरियल ट्रस्ट, गान्धीधाम
द्वारा सम्पन्न कुछ सद् प्रवृत्तियों की चित्रावली

वेद प्रचार वाहन वैदिक संसार इन्दौर को भेंट

रा. मा. विद्यालय, लाड़पुरा में कमरे व बरामदे का निर्माण

बस स्टेण्ड, लाड़पुरा पर निर्मित प्याऊ

अखण्ड भारत गौ–रक्षा अभियान

गाय बचाओं, देश बचाओं

श्री नेमीचन्द शर्मा
गांधीधाम (कच्छ) गुजरात
मुख्य आधार स्तम्भ
अखण्ड भारत गौ–रक्षा अभियान

प्रेरणा एवं संयोजक :
गौ–सेवी श्री पद्मराम जी कुलरिया
ग्राम–मुलवास, नोखा, बीकानेर

अखण्ड भारत गो रक्षा अभियान समापन पर
साथियों द्वारा श्री नेमीचंद जी शर्मा का सम्मान

गो शाला लाड़पुरा निर्माण में अहम् भूमिका

पुष्कर स्थित जांगिड ब्राह्मण नोहरे में हाल का निर्माण

अखण्ड भारत गो रक्षा अभियान का समापन

औद्योगिक प्रतिष्ठान
BLAZE INTERNATIONAL
POLYREC PROCESSORS PVT. LTD.
Rudraksh Plastics Pvt Ltd
RONAKSH INTERNATIONAL

thearyasamaj.org

श्रीमद्भगवद्गीता को गीता ही क्यों कहते हैं?

-शिवदेवार्य
श्रीमद् दयानन्दार्ष-ज्योतिर्मठ-गुरुकुलम्
पौंधा, उत्तराखण्ड

श्रीमद्भगवद्गीता के अनेक भाष्य लिखे गये हैं। प्राचीन व अर्वाचीन सभी प्रकार के विद्वानों ने गीता के अभिप्राय को प्रकट करने के लिए अपनी-अपनी लेखनी का कौशल दिखाया है। संसार के साहित्य में बाईबिल का कदाचित् सर्वाधिक प्रचार है, किन्तु उसका कारण उसकी अपनी अपूर्व विशेषता नहीं है अपितु भिन्न-भिन्न ईसाई देशों की राज्य शक्तियों एवं बाईबिल सोसाइटियों का सतत अध्यवसाय तथा अदम्य उद्योग बाईबिल को यह आसन दे चुका है। इतना अधिक प्रचार होने पर भी बाईबिल ईशा के अनुयायीवर्ग से बाहर कहीं भी अपना आदर पूर्ण आस्पद नहीं बना सकी अर्थात् आज तक किसी गैर ईसाई ने बाईबिल पर मोहित होकर उसका प्रकाशन नहीं किया किन्तु यह भारतवर्ष के लिए अत्यन्त गौरव की बात है कि उसके पास आर्य ऋषियों का दिया हुआ एक ऐसा रत्न है, जिसकी विमल आभा आर्य-अनार्य सबके हृदय को आकर्षित कर लेती है, जिसकी मोहकता का जादू सभ्य-असभ्य सभी पर अनायास चला जाता है। यह रत्न है श्रीमद्भगवद्गीता। संसार की ऐसी कोई भाषा नहीं जिसमें गीता के एक से अधिक अनुवाद न हुए हो। अंग्रेजी, जर्मन, फ्रेन्च, लैटिन, ग्रीक, स्लाव, स्पेनिश, पोर्तुगीज आदि यूरोप की विभिन्न भाषाओं में इसके विविध अनुवाद एवं टीकाएँ प्राप्त होती है। एशिया महाद्वीप की भी सभी भाषाओं में गद्य-पद्य दोनों प्रकार के अनुवाद आदि है।

श्रीमद्भगवद्गीता, भगवद्गीता अथवा गीता ये नाम एक ही पुस्तक के हैं। इन नामों का ज्ञान सम्भवत: सम्पूर्ण मनुष्यों को है। अगर हम इसका अर्थ खोजे तो हमें ज्ञात होता है- '**भगवान् का गीता**'। हम सभी जानते है कि भगवान् श्रीकृष्ण जी महाराज ने अपने मुखारविन्द से धर्मसंस्थापनार्थ अर्जुन को जो उपदेश दिया उसी का नाम श्रीमद्भगवद्गीता है। जिस प्रकार महाभारतकाल में अर्जुन ने भगवान् श्रीकृष्ण जी के उपदेश को अपना आदेश स्वीकार करके विजय प्राप्त की, वैसे ही यदि हम अपने जीवन में गीता के उपदेश को धारण कर लें तो निश्चित ही हम दु:खान्धकार से सदा-सदा के लिए मुक्त हो जायेंगे।

'**गीता**' शब्द का सीधा अर्थ है कि '**जो गायी हो, पद्यबद्ध हो**'। इस समय तक अनेक गीत गाये गये, जो पद्यबद्ध भी है किन्तु गीता शब्द कह कर किसी को प्रयुक्त नहीं किया गया है। केवल और केवलमात्र श्रीमद्भगवद्गीता के लिए ही विश्वप्रसिद्ध हुआ है। आखिर क्या कारण रहा होगा जो यही नाम रखा गया होगा? सम्भवत: इसको देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि यदि कोई उत्तम मानवधर्म का गीत गाया है तो वह यही है। इसके समान मानवधर्म को दर्शाने वाला अन्य कोई गीत इस धरा पर दृष्टिगोचर नहीं होता। जैसे कि सुपुत्र को जन्म देने से '**माता**' माता बन गई अर्थात् अन्य माताएँ पुत्र को प्रसव करने वाली तो होती हैं किन्तु सुपुत्र के कारण से माता का नाम यशस्वी हो जाता है, उसी प्रकार गीत तो बहुश: हैं, जो शब्द छन्द में बद्ध होते हैं वे सब गीत ही है परन्तु इस गीता से मनुष्य परम पद मोक्ष को भी प्राप्त कर सकता है। इसीलिए यही उत्तम गीत है, अत: इसका नाम '**गीता**' प्रसिद्ध हुआ और सबको यही नाम अत्यन्त प्रिय लगा। '**श्रीमद्भगवद्गीता**' के पश्चात् इस संसार में अनेक गीताएँ लिखी गई। जैसे-रामगीता, अनुगीता इत्यादि। किन्तु संसार ने '**गीता**' के कथन से '**श्रीमद्भगवद्गीता**' ही समझा है।

यदा कदा अध्ययन के समय अध्याय के अन्त होने पर इस प्रकार पाठ उद्धृत होता है- ।। **इति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे..........अध्याय:**।।

इसमें प्रयुक्त हुए श्रीमद्भगवद्गीता, उपनिषद, ब्रह्मविद्या, योगशास्त्र, श्रीकृष्णार्जुनसंवाद इन पाँच शब्दों में हर एक नाम इस ग्रन्थ का हो सकता है। इसका नाम श्रीमद्भगवद्गीता ही क्यों हो, इसका पूर्व में विवेचन किया जा चुका है।

गीता का नाम '**उपनिषद्**' भी हो सकता था क्योंकि गीता को उपनिषद् का सार कहा जाता है।

सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दन:।
पार्थोवत्स: सुधीभोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत्।।

अर्थात् उपनिषद् रूपी जितनी भी गायें है, उन सबका दूध अर्थात् ज्ञान श्रीकृष्ण ने दुहा है। अर्जुन नामक बुद्धिमान् बछडा उस दूध का पान करता है इस प्रकार ये उपनिषद् का सार होने से उपनिषद् भी है। इससे सिद्ध होता है कि श्रीमद्भगवद्गीता का नाम उपनिषद् भी हो सकता था। उपनिषद् का अर्थ होता है कि (उप) समीप में (नि) नि:सन्देह से (सद्) बैठना। गीता में कहा हुआ जो भी ज्ञान है उसको मनुष्य अच्छी प्रकार से समझ ले तो नि:सन्देह वह परमपिता परमेश्वर के समीप बैठ सकता है।

इसका नाम '**ब्रह्मविद्या**' भी हो सकता था। '**ब्रह्म**' अर्थात् परमपिता परमेश्वर का ज्ञान (विद्या) जिसमें निहित हो वह ब्रह्मविद्या होती है।

भगवद् गीता का एक

सदाचार मूलक श्लोक

हमारे शास्त्रों ने सत्यासत्य, धर्माधर्म, कर्तव्य-अकर्तव्य, न्याय-अन्याय के निर्णय के लिए वेद, स्मृति, सदाचार (श्रेष्ठ पुरुषों का आचरण) तथा स्वयं की आस्था की स्वीकृति को प्रमाण माना है। यहाँ सदाचार को तीसरा स्थान मिला है। गीता ने सदाचार को अन्यों के लिए भी अनुकरणीय मानकर सभी को ऐसा ही आदर्श उपस्थित करने के लिए कहा है, जिसे अन्य भी अपनायें। प्रासंगिक श्लोक है -

यद्-यद्-आचरति श्रेष्ठः तत्देवोतरा जनाः।
स यत् प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्त्तते।।

श्रेष्ठ पुरुष जैसा आचरण करते हैं, सामान्य लोग भी उसी का अनुकरण करते हैं। इसीलिए कहा है - **रामवत् वर्तितव्यम् न तु रावणवत्** हमें राम जैसे मर्यादा पुरुषों के आचरण को अपना कर श्रेष्ठ आदर्श उपस्थित करना चाहिए न कि रावण की भाँति, दुराचारी, अत्याचारी के समस्त राक्षसों के काम। सम्भवत: सदाचार की शिक्षा देने वाला यह गीता का महत्वपूर्ण श्लोक है।

- डॉ. भवानीलाल भारतीय
३/५, शंकर कालोनी, श्री गंगानगर (राजस्थान)

thearyasamaj.org

जीवन नित्य होने पर भी अल्पज्ञ है। इसी अल्पज्ञता से वह नित्य प्रकृति के मोह में आनन्द स्वरूप पर ब्रह्म ईश्वर से विमुख होता है। उसे प्रकृति के विकृति से इतना मोह होता है कि वह इसे ही आनन्द को स्रोत समझते हुये अविद्या में फसा रहता है। जीव ब्रह्मविद्या से परब्रह्म को प्राप्त कर सकता है। वह इस ब्रह्मविद्या को समझ ले तो ज्ञानवान होकर अपने सामर्थ्य को विस्तृत करता हुआ परमलक्ष्य मोक्ष को भी प्राप्त कर सकता है।

इसका नाम **'योग-शास्त्र'** भी हो सकता था। इस गीता में १८ अध्याय हैं, जिसमें एक-एक करके योग की चर्चा की गई है। प्रत्येक अध्याय योग-शास्त्र कहा जा सकता था। अगर हम इतिहास को दृष्टिपथ करें तो ज्ञात होता है कि लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक जी ने गीता को **'कर्मयोगशास्त्र'** व महात्मा गाँधी जी ने **'अनासक्तियोग'** स्वीकार किया है। गीता में कर्मयोग कहा है और वह कर्म अनासक्ति से युक्त बुद्धि से करें।

योग शब्द का मूल अर्थ है जोड़ना। किसी से अपने सम्बन्धों को जोड़ने का नाम योग है। जैसे इस ग्रन्थ में अर्जुन ने विषाद (खेद) के साथ अपना सम्बन्ध जोड़ा, इस कारण से इस प्रथम अध्याय का नाम अर्जुन विषाद योग है। मनुष्य को खेद से मुक्त कर उसका सम्बन्ध ईश्वर से जोड़ना ही गीता का मुख्य ध्येय है। इस ग्रन्थ में बताया गया है कि एक मनुष्य जो प्रारम्भ में खेद से युक्त था, वही गीतोपदेश का श्रवण करके उत्तम पुरुष बनकर नर से नारायण के मार्ग की ओर अग्रसरित होता है।

इस ग्रन्थ का नाम श्रीकृष्णार्जुनसंवाद भी हो सकता था। क्योंकि यह योग सिद्ध पुरुष श्रीकृष्ण और साधक अर्जुन का संवाद है। सिद्ध से साधक बनने की आकांक्षा करता है। और उस ज्ञान को प्राप्त कर वह दु:खों से दूर हो सकता है। इसमें एक साधक का इतिहास होने से प्रत्येक साधक के लिए अत्यन्त उपयोगी हो सकता है। यदि मनुष्य मात्र साधक बनकर समाधि की श्रेणी से मोक्ष को प्राप्त करना चाहे तो वह सिद्ध व साधक का इतिहास पढ़कर समझ सकता है। यह संवाद मनुष्य मात्र का मार्गदर्शक हो सकता है।

ये पाँचों नाम गीता के हो सकते हैं, क्योंकि ये प्रत्येक अध्याय के अन्तिम में पठित है। किन्तु गीता नाम सर्वाधिक प्रसिद्ध हो चुका है तथा इन पाँचों नामों में सर्वप्रथम गीता ही स्वीकार किया गया है। यहाँ तक कि आद्य टीकाकारों ने भी गीता ही स्वीकार किया है।

आद्य टीकाकार श्रीशंकराचार्य जी ने टीका करते हुए भूमिका में लिखा है कि-

तं धर्मं भगवता यथोपदिष्टं सर्वज्ञो भगवान् गीताख्यैः सप्तभिः श्लोकशतैः उपनिबन्ध। तद् इदं गीताशास्त्रं समस्तवेदार्थसारसंग्रहभूतं दुर्विज्ञेयार्थम्.....। तस्य अस्य गीताशास्त्रस्य संक्षेपतः प्रयोजनं परं निःश्रेयसं सहेतुकष्य संसारस्य अत्यन्तोपरमलक्षणम्......। इमं द्विप्रकारं धर्मं निःश्रेयसप्रयोजनं परमार्थतत्वं च वासुदेवाख्यं परब्रह्म अभिधेयभूतं विशेषतः-अभिव्यंजयद् विशिष्ट प्रयोजनसम्बन्धाभिधेयवद् गीताशास्त्रम्। (श्रीमद्भगवद्गीता टीका, शांकरभाष्य, गीताप्रेस, गोरखपुर)

इससे सिद्ध हुआ कि **'गीता'** इतना ही नाम इस ग्रन्थ का होना सर्वसम्मत और सर्वप्रसिद्ध है। श्रीमद्भगवद्गीता अथवा भगवद्गीता ये नाम भी है परन्तु **'गीता'** शब्द जितना प्रचलित है उतने ये भी नहीं है। अत: हम सबको भी यही नाम स्वीकार करना चाहिए। ●

पृष्ठ ०८ का शेष ... **स्वामी दयानन्द और विज्ञान...**

पदार्थों की **(ऋष्टिभिः)** अर्थात् कलाओं से **(प्रच्या.)** पूर्व स्थान को छोड़कर मनोवेग यानों से जाते-आते हैं उन्हीं से मनुष्यों का सुख भी बढ़ता है। इसलिए इन उत्तम यानों को अवश्य सिद्ध करें।

आ नो नावा मतीनां यातं पाराय गन्तवे।
युञ्जाथामश्विना रथम्।। ऋ. १/४६/७

हे मनुष्यों! **(आनो नावा मतीनाम्)** जैसे बुद्धिमान मनुष्यों के बनाये नाव आदि यानों से **(पारायण)** समुद्र के पारावार जाने के लिए सुगमता होती है वैसे ही **(आ युञ्जाथाम्)** पूर्वोक्त वायु आदि अश्वि का योग यथावत् करो। **(रथम्)** जिस प्रकार उन यानों से समुद्र के पार और वार में जा सको। **(नः)** हे मनुष्यों! आओ आपस में मिलकर इस प्रकार के यानों को रचें जिनसे सब देश देशान्तर में हमारा जाना, आना बने।

कृष्णं नियानं हरयः सुपर्णा अपो वसाना दिवमुत्पतन्ति।
त आववृत्रन्त्सदनादृतस्थादिद्घृतेन पृथिवी व्युद्यते।। ऋ. १/१६४/४७

(कृष्णं नि.) अग्नि जल युक्त कृष्ण अर्थात् खेंचने वाला जो **(नियानं)** निश्चित यान है उसके **(हरयः)** वेगादि गुण रूप **(सुपर्णाः)** अच्छी प्रकार गमन करने वाले जो पूर्वोक्त अग्न्यादि अश्व हैं वे **(अपो वसानाः)** जल सेचन युक्त वाष्प को प्राप्त करके **(दिवमुत्पतन्ति)** उस काष्ठ, लोह आदि से बने हुए विमान को आकाश में उड़ा चलते हैं। **(त आवव्.)** वे जब चारों ओर से सदन अर्थात् जल से वेग युक्त होते हैं तब **(ऋतस्य)** अर्थात् यथार्थ सुख के देने वाले होते हैं **(पृथिवी घृ.)** जब जल कलाओं के द्वारा पृथिवी जल से युक्त की जाती है तब उससे उत्तम भोग प्राप्त होते हैं।

द्वादश प्रधयश्चक्रमेकं त्रीणि नभ्यानि क उ तच्चिकेत।
तस्मिन्त्साकं त्रिशता न शङ्कवोऽर्पिताः षष्टिर्न चलाचलासः।।

ऋ. १/१६४/४८

(द्वादशप्रधय) इन यानों के बाहर भी थम्मे रखने चाहिए जिनमें सब कलायन्त्र लगाये जाय। **(चक्रमेकम्)** उनमें एक चक्र बनाना चाहिए जिसके घूमाने से सब कला घूमें। **(त्रीणिनभ्यानि)** फिर उसके मध्य में तीन चक्र रचने चाहिए कि एक के चलाने से सब चक्र रुक जाए, दूसरे के घूमाने से आगे चलें और तीसरे के चलाने से पीछे चलें। **(तस्मिन् साकं त्रिशता)** उसमें तीन-तीन सौ **(शङ्कवः.)** बड़ी-बड़ी कीलें अर्थात् पेंच लगाने चाहिए कि जिनसे उनके सब अंग जुड़ जाए और उनके निकालने से सब अलग-अलग हो जाए। **(षष्टिर्न चलाचलासः)** उनमें साठ-साठ कला यन्त्र रचने चाहिए, कई एक चलते रहे और कुछ बन्द रहें अर्थात् जब विमान को ऊपर चढ़ाना हो तब भापघर के ऊपर के मुख बन्द रखने चाहिए और जब ऊपर से नीचे उतारना हो तब ऊपर के मुख अनुमान से खोल देना चाहिए। ऐसे ही जब पूर्व को चलाना हो तो पूर्व के बन्द करके पश्चिम के खोलने चाहिए और जो पश्चिम को चलाना हो तो पश्चिम के बन्द करके पूर्व के खोल देने चाहिए। इसी प्रकार उत्तर-दक्षिण में भी जान लेना। **(न)** उनमें किसी प्रकार की भूल न रहनी चाहिए। **(क उ तच्चिकेत) इस महा गंभीर शिल्प विद्या को सब साधारण लोग न ही जान सकते किन्तु जो महाविद्वान् हस्तकला में चतुर और पुरुषार्थी लोग हैं वे ही सिद्ध कर सकते हैं।**

स्वामी दयानन्द का यह सम्पूर्ण विवरण विज्ञान के अनुरूप है। मनोवेग से चलने वाले यान की कल्पना आश्चर्य जनक है। ●

thearyasamaj.org

साभार-वेद प्रकाश

जन्मपत्री तथा भविष्यवाणियाँ

-पं. मनसाराम वैदिक तोप

कहते हैं कि पंजाब में एक झल्लन नाम का जाट था। उसका पुत्र रोग ग्रस्त हो गया। उसके मन में यह विचार उत्पन्न हुआ कि अब डॉक्टरों को कौन बुलाता फिरेगा? डॉक्टरों की फिस तथा औषधियों का मूल्य मैं सहन नहीं कर सकूँगा। ये जो गंडे-तावीज करने वाले स्याने होते हैं, उनके पास चलो, उनसे कोई गंडा-तावीज ले आवेंगे और लड़के को आराम हो जायेगा। यह सोचकर झल्लन स्याने के मुहल्ले में गया तो क्या देखता है कि उस तावीज देने वाले के अपने ही घर में रोना-पीटना हो रहा है। झल्लन ने पूछा कि क्या बात है? लोगों ने बताया कि स्याने का २५ वर्षीय युवक पुत्र कल ही चल बसा। यह सुनते ही झल्लन कुछ पूछे बिना ही वहाँ से अपने घर को लौट आया।

ज्योतिषी के घर में शोक - चार-छह मास के पश्चात् झल्लन की पुत्री का शुभ विवाह होने वाला था। झल्लन ने सोचा-चलो पांधाजी से विवाह का मुहूर्त्त पूछ आवें। यह सोचकर झल्लन पांधाजी के घर पहुँच गया। संयोग ऐसा हुआ कि पांधाजी के घर में भी रोना-धोना मचा हुआ था। झल्लन ने पूछा कि क्या बात है? लोगों ने बताया कि पांधाजी की एक सोलह-वर्षीय पुत्री विधवा हो गई है। उसके विवाह को अभी केवल छः मास ही हुए थे। यह सुनकर झल्लन वहाँ से भी वापस आ गया। उसने पंजाबी में एक दोहा बोला -

वैद्या दे घर पिट्टनाँ, पांध्याँ दे घर रण्ड।
चल झल्लन घर अपने, साहा धरो निःसंग।।

अर्थात् स्यानों के घर में भी शोकाकुल लोग रो-धो रहे हैं और मुहूर्त्त निकालने वालों के अपने घर में पुत्री रांड (विधवा) हो बैठी है। चल रे झल्लन, अपने घर चल और निःशङ्क होकर **'साहा'** (विवाह की तिथि) निश्चित कर दे।

उसने सोचा-जब पांधा को अपनी पुत्री के ही विधवा होने का पता नहीं लगा तो मेरे सम्बन्ध में वह क्या बता सकेगा? यह बात ठीक है भाई, इन बातों का किसी को भी पता नहीं लगता। **'भोज प्रबंध'** में लिखा भी है कि **'घोड़े का कूदना, मेघों की गर्जन, स्त्रियों के मन की बात, मनुष्य का भाग्य, वर्षा का न होना अथवा अतिवृष्टि इन सब बातों को देवजन भी नहीं जान सकते, मनुष्य का तो सामर्थ्य ही क्या है।'**

सबसे बड़े ज्योतिषी का भ्रम टूटा- काशी-निवासी पं. सुधाकर द्विवेदी काशी के सबसे बड़े ज्योतिषी माने जाते थे। उन्होंने संस्कृत व ज्योतिष के सैकड़ों ग्रन्थों की टीकाएँ लिखी हैं। वह बनारस के राजकीय संस्कृत कॉलेज में ज्योतिष-विभाग के अध्यक्ष थे। उनके घर एक पुत्री ने जन्म लिया। उन्होंने उसकी जन्मकुण्डली बनवाई और उसके जन्म का ठीक-ठीक समय जानकर अपने मित्रों व शिष्यों को भेज दिया। सबने उस कन्या की जन्मकुण्डली बनाकर भेजी और लिखा कि कन्या का सौभाग्य अटल होगा। पण्डित सुधाकर जी को स्वयं भी गणित से ऐसा ही ज्ञात हुआ। परन्तु वह कन्या विवाह के छह मास के पश्चात् ही विधवा हो गई। इस पर पण्डित जी का फलित ज्योतिष पर विश्वास सदा-सदा के लिए डोल गया और उन्होंने काशी के टाउन हॉल में फलित ज्योतिष के खण्डन में व्याख्यान दिया तथा सब ज्योतिषियों को चुनौती दी की आओ, फलित ज्योतिष पर शास्त्रार्थ करो! परन्तु कोई भी ज्योतिषी उनके सामने न आया। उन्होंने श्री जनार्दन जोशी डिप्टी कलेक्टर को एक पत्र में लिखा है-**''मेरा फलित ज्योतिष में विश्वास नहीं है। मैं इसको एक प्रकार का खेल समझता हूँ। ये ज्योतिषी लोग अपने झूठे बकवास से लोगों का धन व्यर्थ में ही लूटते हैं।''**

घोर अंधविश्वास! राष्ट्र के भविष्य निर्माता अपना भविष्य खोज रहे हैं

मानव संसाधन विकास मंत्री स्मृति ईरानी पं. जी से अपना भविष्य जानते हुए

ऋषि दयानन्द के बारे में कहा था-'' श्री स्वामी दयानन्द जी महाराज के सम्बन्ध में ज्योतिषी ने उनके पिता जी को बतलाया कि इस बालक के दो विवाह होंगे, परन्तु स्वामी जी तो संन्यासी बन गए और बाल ब्रह्मचारी रहे। स्वामी वेदानन्द जी ने बतलाया कि हम दो व्यक्तियों को जानते हैं जिनका जन्म एक ही ग्राम में, एक ही मुहल्ला व एक ही समय में हुआ। उनका नाम भी एक ही रखा, परन्तु एक रलाराम तो पाँच सहस्त्र रूपये मासिक पाते रहे, मन्त्री भी बने और दूसरा रलाराम आजीवन साठ रूपये मासिक से अधिक न पा सका। अतः किसी की उन्नति व पतन का आधार जन्म का समय नहीं, प्रत्युत पूर्व-जन्म के कर्म एवं पुरूषार्थ ही है।

ज्योतिषी की पुत्री का अपहरण हो गया - गत दिनों समाचार पत्रों में एक घटना प्रकाशित हुई कि एक बहुत बड़े ज्योतिषी की पुत्री का एक स्कूल मास्टर ने अपहरण कर लिया है। चौदह दिन तक उस ज्योतिषी ने किसी को पता तक नहीं चलने दिया। चौदह दिनों तक वह लोगों को यह बतलाता रहा कि लड़की मामा के घर मिलने के लिए गई है।

चौदह दिन के पश्चात् आर्यसमाज के प्रधान को पता चला तो वह दो-चार सज्जनों को साथ लेकर ज्योतिषी के घर गए और वास्तविक स्थिति को जानकर कहा-**''चलो थाना में चलकर रिपोर्ट तो लिखवाएँ।''**

ज्योतिषी जी ने कहा-**''अब लड़की तो मेरे काम की रही नहीं, मैं उसको घर पर तो रख नहीं सकता।''**

इस पर प्रधान आर्यसमाज ने कहा-**''वह आपकी ही पुत्री नहीं, प्रत्युत हमारी भी है। हम उसको अपने पास रखेंगे।''** अन्ततः थाना में रिपोर्ट लिखवाई गई। थाना से पुलिस को साथ लेकर मन्त्री आर्यसमाज कोयटा गया और वहाँ से बहावलपुर राज्य में जाकर लड़की को खोज निकाला। चार-पाँच सहस्र रूपये लगाकर और पाँच मास तक घोर परिश्रम करके उस लड़की का विवाह किया गया। ज्योतिषी जी को जन्मपत्री से इन सब बातों का ज्ञान न हो सका कि लड़की का अपहरण होगा। कहने का तात्पर्य यह है कि ज्योतिषियों को स्वयं अपने बारे में ही विपत्तियों का पता नहीं लग सकता, दूसरों को तो वे क्या बतलावेंगे। इस सम्बन्ध में एक और उदाहरण है-

शेष आगामी अंक में..

(अन्धविश्वासों और पाखण्डों की पोल खोलती पुस्तकें पौराणिक पोल प्रकाश व पौराणिक पोप पर वैदिक तोप अवश्य पढ़ें - सम्पादक)

thearyasamaj.org

पृ. १९ का शेष **नास्तिको वेद निन्दकः.....**

हम फलित ज्योतिष को केन्द्र में रखते हुए कुछ नहीं कह रहे और ना ही सब के सब फलित ज्योतिषी ऐसे हैं। बहुत हैं जो पंचांग सुधार के रूप में श्री मोहन कृति आर्ष तिथि पत्रक का सम्मान कर रहे हैं। उनको भी हमारी तरह चिंता है वैदिक गरिमा और भारतीय '**वेद परक**' संस्कृति की। हम वेदों की शरण हैं और जो वेदों के विरूद्ध हो उसे हम नहीं मान सकते। चाहे वह '**लकीर**' कितनी ही '**पुराणमित्येव**........... (सन्दर्भ-कालिदास) क्यों न हो।

और हाँ, ज्योतिष के दृष्टिकोण से अगर किसी अन्य को भी संस्कृति की चिंता नहीं है तो वह है आज का आर्यसमाज। मैं इन सभी लोगों से दार्शनिक भाषा में कहना चाहता हूँ कि याद रहे, ''**येन माद्यमेन कस्यापि वस्तुनः स्वरूपज्ञानं भवति तदंग कथ्यते। अंगाना माद्यमेन (वेदांग) हि अंगिनो (वेद) ज्ञानं संभवः।** ज्योतिष वस्तुतः वेदांगों में से ही एक अंग है और पंचांग, सांस्कृतिक तौर पर, ज्योतिष का एक अपरिहार्य निष्कर्ष है। जितना आवश्यक वेदों को सही अर्थ में लेना है उतना ही आवश्यक है पंचांगों का भी सही रूप से जानना और स्वीकारना।

दूसरों को भटकाव से बाहर निकालने को प्रतिबद्ध आर्यजन नभस्य मास (भाद्रपद) की पूर्णिमा को रक्षाबंधन का त्यौहार मना रहे हैं। मैंने पहली जनवरी को नववर्ष दिवस मनाने को लेकर अनेकों लोगों को सरकारों व राजनेताओं को कोसते हुए सुना है लेकिन अपने जन्मदिनों को अंग्रेजी तिथियों से मनाने में कोई संज्ञान नहीं। **तब स्वदेशी और विदेशी का कोई भान नहीं।** कैसे सुधरेंगे हम सब ? क्या होगा हमारा ? मैंने पंचांग के वैदिक आधार युक्त सिद्धांत से एक सुझाव रखा था, फेसबुक और व्यक्तिगत संदेश (SMS) के माध्यम से कि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज की जन्मतिथि को आर्ष तिथि पत्रक के अनुसार माघ कृष्णा दशमी के रूप में मनाया जाना चाहिए और पूज्य पाद ऋषि द्वय (आदि शंकराचार्य जी एवं स्वामी दयानन्द जी) के जन्म दिनों को राष्ट्रीय त्योहार घोषित करवाया जाना चाहिए परन्तु कोई भी सार्थक प्रतिध्वनि सुनने को नहीं मिली है। ये सब इसलिए है क्योंकि हमने वेदों को भाषण विषय तो बना दिया किन्तु श्रद्धा और व्यवहार का विषय नहीं। प्रश्न ये हैं कि सब हम नहीं करेंगे तो फिर कौन करेगा ?

जी, ये श्रावण नहीं भाद्र मास है। २१ जून को दक्षिणायन के साथ ही वर्षा ऋतु शुरू होती है, हुई है। श्रावण कृष्णा एकादशी की रात्रि को (२२ जुलाई) सिंह संक्रांति के साथ नभस्य वैदिक मास शुरू हुआ है और तब पहला शुक्ल पक्ष, भाद्र शुक्ल पक्ष हुआ। आर्य समाज के एक विद्वान् पुरुष को ऐसी सूचना दी जाने पर वे मुझसे प्रमाण मांगने लगे। मैंने उनसे डाकीय पता मांगा ताकि मैं अपने पंचांग की एक प्रति भेज सकूँ। कई दिन हो गए हैं, अभी तक तो उत्तर आया नहीं।

ऐसा नहीं है कि समाज के अन्य विद्वानों को आर्ष तिथि पत्रक, गया ही न हो। नहीं, बहुत से विद्वानों को गया है और चार-पाँच को छोड़कर अधिसंख्यक ने देखने समझने के बाद भी संज्ञान नहीं लिया है। इन कुछ कमजोरियों के चलते आर्य समाज के वेद प्रचार के भरसक प्रयासों के बादं भी अभी यही प्रगति है कि-

- यजुर्वेद ९/७ मंत्र को नक्षत्रों के पक्ष में देखा जा रहा है।
- **स्वदेशिता के भावों से ओत-प्रोत भी हम गलत तिथियों में या अंग्रेजी तिथियों में अपने जन्मदिन या पर्व मना रहे हैं।**
- वेद के मन्त्रों का अनर्थ कर रहे हैं।
- व्यवहार के लिए वैदिक मार्गदर्शनों को भूल रहे हैं या उनको गौण कर रहे हैं।
- सब अंधेरा छंटना चाहिए और एक मंगलमयी भोर वैदिक संस्कृति के अवगाहन की होनी चाहिए। वैदिक पंचांग भी उसी भवितव्यता की एक अनिवार्य कड़ी है। ●

पृष्ठ १४ का शेष ... **प्राचीन भारत की राजनैतिक...**

मैं नित्य नियमपूर्वक यज्ञ करता हूँ। एक ऋत्विज को जितना-जितना धन दूँगा उतना-उतना धन आप में से प्रत्येक महानुभावों को दूँगा। अतः हे भगवन्त! आप लोग कृपया मेरे यहाँ निवास करें।

इनसे पता चलता है कि प्राचीन भारत की राजनैतिक व्यवस्था में चारों वर्ण के लोग सदाचारी विद्वान् और याज्ञिक होते थे, प्रजाएँ बहुत सुखी-सम्पन्न थी, राजकोष का भंडार हमेशा भरा रहता था। राजा का राज्यनियम सभी वर्गों के लिए पूर्णतः न्यायपूर्ण था। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र में कोई भेदभाव नहीं था, ऊँच-नीच का कोई स्थान नहीं था। यह वर्ण व्यवस्था कर्म आधारित थी। मनुस्मृति के अध्याय ८ श्लोक ३३५ और ३३६ से स्पष्ट होता है कि चाहे राजा का पिता हो या आचार्य, मित्र हो या माता, स्त्री, पुत्र या पुरोहित हो अगर अधर्म युक्त कार्य करे तो वह राजा द्वारा दण्डनीय है अर्थात् दण्ड युक्त न्याय करें।

मनुस्मृति के राज प्रकरण में लिखा है कि प्रजा को अभय करने वाला राजा पूज्य है।

अभयस्य हि यो दाता पूज्यः सततं नृपः।
सग हि वर्धते तस्य सदैव उभय दक्षिणम् ।। ८-३०३

शिक्षा व्यवस्था के बारे में पता चलता है कि उस समय बहुत ही उन्नत शिक्षण व्यवस्था थी साम ब्राह्मण के छान्दोग्य भाग प्रपाठक खंड। प्रवाक २ के पाने से जहाँ महर्षि सनत्कुमार और नारद का संवाद है सनत्कुमार के पूछने पर नारद ने बतलाया है कि उन्होंने ऋक्, साम, यजु, अथर्ववेद के अलावा इतिहास, पुराण निरुक्त, पितृत्व विद्या, गणित विद्या, ''**दैवम्**'' अर्थात् प्रकृति विद्या उत्पात, भूकंप, जलप्लावन, विद्युत, वायु आदि विद्या के अतिरिक्त '**निधिम**' अर्थात् खान विद्या, ''**वाकोवाक्यम्**'' अर्थात् तर्कशास्त्र, ''**ब्रह्म विद्या**'', भूत विद्या अर्थात् प्राणि विज्ञान, ''**क्षत्रविद्याम**'' अर्थात् राजनीति, नक्षत्र विद्याम अर्थात् खगोल शास्त्र इत्यादि का वर्णन नारद ने महर्षि सनत्कुमार को बतलाया इससे सिद्ध होता है कि प्राचीन भारत की राजनैतिक व्यवस्था में शिक्षा का स्थान उत्तम था।

रामायण कालीन स्थिति पर दृष्टिपात करने से पता चलता है कि इक्ष्वाकु वंशज अज के पुत्र महाराजा दशरथ और राम कालीन राज व्यवस्था का जो चित्रण महर्षि वाल्मीकि ने किया है उससे प्रतीत होता है कि आर्य जाति में अंशतः आर्येतर गुण के संक्रमण हो जाने राक्षसी वृत्ति के समुदाय के भी राजा बनने लगे थे जैसे- ऋषि पुलसत्य और विश्रवा वंशज रावण लेकिन विभीषण में आर्येत्तर गुणों का संक्रमण नहीं हुआ था।

राम राज की रक्षा व्यवस्था कैसी थी-ऊँची ऊँची दुर्ग बनी हुई उस पर शतघ्नी अर्थात् उस समय की तोपे लगी हुई थी। ●

thearyasamaj.org

ज्ञान के अभाव में फल-फूल रहा अंधविश्वास, पाखण्ड और आपसी मतभेद

कवच, यंत्र राशि आदि के नाम पर ठगी से बचो

– आचार्य रामगोपाल सैनी
प्राचार्य - पी. जी. कॉलेज
फतेहपुर (सीकर), राज.
चलभाष-०९८७७३९३७१३

आज कल प्राय: हर आदमी किसी न किसी अभाव, परेशानी अथवा संकट में रहता है। इस बात को ध्यान में रखते हुए कई लोगों ने ठगी के जाल बिछा रखे हैं। दूसरों की मजबूरी का गलत फायदा उठाकर ये लोग मालामाल हो रहे हैं।

ठग लोगों ने लोगों को लूटने के लिए लक्ष्मी कवच, हनुमान कवच, दुर्गा कवच, पेंडेन्ट, यंत्र, मूर्ति, माला, रूद्राक्ष आदि बना रखे हैं। इनको मंत्रजाप से अभिमंत्रित करना बताया जाता है। लोगों को फांसने के लिए दावा किया जाता है कि इनसे गरीबी, बेरोजगारी, आर्थिक मन्दी, बीमारी, आर्थिक तंगी, पढ़ाई की चिन्ता, मानसिक तनाव, घरेलू तनाव आदि दूर होते हैं तथा मुकदमें में जीत, प्रेम में सफलता, व्यापार में लाभ, लड़ाई में विजय, नौकरी में सफलता आदि मिलते हैं। कहने का मतलब यह है कि इनका ताबीज पहनते ही दुनियाँ की सब समस्याएँ दूर हो जाती हैं। इसी प्रकार का एक गोरख धन्धा राशि रत्नों के माध्यम से भी संचालित किया जाता है जिनके समाचार पत्रों में तथा टी.वी. चैनलों पर बड़े-बड़े विज्ञापन आते रहते हैं जिनमें लोगों को शनि, राहु तथा केतु ग्रहों की क्रूर दृष्टि से बचने के लिए **'नीलम'** आदि रत्नों को धारण करने की सलाह दी जाती है। शनि का ढैया (ढाई साल) तथा साढे साती (साढे सात साल) का प्रकोप बताकर नीलम अथवा **'ब्ल्यू टोपाज'** रत्न धारण करने को कहा जाता है।

दरअसल राहु तथा केतु नाम के तो कोई ग्रह है ही नहीं। ये काल्पनिक ग्रह लोगों को डराकर ठगने के लिए बना रखे हैं। आप भूगोल की तथा विज्ञान की पुस्तकों में ग्रहों के नाम देखिये। उनमें राहु तथा केतु नाम के कोई ग्रह है ही नहीं। जिन ग्रहों का आकाश में अथवा ब्रह्माण्ड में कहीं अस्तित्व ही नहीं है वे ग्रह लोगों का अनिष्ट कैसे करेंगे, उन पर बुरा प्रभाव कैसे डालेंगे?

शनि नामक ग्रह आकाश में है। यह एक आकाशीय पिण्ड है। आकाश में लाखों, करोड़ों ग्रह-नक्षत्र-तारे हैं। वे अपने-अपने मार्गों पर घूम रहे हैं। वे न तो पृथ्वी के मानवों पर कोई अच्छा असर डालते हैं और न बुरा। ग्रह निर्जीव आकाशीय पिण्ड होता है। न तो वह किसी पर कुपित हो सकता है और न प्रसन्न।

रत्न चमकदार, सुन्दर, रंग-रंगीले पत्थर होते हैं। आभूषण के रूप में अंगूठी में लाल, नीले, पीले, हरे आदि को शौक के हिसाब से लोग अंगूठी में पहन लेते हैं। नीलम, पुखराज, मूंगा, हीरा, मोती, वैदूर्य, पद्मराग (माणक), गोमेद, पन्ना, ओपल, सुनहला, लहसुनिया आदि रत्न तथा एक मुखी, दो मुखी, पंचमुखी रूद्राक्ष आदि पहनने से कोई लाभ (आर्थिक लाभ, स्वास्थ्य लाभ) होने की मान्यता निरा अंधविश्वास है। लोगों की समस्याएँ तो दूर हों या नहीं हो लेकिन इनसे इन ठगों की झोली जरूर ठसा-ठस भर जाती है। अक्ल के अन्धे, गांठ के पूरों की देश में कमी भी तो नहीं है।

ज्योतिष के प्रति अंधविश्वास

हिन्दू समाज में ज्योतिष के प्रति अंधविश्वास इतना अधिक फैला हुआ है कि इनके विवाह, नवीन गृह प्रवेश, नवीन व्यापार आरम्भ आदि कार्य ज्योतिषियों की राय से ही शुरू होते हैं। अच्छे पढ़े लिखे और उच्च पदस्थ लोग भी इसके जाल में फंसे हुए हैं। पिछले दिनों केन्द्र सरकार की शिक्षा मंत्री स्मृति ईरानी का भिलवाड़ा में एक ज्योतिषी को **'अपना हाथ दिखकर भविष्य पूछना'** चर्चा का विषय रहा था।

आश्चर्य की बात तो यह है कि ज्योतिषी लोग सभी देवताओं को आषाढ़ शुक्ल एकादशी से लेकर कार्तिक शुक्ल एकादशी तक चार महीनों तक सुला देते हैं। क्या यह संभव है कि कोई व्यक्ति चार महीनों तक निरन्तर सोया हुआ रहे? ज्योतिषियों का फरमान है कि इन चार महीनों में भवन का शिलान्यास, नवीन भवन प्रवेश, विवाह, नवीन व्यापार प्रारम्भ आदि शुभकार्य नहीं होने चाहिए।

वैसे कार्तिक शुक्ल एकादशी को ज्योतिषी लोग देवताओं को उठा देते हैं जिससे सभी शुभकार्य शुरू हो जाते हैं किन्तु इस बार ऐसा नहीं हुआ। इस बार इनका फरमान और आगे बढ़ गया। इस बार फरमान हुआ – अश्विन शुक्ल ८ (दो अक्टूबर) को शुक्रतारा अस्त हो गया है जो २३ नवम्बर को उदय होगा अत: देव उठनी ग्यारस ३ नवम्बर के बाद भी २९ नवम्बर तक मंगल कार्य नहीं होंगे। २३ नवम्बर को शुक्र उदय होने के बाद भी २९ नवम्बर तक बाल्यत्व दोष रहेगा। वैसे जनता ने ३ नवम्बर को देव प्रबोधिनी एकादशी को तथा उसके बाद भी खूब शादियाँ की हैं और अब भी कर रही है।

आर्य-अनार्य, यंत्र, मंत्र, तंत्र इन सब का समाधान एक लाख रूपयों में भी मिले तो 'सस्ती पुस्तक'

एक पुस्तक है। उसे आप जरूर खरीदें। आपके आस-पास कोई पुस्तकें खरीदने तथा पढ़ने वाला शौकीन व्यक्ति हो तो उसे कहें कि वह आपको यह पुस्तक मंगाकर दे। यह पुस्तक आपको किसी से उधार मांगकर नहीं पढ़नी है अपितु मूल्य देकर मंगवाना है क्योंकि यह कोई पुस्तक नहीं एक **'कीमती रत्न'** है। एक हीरा तो एक ही घर में चमक फैलाता है लेकिन यह पुस्तक तो लाखों घरों को रोशन कर चुकी है तथा लाखों घरों को और भी रोशन करने की हैसियत रखती है।

यह पुस्तक आपको यदि एक लाख रूपये खर्च कर भी प्राप्त हो जाये तो उसे सस्ती समझना। इस पुस्तक को अकेले ही नहीं पढ़ना है। इसे अपने परिवार के सभी सदस्यों को तो पढ़वाना ही है, अपने इष्ट मित्रों तथा रिश्तेदारों को भी पढ़वाना है।

इस पुस्तक-रत्न का नाम है **'सत्यार्थ प्रकाश'**। इसके लेखक हैं भारत में वेदादि शास्त्रों उद्भट विद्वान् स्वामी दयानन्द सरस्वती।

thearyasamaj.org

अब आ रहा है मलमास

अब १६ दिसम्बर को सूर्य धनु राशि में प्रवेश कर लेगा और १३ जनवरी तक इसमें रहेगा। ज्योतिषियों का कहना है कि यह काल '**मल मास अथवा खरमास**' कहलाता है, अत: इसमें भी शुभ काम नहीं होंगे। **''देखते हैं अब बुद्धिजीवी क्या करते हैं?''**

(मल अर्थात् गन्दगी, मास अर्थात् महिना । विचारणीय प्रश्न है कि कोई महिना अथवा समय क्या गन्दा हो सकता है? अगर ऐसा है तो फिर परमात्मा ने अपनी सबसे सुन्दर कृति मनुष्य का निर्माण (जन्म) इस मलमास में बन्द कर देना चाहिये-सम्पादक)

मांझी जी! जानिये तो सही आर्य-अनार्य क्या है?

बिहार के मुख्यमंत्री मांझी का गैर जिम्मेदाराना बयान

बिहार के जनता दल (यू) के मुख्यमंत्री जीतनराम मांझी ने पिछले दिनों इस प्रकार का गैर जिम्मेदाराना बयान दिया - **''अगड़ी जातियों के लोग आर्यों के वंशज हैं और आर्य भारत में विदेशों से आये हैं। आदिवासी तथा दलित लोग भारत के मूल निवासी हैं। यह दुर्भाग्य है कि भारत में विदेशी होते हुए भी अगड़ी जातियों के लोग राज कर रहे हैं।''**

'**मांझी**' हो सकता है पूर्व में दलितों तथा आदिवासियों में राजनीति करते रहे होंगे और उस समय वे इस तरह के भाषण देते रहे होंगे किन्तु इस समय तो वे पूरे प्रदेश के मुख्यमंत्री हैं, सभी जातियों के हैं। अगड़ी जातियों को विदेशों से आई हुई बताकर मांझी ने अपनी इतिहास से अनभिज्ञता का तो परिचय दिया ही है बल्कि अगड़ी जातियों का उन्होंने अपमान भी किया है। एक मुख्यमंत्री जैसे उत्तरदायी पद पर विराजमान व्यक्ति के लिए अनुत्तरदायी कथन करना घोर निन्दनीय है।

श्री मांझी को इस बात का ज्ञान नहीं है कि भारत धरा पर लाखों वर्ष पूर्व जो प्रथम मानव उत्पन्न हुआ था, वह आर्य था। आर्य कहीं बाहर से भारत में नहीं आये बल्कि ये भारत के मूलनिवासी, आदिवासी हैं। भारत में आज जितने भी हिन्दू हैं वे सभी आर्य हैं। हिन्दू तथा आर्य एक ही वर्ग के नाम हैं, दोनों शब्द पर्यायवाची हैं। आर्यों में ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य तीन ही वर्ण नहीं, चार वर्ण होते हैं। आर्यों में चौथा वर्ण शूद्र वर्ण भी होता है। शूद्र वर्ण में आने वाली जातियाँ भी आर्य ही हैं, अनार्य नहीं। अनार्य केवल वे हैं, जो अविद्यादि दोषों में जकड़े निकृष्ट आचरण के पतनगामी मनुष्य नहीं हैं।

आर्य (हिन्दू) जाति पराक्रमी तथा विद्या की उपासक जाति रही है। जो लोग यह कहते हैं कि आर्यों के आने से पूर्व भारत में द्रविड़ लोग निवास करते थे, वे अज्ञानी हैं। उत्तर और पूर्वी भारत में द्रविड़ कभी नहीं रहे। केवल दक्षिण भारत में द्रविड़ लोग निवास करते हैं। यह द्रविड़ जाति आर्य जाति में से ही निकली है और आर्यों की ही '**उपजाति**' है। मुस्लिम, ईसाई आदि जो विधर्मीमत बाहर से आये उनके तथाकथित धार्मिक स्थल वहीं हैं जहाँ ये उत्पन्न हुए। जैसे इस्लाम धर्म सउदी अरब में जन्मा तो इसके मक्का, मदीना आदि स्थल सउदी अरब में ही हैं।

बाहर से आने वाले मतों के स्थल, स्वघोषित महापुरुष एवं देवी-देवता, पुस्तकें, उपासना पद्धति आदि सब अलग हैं किन्तु आर्यों के सभी धर्मस्थल भारत में हैं, इनकी सरस्वती, गंगा, यमुना आदि पवित्र नदियाँ, तीर्थ, धर्मस्थल, धर्मग्रन्थ एक है, इनकी उपासना पद्धति एक है, इनके उपास्य देवी-देवता एक है। तभी तो द्रविड़ जाति में जन्मे आदि शंकराचार्य सभी आर्यों के मान्य धर्माचार्य हैं। वेद आर्यों के प्रमुख ग्रंथ हैं। वेदों को कण्ठस्थ करने वाले तथा उनका सस्वर उच्चारण करने वाले लोगों में अधिक संख्या द्रविड़ों की ही है। पिछड़े एवं दलित लोगों को भ्रमयुक्त इतिहासविदों की बातों में नहीं आना चाहिये। ●

रामपाल ने भविष्यवक्ता नास्त्रेदेमस की एक भविष्यवाणी का अपना आधार बढ़ाने के लिए इस्तेमाल कर लिया था। भारत संबंधी इस भविष्यवाणी का पहले भी कई लोग अपने लिए दुरुपयोग कर चुके हैं।

नास्त्रेदेमस का भविष्य व रामपाल

-सुरेन्द्र किशोर

हिसार के कथित संत रामपाल ने अपना आधार बढ़ाने के लिए चर्चित फ्रांसीसी भविष्यवक्ता नास्त्रेदेमस की भविष्यवाणी का भी अपने पक्ष में इस्तेमाल किया था। नास्त्रेदेमस ने १५५५ में लिखा था, '**तीनों सागरों की श्रृंखला में जन्मा, पूर्व में ऐसा व्यक्तित्व पैदा होगा जो बृहस्पतिवार को अपना उपासना दिन घोषित करेगा। उस गैर ईसाई व्यक्ति की महिमा, प्रशंसा और अधिकार इतने प्रबल होंगे कि समस्त धरती और समुद्र पर्यंत वह तूफान की तरह छाया रहेगा।**'

अपने कारनामों के लिए अब जेल में बंद रामपाल के ब्लॉग के अनुसार वह व्यक्तित्व और कोई नहीं बल्कि वह खुद है। इसके अलावा रामपाल खुद को संत कबीर का अवतार भी बताता था। भारत के बारे में नास्त्रेदेमस की इस भविष्यवाणी से कुछ अन्य भारतीयों ने भी अपने नाम जोड़े थे। कुछ साल पहले एक चिकित्सक इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पर एक दवा का प्रचार करता था। वह दावा करता था कि उसकी एक दवा से हर तरह की बीमारी का इलाज संभव है। वह भी खुद को नास्त्रेदेमस की भविष्यवाणी का पात्र बताता था पर बाद में वह भी जेल गया।

रामपाल के बहाने नास्त्रेदेमस के बारे में कुछ महत्वपूर्ण बातें याद करना मौजूं होगा। नास्त्रेदेमस ने दुनियाभर के बारे में अनेक भविष्यवाणियाँ भी की थीं जो १५५५ से ३७९७ तक के लिए है, पर अब तक उनमें से अनेक गलत भी साबित हुई हैं। हाँ, उन्होंने अपनी मृत्यु के बारे में जरूर सटीक भविष्यवाणी की थी। नास्त्रेदेमस ने कह दिया था कि उनकी मृत्यु के ठीक २५० साल बाद उनकी कब्र खोदी जाएगी। उसने यह भी कह दिया था कि जो उनकी कब्र खोदेगा, उसकी तत्काल मृत्यु हो जाएगी। यही हुआ भी। हालांकि, उसकी यह भविष्यवाणी गलत साबित हुई कि चीन १९९९ में परमाणु युद्ध शुरू करेगा। हाँ, उनके कहे अनुसार सोवियत संघ ने साम्यवाद छोड़ दिया।'

नास्त्रेदेमस का जन्म फ्रांस के सेंट रेमी डी प्रोवेंस में १४ दिसम्बर १५०३ को हुआ था। २ जुलाई १५६६ को उनका निधन हुआ। वे शीशे में झांककर अपना पूरा ध्यान उस पर केंद्रित करके संसार के भविष्य को फिल्म की तरह देख सकते थे। नास्त्रेदेमस ने एक हजार चतुष्पदियाँ लिखी हैं और इशारे से भविष्य-कथन किया है। चतुष्पदियों के अर्थ लगाने में यदा-कदा गलतियाँ भी हो जाती हैं पर मोटी-मोटी उनकी बातें स्पष्ट ही हैं।

नास्त्रेदेमस की यह बात गलत साबित हुई कि मानवता का दो-तिहाई हिस्सा २००६ में नष्ट हो जाएगा, पर यह सही रहा कि इंग्लैंड तीन सौ साल तक सर्वशक्तिमान बना रहेगा। उन्होंने लिखा है कि ३७५५ में किसी रोज मई महीने में शनि, कर्क, मंगल, कन्या राशि में होगा तब आकाश जमीन पर गिरेगा ओर सृष्टि नई उत्पत्ति की ओर उन्मुख होगी।' उन्होंने यह भी लिखा है कि तीसरे विश्व युद्ध के बाद भारत दुनियाँ के शक्तिशाली देश के रूप में उभरेगा। देखना है कि उनकी इस भविष्यवाणी का क्या भविष्य होता है।

लेखक दैनिक भास्कर, पटना के एडिटोरियल एडवाइजर हैं। ●

(भविष्यवाणियों का जाल ही आधा सच-आधा झूठ की अटकलों पर टिका होता है अर्थात् लग गया तो तीर नहीं तुक्का - सम्पादक)

thearyasamaj.org

हमें नेताओं में नहीं, राजनीति में रूची लेनी चाहिए

- गोविन्दराम आर्य
अध्यक्ष-वेद प्रचार समिति, मध्यप्रदेश
तह. रोड़, देपालपुर, जिला-इन्दौर (म.प्र.)
चलभाष-०९४२४०१२४७१

यदि अपना कार्य थोड़ा कष्ट उठाकर हम स्वयं ही करने लगेगें और राजनेताओं एवं अधिकारियों के पीछे दौड़ना व इनकी चमचागिरी बन्द कर इनसे स्पष्टीकरण मांग सकें ऐसा आत्मविश्वास निर्माण कर लेगें तो यकीनं मानिये पुरा नहीं ४० प्रतिशत भ्रष्टाचार और शोषण अवश्य कम हो जायेगा। अच्छे कार्य में हम इनका सहयोग करें।

हम एक ओर तो इनको भ्रष्टाचारी कह कर इनकी आलोचना करते हैं वही बार-बार उनके पास जाकर उनकी किमत भी बढ़ाते हैं। हमें नेताओं में नही राजनीति में रूचि लेना चाहिए, हमारे कार्यों के मूल्यांकन यश-अपयश की तराजू पर तोल कर देखने के स्थान पर एवं हमें आर्थिक लाभ प्राप्त करने में सफलता मिले अथवा असफलता के स्थान पर इस कसोटी पर तोलना होगा की हम जो कार्य कर रहे हैं वह कार्य योग्य है। अथवा अयोग्य है अगर यह ध्यान में रखकर हम कार्य करेंगे तो वह कार्य हमारे व हमारे देश के हित में ही होगा।

समय का रोना रोकर आसुओं को बहाने के बजाय उसे अपने पैरों की गति और हाथों के कौशल में परिवर्तित करने लगेगें तो निश्चित ही हम चीन से भी कहीं आगे निकल जायेंगे। आज जो युवक १५ से २० वर्ष के आयु वर्ग में है उनका भविष्य कैसा होगा यह चिन्ता का विषय है। भारत में बड़े पैमाने पर रोजगार तथा स्वयं रोजगार बढ़ाने के लिये उद्योग धन्धों पर लगाये गए कष्टदायक प्रतिबन्ध हटाने होंगे, विशेष रूप से असंगठित क्षेत्र के किसान तथा मजदुर वर्ग की कार्य क्षमता बढ़ाने के लिये बड़े पैमाने पर प्रशिक्षण देना होगा, छोटी रकमों का कर्ज बाँटने वाली ग्रामीण बैंकों जैसी संस्थाओं को प्रोत्साहन देना होगा, खास लघु तथा असंगठित वर्ग के लिये तैयार किये गये प्रशिक्षण कार्यक्रम छोटे कर्ज बाँटने वाली संस्थाऐं बिजली तथा सड़कों की व्यवस्था उपलब्ध सरकार कराये।

केवल सरकारी प्रयासों की प्रतीक्षा करने की जरूरत नहीं है। भारतीय युवक भी सक्षम हैं। यदि ५-१० युवकों के समुह एकत्र होकर नवीन उद्योग की योजना बनाएँ तो सब समस्याओं से छुटकारा प्राप्त कर वे सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

इंफोसिस का उदाहरण-१९४३ में ७ युवकों ने इंफोसिस कम्पनी की स्थापना की थी पहले १० वर्षों में उन्हें बहुत सफलता नहीं मिली उनका व्यवसाय ३-४ करोड़ ही रहा। इस समुह के प्रमुख नारायण मूर्ति को घर के लिये कर्ज मिलना भी दुष्कर हो गया था फिर भी प्रयास नहीं छोड़े। उन्हीं की भांति कम्प्यटर क्षेत्र में प्रवेश करने वाले अन्य लोग भी प्रयासरत थे। सन् १९९० के बाद इंफोसिस का व्यवसाय १०० करोड़ रू. का हो गया। २०१० में वह २० हजार करोड़ रू. से अधिक का हो गया। इंफोसिस के उदाहरण से हम सीख सकते हैं। सरकारी उपक्रमों की प्रतीक्षा न करते हुए कल्पनाशीलता के साथ नवीन क्षेत्रों में यदि प्रयत्नों की पराकाष्ठा करें तथा सहन शक्ति दिखाएँ तो अकाश को मुठ्ठि में पकड़ा जा सकता है।

इसके लिए एकत्र होकर सामूहिक रूप से प्रयास करना महत्वपूर्ण है। नारायण मूर्ति यदि अकेले होते तो शायद हमने आज उनका अथवा इंफोसिस कम्पनी का नाम भी नहीं सुना होता। हताश होकर बैठ जाने के बजाय यदि युवक ८-१० लोगों का समूह बनाकर सौरशक्ति, पवनशक्ति, जलशक्ति, जीव शास्त्र में शोध कार्य, अनाज पर प्रक्रिया, नवीन औषधियों का निर्माण आदि विविध क्षेत्रों में प्रवेश का साहस करेंगे तो निश्चय ही उन्हें लाभ मिलेगा। अन्ना हजारे हो अथवा पाँडुरंग शास्त्री अठावले ये लोगों की विचारधारा में बदलाव लाकर आर्थिक समृद्धि लाएँ। चीन, ब्राजिल, इजरायल मलेशिया, सिंगापुर, जापान, में आए परिवर्तन भी वैचारिक परिवर्तन के कारण ही हुए हैं।

युवाओं की शक्ति को सौर ऊर्जा की दिशा में मोड़ना होगा। भारत को सौर ऊर्जा की ओर वर्तमान समय में ध्यान देना होगा। अभी भी दुनियाँ सस्ती सौर ऊर्जा बनाने में सफल नहीं हुई है।

विशेषज्ञों का मत है कि सौर ऊर्जा के निर्माण के लिए पर्याप्त सूर्य प्रकाश चाहिए, वह भारत में है। महाराष्ट्र जैसे प्रगतिशील राज्य के लिए शोध और प्रयोग द्वारा सस्ती सौर ऊर्जा का निर्माण आसानी से किया जा सकता है। विदेशी वैज्ञानिक अभी भी सस्ती सौर ऊर्जा बनाने में सफल नहीं हुए हैं। कुछ विशेषज्ञों का मत है कि महाराष्ट्र में सौर ऊर्जा निर्माण के लिए पर्याप्त सूर्य प्रकाश नहीं है केवल राजस्थान के मरूस्थल में ही यह सम्भव हो सकता है। अनेक विशेषज्ञ बाधायें ढूंढने में माहिर होते हैं। अगर नार्वे जैसा देश जिसमें ६ माह तक सूर्य नहीं होता है और जिन ६ माह में सूर्य होता है उसमें भी कुछ दिन आकाश साफ नहीं रहता है। उसके बावजुद भी नार्वे सौर ऊर्जा के क्षेत्र में दुनियाँ में सबसे आगे है।

आज हमारे नये रक्त की शक्ति भाषावाद, प्रान्तवाद, भावनात्मक मुद्दे एवं मराठी, बिहारी, हिन्दू, मुसलमान, तेलग, तेलंगाना, भारत बन्द, जेल भरो, आन्दोलन, धरना, तोड़-फोड़, आगजनी, संसद नहीं चलने देना, घेराव, हड़ताल, मारकाट आदि जैसे विवाद में समय गवां रहे हैं। इसमें देश का कितना नुकसान होता है। ऐसे में देश कैसे आगे बढ़ेगा होना तो यह चाहिए अच्छे कार्य में विपक्ष पूर्ण समर्थन राष्ट्रहित में करे लेकिन विपक्ष की मानसिकता विरोध करने की राष्ट्रहित में नहीं होकर वोटहित में होती है।

यह मानसिकता बदलना होगी युवाशक्ति को कार्य चाहिए सही दिशा में नहीं तो गलत दिशा में ही सही कार्य होगा। कार्य करेंगे। भले ही उस कार्य से देश कितना ही पीछे जायें, युवा चुपचाप नहीं बैठेगा। अमिताभ के जन्मदिन, नेताओं के लिये बड़े-बड़े शुभ कामनाओं के होर्डिंग चुनावी कार्यक्रम, क्रिकेट की स्पर्धाएँ विदेशी लीडर्स नेताओं के फोटो के साथ अपने फोटो ये हमारी दृष्टि में महत्वपूर्ण विषय बन गये हैं।

किसी भारत वंशी वैज्ञानिक को कोई सफलता मिलती है तो उसके साथ हमारा रिश्ता पहचान है, यह दूसरों को बताकर अपनी शेखी बघारते हैं, यह सब बन्द होना चाहिए। दुनियाँ बहुत तेजी से आगे जा रही है। गति के उस स्तर को हमें प्राप्त करना है तो उसके लिए हमें प्रयत्नों की पराकाष्ठा करनी पड़ेगी मगर उसके लिए कौन से विषयों को प्रधानता देना चाहिए यह भी हमें तय करना आना चाहिए। नवीन अर्थ व्यवस्था में उपयोगी एक नेनो प्रोद्योगिकी, नेनो का अर्थ नेनो कार नहीं, नेनो का

thearyasamaj.org

अर्थ किसी धातु या पदार्थ को अत्यन्त सूक्ष्म रूप में परिवर्तित करने के लिए उसके अणु-रेणु की नवीन संरचना करने की प्रक्रिया है।

चीन में एक उद्योगपति ने नेनो प्रोद्योगिकी से सीमेन्ट तैयार की है। उस सीमेन्ट की कीमत सामान्य सीमेन्ट की तुलना में केवल ५ प्रतिशत ही है, याने ९५ प्रतिशत कम मल्य में है। जबकि उसकी गुणवत्ता वर्तमान सीमेन्ट से बहुत बढ़िया है।

भारत में भी नेनौ प्रोद्योगिकी के प्रयोग से सस्ती से सस्ती वस्तुओं का निर्माण किया जा सकता है। कपड़े, भवन निर्माण सामग्री तथा सौर ऊर्जा के लिए आवश्यक तांबे के पेनल का निर्माण ऐसे अनेक वस्तुओं का कम मूल्य पर निर्माण कर सकते हैं।

स्वीट्जर लेन्ड में सौलर इंपल्स नामक एक कम्पनी ने सौर शक्ति से चलने वाला विमान तैयार किया है। वह सफल है किन्तु उसकी गति बहुत धीमी है ३० वर्षों में सौर ऊर्जा से चलने वाले विमान का भी उपयोग दुनियाँ करने लगेगी।●

समाज-सुधार के अवरोधक

- पृथ्वी वल्लभदेव सोलंकी
२५, सतीमार्ग, गोंदाचौकी, उज्जैन (म.प्र.)
चलभाष-०९८२६५९२९७४

समाज को प्रगति के मार्ग पर अग्रसर करने का काम सच्चे समाजसेवी ही करते हैं। उन्हें इस काम को कार्यरूप में परिणित करने के लिए कितनी कठिनाइयों एवं संक्रमण का सामना करना पड़ता है। इस बात का अनुभव वे ही कर पाते हैं। समाजसेवी की समाज के प्रति श्रद्धा और निष्ठा कितनी है, इस बात का परिक्षण उसका आदर्शों के निर्वाह कितनी कठिनाइयों के सहन करने से किया जाता है। कहा जाता है कि सोने को जितनी बार आग में तपाकर उसे एरन पर रखकर उस पर घन से जितनी बार प्रहार किया जाता है, सोना उतना ही निखर और शुद्ध उज्जवल हो जाता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि आदर्शों के लिए बलिदान देने पर ही सच्चे समाजसेवी को इस संसार में प्रमाणिकता से प्रसिद्धि मिल पाती है।

भारतीय संस्कृति में नारी को पूजनीय माना जाता है। वेदों में **''मातृ देवो भव''** की भावना के साथ नारी को पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त थे, परन्तु महाभारत युद्ध के पश्चात् मध्यकाल में हमारे समाज में अन्धविश्वास, पाखंण्डवाद की पराकाष्ठा के परिणाम स्वरूप सतीप्रथा का उदय हुआ। पति की मृत्यु के पश्चात् उसकी पत्नी को भी बलात् पति की लाश के साथ चिता में झोंककर जीवित ही जला दिया जाता था और लोग कहते थे कि वह पति की लाश के साथ सती हो गई।

बंगाल समाज सुधारक श्री राजाराम मोहनराय ने सती प्रथा की इस निन्दनीय कुप्रथा का विरोध करने का दृढ़ निश्चय किया। उन्होंने विचार किया कि पुरुष प्रधान इस समाज में एक अबला के पति की मृत्यु होने पर उस अबला को पति की चिता में बलात्, उसकी इच्छा के विरूद्ध जिन्दा जला देना कितना घृणित व निन्दनीय दुष्कर्म है। उन्होंने इस कुरीति का जमकर विरोध किया। मगर समाज में फैली अनपढ़, अधकचरे, अपरिपक्व, अन्धविश्वासी, पाखण्डी व रूढ़िवादी जनमानस ने राजाराम मोहनराय का जमकर विरोध किया। समाज सुधारक राजाराम मोहनराय उनके विरोध करने पर भी किंचित भी विचलित नहीं हुए। तत्कालीन भारत में ब्रिटिश शासन ने समाजसुधारक श्री राजाराम मोहनराय के इस समाज सुधार अभियान का समर्थन कर इस कुप्रथा को समाज से मिटाने के लिए सतीप्रथा को कानूनन दण्डनीय अपराध घोषित कर दिया। स्वयं श्री राजाराम मोहनराय ने समाज में सामाजिक जागृति फैलाकर इस सतीप्रथा का अन्त कर दिया।

वैदिक साहित्य में मानव जीवन के चार उद्देश्य बतलाए गए हैं-धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। मगर वर्तमान में हमने पाश्चात्य संस्कृति एवं सभ्यता से प्रभावित होकर हमने उनकी संस्कृति की अच्छी बातों को छोड़कर उनके समाज की बुराइयों को ग्रहण करना ही श्रेयस्कर समझा। आज हमारा समाज न तो भारतीय संस्कृति और सभ्यता का पोषक रहा न पाश्चात्य संस्कृति का।

जिस प्रकार दिन के प्रकाश को संध्याकाल से अन्धकार रूपी दैत्य धीरे-धीरे फैलकर सम्पूर्ण सृष्टि को अमावस्यारूपी गहन अंधकार में लपेटकर अपने आगोश में ले लेता है, तब हमारी आँखें इस अंधकार में देखने की क्षमता खो देती है। उसी प्रकार हमारे समाज में फैली कुप्रथाओं की जड़ें हमारे समाज में गहरी पैठकर चुकी हैं। वे परम्पराएँ, रीति-रिवाज जिनका परिपालन करने के लिए आज हमारा समाज हमें बाध्य कर रहा है। ऐसी कुप्रथाएँ, अन्धविश्वासी परम्पराओं को समाज से बहिष्कृत करने के लिए हमारे समाज के समाजसेवी एवं नवयुवा पीढ़ी को इस पुनीत कार्य के लिए आगे बढ़कर कदम से कदम मिलाकर चलना होगा।

जब-जब समाज सेवा के लिए हमारे समाज में समाजसेवी समाज की बुराइयों को समाज से दूर करने के लिए संकल्प लेकर कार्यरत होते हैं, तब-तब उनके मार्ग को अवरूद्ध करने के लिए अन्धविश्वासी, कुप्रथा समर्थक पाखण्डवादी, रूढ़िवादी परम्पराओं के पोषक उनके मार्ग को अवरूद्ध करने के लिए तीव्रगति से गतिशील हो जाते हैं। जिस प्रकार पतंगा दीपक को बुझाने के लिए स्वयं जलकर मर जाता है, चिटियाँ पंख उगाकर उड़ने लगती हैं, कुत्ता पागल होकर जनमानस को काटने लगता है और हाथी पागल होकर पहाड़ों से सिर टकराकर अपने प्राण त्याग देता है।

हमारे समाज में फैली इन बुराइयों का अन्त करने के लिए महान दार्शनिक सुकरात को जहर का प्याला पीना पड़ा, वहीं स्वामी दयानन्द सरस्वती को पाखंडी, विधर्मी, अंध विश्वासी जन ने १४ बार गरल विषपान कराया तो भी उन्होंने समाज हित का मार्ग न छोड़ते हुए अपना जीवन समाज की भलाई के लिए बलिदान कर दिया।

सच्चा समाजसेवी समाज के लिए निरन्तर प्रगति एवं कुप्रथाओं और रूढ़िवादी परम्पराओं को समाज से बहिष्कृत करने के लिए संकल्पित होता है। वे आजीवन समाज के हित के लिए कार्य करते रहते हैं। वे अपना सम्पूर्ण जीवन समाज को अर्पित कर देते हैं। ऐसे समाजसेवी जन का बलिदान समाज के विकास के मार्ग को प्रशस्त करता है। ऐसे समाजसेवी इस मातृभूमि पर हमेशा उत्पन्न होते रहेंगे। जब तक कलुषित कुप्रथाओं और परम्पराओं की दासता से हमारा समाज मुक्त न हो जाता। ●

thearyasamaj.org

सीरिया में आर्य वशंनों को मिटाना चाहता है आई.एस.आई.एस

- चंद्रशेखर लोखण्डे
सीताराम नगर, लातूर (महा.)
चलभाष-९९२२२५५५९७

महाभारत के युद्ध से पूर्व भारत के साथ-साथ सुदूर मध्यपूर्व एशिया के भूभाग में आर्यों का राज्य और उनकी संस्कृति फैली हुई थी। इतिहास शोधकर्ता अब इसे स्वीकार करने लगे हैं। अफगानिस्तान सन् १८१८ तक ब्रिटिश भारत का ही हिस्सा था। महाभारत के युद्ध में आर्यावर्त के पड़ौसी देश, अफगानिस्तान (कंधार) चीन आदि देशों के राजाओं ने भाग लिया था। यह विदित ही है। आर्यावर्त का यह विघटन ऐसे हुआ जैसे द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद कनाडा, भारत, आस्ट्रेलिया, पाकिस्तान, ब्रह्मदेश, लंका, नेपाल, इण्डोनेशिया, सीरिया, तुर्की, मिश्र आदि देश टूटकर स्वतन्त्र देश बन गये। ईराक और सीरिया तक वैदिक संस्कृति के अवशेष आज भी देखे जा सकते हैं। "**यजदी**" नामक जमात जो हिन्दू संस्कृति से प्रभावित जमात थी, उसकी सीरिया के कुछ हिस्से पर सत्ता थी। "**यजीद**" जो "**यजदी**" जमात का प्रमुख था उसने मक्का मदीना पर हमला किया था। उसके पिता का नाम "**मुआविया**" और दादा का नाम "**अबुसुफियान**" था जिसने इस्लाम के संस्थापक हजरत मुहम्मद के साथ तीन बड़े युद्ध किये थे वह उसका पोता था। "**यजीद**" की दादी का नाम "**हिन्दा**" था। सन् ६८० में इमाम हुसैन और उनके भाई अब्बास व बेटों का यजीद ने कत्ल किया इन सभी ऐतिहासिक तथ्यों एवं घटनाओं से पता चलता है कि "**यजदी**" जमात और ह. मुहम्मद पैगंबर की इस्लाम की स्थापना से ही खानदानी दुश्मनी चली आ रही थी। इसी संघर्ष के साथ "**यजदी**" ने अपना गैर इस्लामी अस्तित्व बनाये रखा। मध्य पूर्व के ईराक, सीरिया, तुर्कीस्तान तक वैदिक धर्मी संस्कृति और सभ्यता गहराई तक पहुँच चुकी थी।

"**यजदी**" शब्द यज्ञ के यजमान पद से सम्बन्ध रखता है। यज्ञ को सम्पादित करने वाली जमात का नाम ही "**यजदी**" पड़ गया, यह सुनिश्चित है। महाभारत युद्ध को पांच हजार वर्ष हो गये। पौराणिक संस्कृति का प्रसार महाभारत के दो ढ़ाई हजार वर्ष के बाद पूरे मध्य पूर्व एशिया में हो चुका था। वैदिक प्राकृतिक देवताओं का प्रतिमाकरण अपनी चरम सीमा पर था। मक्का मदिना में मूर्तिपूजा का प्रचलन तीव्रता से हो चुका था। आगे चलकर इसी मूर्तिपूजा का विरोध हजरत मुहम्मद पैगम्बर ने मक्का मदिना आदि क्षेत्रों में किया।

चूंकि "**यजदी जमात**" के लोग हिन्दू देवी-देवताओं की पूजा और यज्ञ का अनुष्ठान करते थे इस कारण वे इस्लाम की विचारधारा के खिलाफ थे, इसी वजह से ह. मुहम्मद के अनुयायियों और "**यजदी जमात**" के लोगों में पुश्तैनी दुश्मनी चली आ रही है। सीरिया के कुछ भागों में आज भी यज्ञ कुण्ड के अवशेष मिलते हैं। "**यजदी**" जमात में यज्ञ के साथ-साथ प्राकृतिक देवताओं जैसे-सूर्य, चन्द्र, शिव, विष्णु आदि की पूजा का विधान था और आज भी है। "**यजदी**" समाज में यज्ञ की परम्परा वैदिक काल से चली आ रही है। उत्तर इराक के "**निवेव**" जिसका शुद्ध नाम "**तिविवेह**" है (मेरे विचार से "**त्रिविवेद**" वैदिक नाम हो सकता है जैसे तिब्बल का नाम "**त्रिविष्टप**" था उसी से मिलता जुलता यह नाम होगा) सीरिया के इसी भूभाग में "**सिंजर**" घाटी है यहीं "**यजदी**" जमात के लोग आज भी बसते हैं।

अबू बकर अल् बगदादी और उसके जिहादी धर्मान्धों का कहना है कि ये लोग अग्नि और मूर्ति की पूजा करते हैं, अतः इस्लाम इनकी हत्या करने की इजाजत देता है और यह पवित्र कर्तव्य हम निभा रहे हैं। इस्लाम के संस्थापक ह. मुहम्मद पैगम्बर और उनके अनुयायियों के साथ "**यजदी जमात**" के लोगों की पुश्तैनी दुश्मनी की वजह से अबू बकर अलबगदादी इस जमात को नष्ट करने पर तुला है। वह इमाम हुसैन की शहादत का बदला इस जमात से लेना चाहता है। "**यजदी जमात**" के मन्दिरों पर हिन्दू संस्कृति के प्रतीकों का अस्तित्व है। मन्दिर की दीवारों पर दीप मालाओं की आकृतियाँ, मयूर तथा गरूड़ पक्षियों के तराशे गये पत्थर आज भी मिलते हैं। सीरिया में "**ललिश सिव्यत**" नामक "**यजदी**" लोगों का मन्दिर हूबहू हिन्दू मन्दिर की प्रतिकृति है। आज भी उस मन्दिर पर हिन्दू ध्वज फहराता हुआ दिखाई देता है। इस जमात की महिलाएँ साड़ी पहनती हैं। वे बुरखा नहीं ओढ़ती। गरूड़ और मयूर सीरिया के राष्ट्रीय पक्षी न होकर भी इनके प्रतीक मन्दिरों पर दिखाई देते हैं। बगदादी ने जबसे इराक और सीरिया के सीमावर्ती भाग को मिला कर इस्लामिक स्टेट की घोषणा की है। वह उसका खलीफा बन बैठा है तभी से उसने यजिदियों के खून की नदियाँ बहानी शुरू कर दी है।

सीरिया और इराक के सीमावर्ती भागों में शिया और सुन्नी एक-दूसरे का कत्ले आम कर रहे हैं, लेकिन यह जमात किसी का पक्ष न लेते हुए भी इसका कत्ले आम किया जा रहा है। यह न मुस्लिम न यहूदी जमात से ताल्लुक रखती है, न शिया-सुन्नी से अपितु इसका सम्बन्ध केवल हिन्दू संस्कृति से होने के कारण तथा इस्लाम से दूरी होने की वजह से आई.एस.आई.एस. इसका नामो निशान मिटाने पर तुली हुई है अथवा जोर जबरदस्ती से मुस्लिम बनाना चाहती है। अबूबकर अल् बगदादी का मानना है कि इनके रीतिरिवाज हिन्दुस्तानियों से मिलते-जुलते हैं, अतः ये काफिर हैं और काफिरों को जिन्दा रहने का अधिकार नहीं है, या तो इन्हें मुसलमान बनना होगा या मरना होगा। इस क्षेत्र में यजदियों की सात लाख जनसंख्या है। अबू बकर अल् बगदादी इनको नष्ट कर इसे इस्लामिक स्टेट बनाना चाहता है।

शेष आगामी अंक में....

thearyasamaj.org

एक अविस्मरणीय वैदिक यात्रा

-ओम प्रकाश आर्य
आर्य समाज रावतभाटा, वाया कोटा (राज.)
चलभाष-९४६२३१३७९७

१९ अक्टूबर २०१४ का दिन। रावतभाटा से इन्दौर के लिए बस से रवाना हुआ। साथ में लस्सानी दोयम अजमेर से पधारे श्री मोहनलाल जी थे। सुबह ०६:३० बजे कोटा से चलकर ट्रेन ०२:३० बजे अपराह्न इन्दौर पहुँची। उस समय मौसम बादलों से मधुर-मधुर वर्षा के माध्यम से हुदहुद तूफान का प्रभाव दिखा रहा था। चलभाष से श्री सुखदेव शर्मा "**वैदिक संसार**" के प्रकाशक को सूचित किया। वे मोटर साइकिल से स्टेशन पर आ गए। हम दोनों को ऑटो में बैठाकर आगे-आगे स्वयं और पीछे-पीछे ऑटो वाले से गंतव्य तक ले जाने का आदेश दिए। थोड़ी देर में गंतव्य तक पहुँचा दिया।

आर्यों का व्यवहार बड़ा आत्मीय होता है। माननीय श्री सुखदेव शर्मा ने स्वयं हाथ में बैग लेकर जो आतिथ्य का परिचय दिया, वह वास्तव में "**अतिथि देवोभव**" का जीता-जागता उदाहरण था। अति सामान्य घर में प्रेम की जो सरिता प्रवाहित की, वह बड़े-बड़े महलों में भी नसीब नहीं हो सकती। श्री सुखदेव जी वास्तव में सुख के साक्षात् देव हैं। नाश्ता-पानी करने के पश्चात् उन्होंने अपना कार्यालय दिखाया जहाँ "**वैदिक संसार**" पत्रिका का संपादन होता है। पूरा परिवार इस कार्य में जुटा रहता है। पूत्री भाग्यश्री, पुत्र-नितिन और गजेश इस श्रमसाध्य कार्य में पिता का हाथ बँटाते हैं। इन बच्चों में अनोखी विनम्रता देखने को मिली। हँसमुख स्वभाव और वैदिक मिशन को आगे बढ़ाने की ललक।

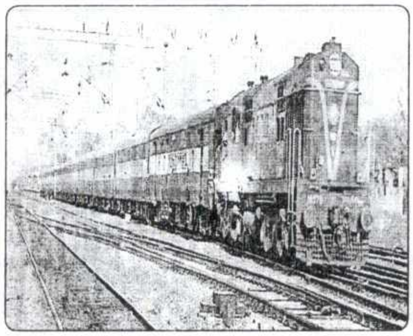

सायंकाल बातचीत के दौरान श्री शर्मा ने कहा कि यहाँ से २० किलोमीटर की दूरी पर एक गाँव में वैदिक चर्चा का कार्यक्रम है। हम आप दोनों को वहाँ ले चलेंगे और रात्रि विश्राम वहीं करेंगे। हम दोनों को साथ लेकर वे मिनी बस से धरमपुरी गाँव की ओर प्रस्थान किया। लगभग एक घंटे में वहाँ पहुँचे, क्योंकि प्राइवेट बस सवारियों को चढ़ाती-उतारती मंद गति से जा रही थी। रात्रि ८ बजे हम वहाँ पहुँचे। राष्ट्रीय राजमार्ग पर बसा गाँव अपनी शांति गरिमा से ग्राम्यभाव को मंडित कर रहा था। बस से उतरकर हमें ले गए मोहनलाल के घर। एक मोहनलाल अपने साथ थे और दूसरे मोहनलाल धरमपुरी गाँव के। दोनों मोहनलाल का मिलन किसी पूर्व जन्म के सुकर्म का फल कहा जा सकता है।

लगभग डेढ़ घंटे तक वैदिक चर्चा हुई। यद्यपि उसमें घर-परिवार के लोग सम्मिलित थे किन्तु आत्मीयता का जो भाव वहाँ देखने को मिला, वह बहुत कम देखने को मिलता है। आत्मा, परमात्मा, धर्म, पंचमहायज्ञ, संस्कार, यज्ञ जैसे विषय पर सामान्य चर्चा हुई। यद्यपि गाँव वालों के लिए यह चर्चा कठिन थी, किन्तु श्री सुखदेव शर्मा का वैदिक ज्ञान के प्रचार की लगन और मेहनत कुछ अलग ही बयान कर रही थी। उनमें इतनी श्रमशीलता, मेहनत कथा और लगन, निष्ठा देखने को मिली जो बहुत कम लोगों में मिलती है। चौवन साल की उम्र में ऐसी स्फूर्ति कि थकने का नाम नहीं। बैठने का काम नहीं। आराम का विराम नहीं। तभी तो "**वैदिक संसार**" पत्रिका का प्रकाशन प्रतिमास गुणवत्ता के साथ सजधज कर होता है जो विद्वानों के विचारों का प्रसारण करती है।

प्रात: काल हवन का कार्यक्रम रखा गया था। यह कार्यक्रम श्रीमती नर्मदा बाई की स्मृति में रखा गया था। श्री मोहनलाल ने श्री मोहनलाल के यजमानत्व में यज्ञ सम्पन्न करवाया और पंचमहायज्ञों पर प्रकाश डाला। पथिक भजन भी गाए गए। द्वितीय मोहनलाल का घर वेद विद्या का मंदिर बना हुआ है। वहाँ आपको देखने को मिलेगा-चारों वेद, षड्दर्शन, एकादशोपनिषद्, सत्यार्थ प्रकाश, महात्मा आनन्द स्वामी की पुस्तकें, सत्संग गुटका, अनेकश: वैदिक साहित्य। वहाँ बैठिए, पढ़िए और वैदिक चर्चा कीजिए। गाँव के वातावरण में वेद का सन्देश पहुँचाना अति कठिन काम है, किन्तु धरमपुरी के मोहनलाल जी कर रहे हैं।

श्री सुखदेव शर्मा ने कहा कि दिनांक २८ व २९ अक्टूबर को विशेष कार्यक्रम रखा गया है जिसमें स्वामी शांतानन्द जी जैसे कई विद्वान् पधारेंगे। आपको लस्सानी दोयम के मोहनलाल मिले हैं और हमें धरमपुरी के मोहनलाल मिले हैं दोनों मोहन वैदिक धर्म के लाल हैं। इनका योगदान आर्य समाज में अविस्मरणीय रहेगा। वहाँ से लगभग ९ बजे चलते-चलते द्वितीय मोहनलाल ने आतिथ्य में जो आत्मीयता दिखाई वह आजीवन विस्मृत नहीं हो सकती। हमारे मोहनलाल ने कहा कि हमने तो ऐसा आतिथ्य-सत्कार देखा ही नहीं।

कुछ महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा के पश्चात् श्री शर्मा जी ने लगभग चार बजे श्री मोहनलाल जी को बस स्टंड पर बस में बैठाया। पानी की बोतल और रास्ते का अल्पाहार भी प्रदान किया। सांयकाल उन्होंने मुझे इन्दौर महानगर के आर्यसमाज मल्हारगंज, आर्यसमाज संयोगिता गंज, श्रद्धानन्द बाल आश्रम तथा आर्यसमाज दयानन्द गंज का दर्शन कराया। इन्हें देखकर पूर्व आर्यजनों की तपस्या और त्याग का स्मरण होना स्वाभाविक है। कितने दीवाने रहे होंगे वे ऋषिभक्त जिन्होंने इतने ऊँचे और भव्य भवन निर्माण कर महर्षि दयानन्द के मिशन को आगे बढ़ाने में सहभागी बने। हमें उन महानुभावों से प्रेरणा लेनी चाहिए। आर्य समाज मल्हार गंज का पुस्तक विक्रय केन्द्र बड़ा आकर्षक लगा। वहाँ के पुरोहित जी का व्यवहार प्रशंसनीय है।

श्री सुखदेव शर्मा "**वैदिक संसार**" पत्रिका के माध्यम से वैदिक ज्ञान प्रचार-प्रसार का स्तुत्य कार्य कर रहे हैं। इतने मेहनतकश और लगनशील व्यक्ति बहुत कम मिलेंगे। "**आर्य समाज : एक परिचय**" पुस्तिका और "आर्यसमाज के शिक्षण सामग्री के रूप में छह प्रकार कैलेंडर-फ्लैक्स के बाबत वहाँ गया था। उन्होंने इस गुरुतर भार को सहर्ष स्वीकार कर लिया। हो सकता है शीघ्र ही ये सामग्रियाँ उनके वाहन के माध्यम से आप तक पहुँचेगी। डाक से भी प्राप्त हो सकेगी।

प्रात: काल चार बजे उठा। शौचादि से निवृत्त होकर प्राणायाम किया। श्री शर्मा जी ठीक ०५:१५ बजे घर से स्टेशन के लिए चल पड़े। ट्रेन ठीक ०६:०० बजे चल पड़ी। इस दौरान वे स्टेशन पर ही खड़े रहे। इतने अल्प समय में उन्होंने रास्ते का भोजन भी बनवाकर दे दिया। कितनी आत्मीयता है उनमें। उनके मधुर व्यवहार ने रोम-रोम को आह्लादित कर दिया। आर्य व्यवहार अपने में एक उदाहरण होता है जो व्यक्ति को प्रभावित कर देता है। मैं श्री शर्मा जी को बहुश: धन्यवाद देता हूँ और साथ ही आर्यों से निवेदन करता हूँ कि "**वैदिक संसार**" पत्रिका के प्रचार-प्रसार में अपना महत्वपूर्ण योगदान दें जिससे उनका परिश्रम सफल हो। वार्षिक, त्रिवार्षिक, पंचवार्षिक, आजीवन सदस्य बनाने में सहयोग करें। इससे उनका उत्साह कई गुना वृद्धि

thearyasamaj.org

को प्राप्त करेगा। वेद भगवान आदेश देते हैं-

कस्त्वा युनक्ति स त्वा युनक्ति कस्मै त्वा युनक्ति तस्मै त्वा युनक्ति। कर्मणे वां वेषाय वाम्।। यजु. १/६

अर्थात् ''**कः** = कौन, **त्वा** = तुमको अच्छी-अच्छी क्रियाओं के सेवन करने के लिए, **युनक्ति** = आज्ञा देता है, **सः**= सो जगदीश्वर, **त्वा** = तुमको विद्या आदि शुभ गुणों को प्रकट करने के लिए विद्वान् वा विद्यार्थी होने को, **युनक्ति** = आज्ञा देता है। **कस्मै** = वह किस-किस प्रयोजन के लिए, **त्वा** = मुझ और तुझ को, **युनक्ति** = युक्त करता है। **तस्मै** = पूर्वोक्त सत्यव्रत के आचरण रूप यज्ञ के लिए **त्वा** =धर्म के प्रचार करने में उद्योगी को, **युनक्ति** = आज्ञा देता है, **सः** = वही ईश्वर, **कर्मणे** = श्रेष्ठ कर्म करने के लिए, **वाम्** = कर्म करने और कराने वालों को नियुक्त करता है। **वेषाय** = शुभगुण और विद्याओं में व्याप्ति के लिए, **वाम्** = विद्या पढ़ने और पढ़ाने वाले तुम लोगों को उपदेश करता है।''

परमपिता परमात्मा श्रेष्ठ कर्म करने का उपदेश देता है और कराने का भी उपदेश देता है। वेदज्ञान का प्रचार-प्रसार सर्वश्रेष्ठ कर्म है। वैदिक पत्र-पत्रिकाएँ इस दिशा में बड़ी उपयोगी सिद्ध होती हैं क्योंकि उनमें अनेकशः विद्वानों के सरल भाषा में लेख प्रकाशित होते हैं। स्वयं पढ़िये, औरों को पढ़ाइए। यह पढ़ना और पढ़ाना ईश्वरीय आज्ञा का पालन है। यही ईश्वर की भक्ति है। वेदज्ञान प्रसार में आपका न्यून भी सहयोग बहुत बड़ा योगदान है। जिस घर, गाँव में वैदिक पत्रिका जाती है वह घर, गाँव पवित्र हो जाता है क्योंकि वेदज्ञान से विचारों का परिष्करण होता है।

मेरा सबसे निवेदन है कुछ समय पठन-पाठन में अवश्य लगाइए। आज स्वाध्याय बहुत कम हो गया है। बड़े-बड़े पुस्तकालयों की अलमारियाँ खुलती ही नहीं है। कारण स्पष्ट है स्वाध्याय की कमी। इस दिशा में **''वैदिक संसार''** का एक सराहनीय योगदान है। वह लोगों को स्वाध्याय की ओर संप्रेरित करता है। आप भी इसमें सहभागी बनिए। ●

आर्यजगत् के हित चिन्तक भामाशाह एवं पुण्यात्माओं के नाम पत्र

दिनांक - ०४.११.२०१४

सेवायाम :-

१. आर्य शिरोमणि महादानी महाशय (महात्मा) **श्रीयुत् धर्मपाल जी आर्य,** चेयरमेन-एम.डी.एच. मसाले वाले।

२. **योग ऋषि स्वामी रामदेव जी** महाराज पंतजली योग पीठ हरिद्वार (उत्तरांचल) पिन-२४९४०४।

३. **पू. श्री स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती,** श्रीमद्दयानन्द वेद विद्यालय, ११९ गौतम नगर नई दिल्ली-४९।

द्वारा : श्री सुखदेव जी शर्मा, स्वामी - प्रकाशक एवं मुद्रक **''वैदिक संसार''** (मासिक), १२/३ संविद नगर, इन्दौर-१८ (म.प्र.)।

विषयः- उज्जैन (म.प्र.) में अविलम्ब आचार्य कुलम् या गुरुकुल या वेदाश्रम स्थापित करने हेतु अनुरोध।

महोदय सादर नमस्ते!

''**वैदिक संसार**'' पत्रिका अक्टूबर २०१४ के पृष्ठ ३७-३८ पर महाशय- ''श्री धर्मपाल जी आर्य एम.डी.एच. मसाले वाले द्वारा वेदाश्रम, महायज्ञ केरल में, होगा द्रुतगति से वैदिक धर्म का शंखनाद पढ़ा, आर्य शिरोमणि श्री धर्मपाल ने दो सेकेण्ड में दो करोड़ का दान भी दिया। इन कार्यों की प्रशंसा करते हुए, महाशय धर्मपाल जी को **''महात्मा''** पद से विशाल मंच पर- स्वामी प्रणवांनन्द जी दिल्ली ने अलंकृत किया।

''स्वामी प्रणवानन्द जी मेरे गुरु भाई हैं-हमने एक साथ मंझावली गुरुकुल में संन्यास लिया था।

अतः मैं आप सम्पादक जी **''वैदिक संसार''** के माध्यम से उपरोक्त क्र. १ से ३ तक आप तीनों पूज्य आर्य शिरोमणियों से प्रार्थना करता हूँ कि म.प्र. के उज्जैन में अविलम्ब **''आचार्यकुलम्''** या **गुरुकुल या वेदाश्रम** स्थापित करने की महती कृपा करेंगे तो महती कृपा होगी।

इसके लिये निम्नांकित स्थान उपयुक्त हैं। -पढ़िये -सम्पर्क करियेः-

१. स्व. स्वामी ओमानन्द जी महाराज भारतीय परम्परा और मनीषा के एक त्यागी तपस्वी विद्वान् संन्यासी थे। अपने पिता के एक मात्र उत्तराधिकारी के रूप में आपको नरेला (दिल्ली) स्थित ३०० बीघे से अधिक मूल्यवान कृषि भूमि तथा प्रभूत सम्पत्ति प्राप्त हुई थी। आजीवन ब्रह्मचारी रह कर- वैदिक धर्म का प्रचार और मानव कल्याण हेतु आपने नरेला (दिल्ली) में **''आर्ष कन्या गुरुकुल महाविद्यालय''** की स्थापना अपनी पैत्रिक भूमि में की जहाँ से अब तक कई हजार कन्याएँ वेद-शास्त्रों की शिक्षा ग्रहण करके सुयोग्य गृहस्थी बनी अथवा मानव कल्याण कार्यों में संलग्न हैं।

''इन प्रवृत्तियों को सम्मान देते हुए भारत सरकार ने आपको राष्ट्रीय संस्कृत पंडित के राष्ट्रपति सम्मान से समलंकृत किया था। आपने ९३ वर्ष आयु के बाद शरीर त्याग किया।''

इन स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने नरेला (दिल्ली) की, जीवन में की गई इच्छा के अनुसार नरेला (दिल्ली) के ट्रस्टियों द्वारा **''स्वामी ओमानन्द सरस्वती-आर्ष गुरुकुल''** हासामपुरा (उज्जैन) म.प्र. की पुण्य भूमि में दिनांक ५ मई २००८ को प्रातः ब्रह्मबेला में स्थापना की थी-यहाँ १७ बीघा भूमि खरीदी गई थी। परन्तु किन्हीं कारणों से उज्जैन स्थित गुरुकुल बन्द है- और न्यास ट्रस्टी इसे बेचना चाहते हैं। ऐसा यहाँ के संस्था के कर्णधारों से ज्ञात व चर्चा हुई है। अतः मंत्री करणसिंह जी चिकली निवासी के मो. ९५८९९७८८६७ से एवं स्व. अध्यक्ष जी के पुत्र-परिवार के मो. ९८२६४०६४९१ नागदा (उज्जैन) वालों से भी सम्पर्क कीजियेगा।

२. आर्यग्राम विक्रमपुर (मौलाना) जिला-उज्जैन (म.प्र.) बड़नगर रोड़ पर १२ वीं तक का विद्यालय रोड़ से लगा है। यहाँ मौलाना लोग नहीं है, आर्यजन बहुल हैं। दो मंजिल विद्यालय है-बन्द पड़ा है। नल-बिजली, पंखे, शौचालय, मूत्रालय, स्नान घर, लड़के-लड़कियों के अलग-अलग हैं। बड़ा सा मैदान है। भव्य यज्ञशाला है। सभी ट्रस्टी आचार्यकुलम्-गुरुकुलम् के लिये देने को तैयार हैं। नलकुप व मोटर है, हरिद्वार के श्री गणेशानन्द जी हरिद्वार को फोन से सूचना दी थी।

अतः मध्य भारतीय प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान एवं उज्जैन संभाग के प्रभारी श्री लक्ष्मीनारायण जी आर्य, ग्राम विक्रमपुर (मौलाना) जिला-उज्जैन (म.प्र.) से उनके मो. नं. ०९८२७०७८८८० से सम्पर्क कीजियेगा।

प्रत्यक्ष पधार कर दोनों स्थानों को देखना भी उचित होगा। ●

- स्वामी डॉ. ओमानन्द सरस्वती
वेद मंदिर महर्षि दयानन्द संस्थान, चन्दूखेड़ी
जिला-उज्जैन (म.प्र.)
चलभाष : ०९७५४९३२१९१

thearyasamaj.org

मृत्यु पश्चात् होने वाले अवैदिक कृत्यों पर पूर्ण विराम

मृत्यु भोज के स्थान पर हुआ वैदिक सत्संग, आर्य समाज की हुई स्थापना

नास्तिक! यह एक ऐसा शब्द है जिससे भारतीय संस्कृति से सम्बन्ध रखने वाला कोई भी व्यक्ति अपरिचित नहीं है किन्तु वैदिक ज्ञान अभाव में इसका अर्थ संक्षिप्त रह गया है। आज नास्तिक शब्द सामने आते ही प्रत्येक व्यक्ति के मन में विचार कौंधता है ईश्वर को न मानने वाला, यहाँ तक तो ठीक है किन्तु प्रश्न यह उठता है कि जो ईश्वर को ठीक से नहीं जानेगा वह मानेगा कैसे? तथा इस नास्तिक शब्द का यह संक्षिप्त रूप है तो बृहद स्वरूप क्या है? इसके हेतु हमें मनुस्मृति के इस वचन पर ध्यान देना होगा-

नास्तिक्यं वेदनिन्दां च .....४/१६३ मनुस्मृति

अर्थात् वेदनिन्दा करने वाला नास्तिक है। वेद की बातों को न मानना अथवा वेद के दिशा-निर्देशों के विरूद्ध आचरण करना भी तो वेद की निन्दा करने के समान ही है। वेद में ईश्वर के स्वरूप और कार्यों का विशद् वर्णन है अगर व्यक्ति उनको जाने बगैर उससे विरूद्ध ईश्वर की मनमानी धारणा बना ईश्वर को मानता है तो वह भी तो वेद की निन्दा ही कर रहा है। आज तो व्यक्ति ने ईश्वर को अपने ऊपर आश्रीत अपनी मर्जी का मालिक बना लिया है जो कहने में तो मालिक किन्तु प्रत्यक्ष में नौकर दृष्टिगोचर होता है यथा जब चाहा सुला दिया, जब चाहा जैसा चाहा खिला-पिला दिया (कभी छप्पन भोग, कभी मिर्च मसाले वाली तड़का लगी दाल-सब्जी का ही भोग लगा दिया और तो और कभी भांग-धतूरा, शराब और कभी किसी मूक पशु को मारकर खिलाना तो मामुली बात अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिये पड़ोसी के बच्चे को मारकर ही भोग लगा दिया सीर्फ इसलिये की ईश्वर प्रसन्न हो जाएगा), जब चाहा नहला दिया, जब चाहा-जैसा चाहा अपनी मन मर्जी अनुसार कपड़े-गहने पहना दिये, उस सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ प्रभु को अल्पज्ञ-अल्पशक्तिधारी मनुष्य ने अपने में समेट लिया। और तो और आज के मानव ने अपने पृथक-पृथक चलते-फिरते मनुष्यों को ईश्वरीय आस्था के सर्वोच्च केन्द्र में स्थापित कर वेदानुकूल मूल ईश्वर से विमुख हो गया है। ऐसे अंधविश्वास और पाखण्ड के घटाघोप अंधकार में श्री मोहनलाल जी शर्मा जैसे कुछ विरले व्यक्ति ऐसे भी होते हैं जो वेदानुकूल सच्ची आस्तिकता को धारण कर अपना जीवन तो सफल बनाते ही हैं औरों को भी वैदिक ज्ञान अमृत का पान कराने हेतु तन-मन-धन से समर्पित रहते हैं।

इन्दौर महानगर जहाँ पर वर्तमान में सात-आठ आर्य समाजों की उपस्थिति दिखाई देती है। इसी इन्दौर महानगर से मात्र १५ किलोमीटर की दूरी पर उज्जैन रोड़ पर स्थित ग्राम-धरमपुरी एवं इसके आस-पास के ग्राम वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार से शून्य थे।

इस धरमपुरी ग्राम के निवासी श्री मोहनलाल जी शर्मा वैदिक संसार की प्रेरणा से वैदिक धर्म सिद्धान्तों को समर्पित हो गये। आपने दिनांक १७/०८/२०१३ को अपने निज निवास पर वेद विद्या मन्दिर की स्थापना एवं सामूहिक यज्ञोपवित संस्कार का आयोजन आर्य जगत् की प्रखर वक्त्रि सुश्री अंजलि आर्या के मुख्य आतिथ्य एवं उद्भट विद्वान् पं. सूर्यदेव जी शर्मा के ब्रह्मत्व में समारोह पूर्वक कर वैदिक ज्ञान ज्योति को आलोकित कर क्षेत्र को प्रकाशमान करने का बिड़ा उठाया।

आप दैनिक अग्निहोत्री होकर स्वाध्याय शील, धर्मनिष्ठ, समर्पित महानुभाव हैं। मौखिक वार्ता तथा लघु ट्रेक्टों को वितरत कर वैदिक धर्म से जुड़कर मानव जीवन सफल बनाने हेतु प्रेरित करते हैं। साप्ताहिक सत्संग का आयोजन भी वेद विद्या मन्दिर पर करते हैं उपरोक्त समस्त गतिविधियों का संचालन स्वयं के व्यय पर करते हैं।

आपकी माता श्रीमती नर्मदा बाई शर्मा, धर्मपत्नी श्री माना जी शर्मा का दिनांक १३.१०.२०१४ को शतायु अवस्था में निधन हो गया। आपने मृत्यु पश्चात् होने वाले समस्त अवैदिक कार्यों पर परिवारजनों, समाजजनों एवं स्नेहीजनों के विरोध के बावजूद पूर्ण विराम लगाकर वर्तमान की ज्ञात स्थिति में ग्राम धरमपुरी के क्षेत्र में वैदिक विधि अनुसार प्रथम अपनी माता जी का अंतिम संस्कार पं. सूर्यदेव जी शर्मा के दिशा निर्देशानुसार किया। तथा अस्थि संचयन पश्चात् श्मशान भूमि में ही अस्थियों को दबाकर पीपल का पौधा रोप दिया। मृत्यु भोज के स्थान पर दो दिवसीय वैदिक सत्संग का आयोजन किया। माता जी के निधन पश्चात् आयोजन तक बृहद यज्ञ होता रहा।

दिनांक १९-२० को रावतभाटा राज. से पधारे वैदिक धर्म सिद्धातों के प्रचार-प्रसार को समर्पित व्यक्तित्व श्री मोहनलाल जी आर्य के प्रवचन एवं बृहद यज्ञ का आयोजन किया गया। नव सस्येष्टि (दिपावली) पर्व के पश्चात् दिनांक २८-२९ अक्टूबर को मृत्युभोज के स्थान पर भव्य वैदिक सत्संग का आयोजन वेद कथाकार, दर्शन शास्त्रों के मर्मज्ञ स्वामी शान्तानन्द जी सरस्वती गुरुकुल भवानीपुर, जिला-भुज (गुज.) के प्रवचनों तथा पं. कमलकिशोर जी शास्त्री बैरसिया (भोपाल), श्रीमती सरिता आर्या बड़नगर एवं पं. बंशीलाल जी आर्य बरखेड़ा पंथ (मंदसौर) के भजन-उपदेश के द्वारा आयोजित किया गया। २८ अक्टूबर के सायंकालीन सत्र की अध्यक्षता श्री लक्ष्मीनारायण जी आर्य विक्रमनगर (मौलाना) उज्जैन संभाग प्रभारी एवं उपप्रधान मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा भोपाल ने की, जिला-सीकर (राज.) से पधारे श्री नन्दलाल जी जांगिड वरिष्ठ समाज सेवी मुख्य अतिथि के रूप में मंचासिन किये गये। श्री रमेशचन्द्र जी पंवार-इन्दौर, श्री मोहनलाल जी शर्मा 'पत्रकार'-इन्दौर, श्री राजेन्द्र जी यादव प्रधान-आर्य समाज बड़नगर, श्री मनोज जी आर्य-सक्रिय कार्यकर्ता बड़नगर, श्री अशोक जी शर्मा अध्यक्ष-जांगिड ब्राह्मण जिला सभा-धार, श्री नारायण जी लेण्डीवाल पूर्व जिलाध्यक्ष-जांगिड ब्राह्मण जिला सभा हरदा, श्री रूपचन्द जी शर्मा-मंदसौर, श्री रामचन्द्र जी शर्मा-धारसीखेड़ा, श्री भारतेन्द्र जी आर्य-खरसौद कला, श्री नानालाल जी शर्मा-आर्यसमाज देहरी, तथा अन्य दूरस्थ स्थानों से पधारे गणमान्य महानुभाव उपस्थित रहे। मंच संचालन वयोवृद्ध पं. नाथूलाल जी शर्मा-बड़नगर ने किया।

२९ अक्टूबर को प्रात:कालीन सत्र में पं. कमलकिशोर जी शास्त्री के यज्ञ ब्रह्मत्व में दो बृहद आकार की यज्ञवेदी पर परिवार के वरिष्ठजनों ने सपत्नीक यजमान बनकर बृहद यज्ञ किया। उपस्थित समस्त भद्रपुरुषों एवं मातृशक्ति ने भी यज्ञ में आहुतियाँ प्रदान की। सुमधुर भजन-उपदेश तथा स्तुति-प्रार्थना के द्वारा यज्ञ सम्पन्न होने के उपरांत प्रवचन-उपदेश हुए जिसकी अध्यक्षता श्री गोविन्दराम जी आर्य-देपालपुर इन्दौर संभाग प्रभारी एवं उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा भोपाल ने की। श्री नन्दलाल जी मुख्य अतिथि के रूप में मंचासिन हुए। पगड़ी रस्म श्री देवीलाल जी शर्मा (मामाजी) हाटपीपल्या द्वारा साधारण रूप में सम्पन्न की गई। श्री नन्दलाल जी जांगिड ने राजस्थान समाज की ओर से तथा हरियाणा समाज की ओर से जांगिड ब्राह्मण प्रादेशिक सभा हरियाणा के संरक्षक-आसाराम जी शर्मा, अध्यक्ष-श्री महावीर जी जांगिड, सांस्कृतिक मंत्री-श्री देशराज आर्य, उपप्रधान-श्री लक्ष्मीनारायण जी शर्मा, सदस्य-श्री रामफ ल जी शास्त्री, श्री महेन्द्र जी शर्मा ने श्री मोहनलाल जी को साफा पहनाकर उनके द्वारा समाज को दी जा रही सेवाओं को सम्मान प्रदान किया। पं. गोविन्दराम जी आर्य ने मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से ओ३म ध्वज, यज्ञ कुण्ड, हवन सामग्री तथा प्रमाण पत्र श्री मोहनलाल जी को प्रदान कर आर्य समाज धरमपुरी की स्थापना की घोषणा की जिसका उपस्थितों द्वारा करतल ध्वनी से स्वागत किया गया।

स्वामी जी तथा अन्य विद्वतगणों के मुखारविन्द से प्रवाहित वैदिक ज्ञान गंगा का लाभ लगभग २००० नर-नारियों ने प्राप्त किया। इस अवसर पर पितृ ऋण को समर्पित मोहनलाल जी द्वारा प्रकाशित पुस्तकें **'मृत्यु मीमांसा'** एवं **अंतिम संस्कार क्या, क्यों और कैसे?** उपस्थितों को वितरित की गई **'वैदिक संसार'** परिवार द्वारा वैदिक साहित्य सुलभ करवाया गया। समस्त उपस्थितजनों के भोजन-विश्राम तथा आयोजन की उत्कृष्ट व्यवस्था श्री मोहनलाल जी द्वारा की गई। अंतिम संस्कार से लेकर वैदिक सत्संग आयोजन तक समस्त गतिविधियों का व्यापक प्रभाव ग्रामवासियों, परिवारजनों एवं स्नेहीजनों पर देखा गया। अनेक बंधुओं द्वारा भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए इस प्रकार के वैदिक कार्यों को अपने जीवन से जोड़ने की अभिलाषा व्यक्त की तथा शंका-समाधान भी किये। शान्तिपाठ एवं मधुर प्रेरणास्पद स्मृतियों को संजोए हुए आयोजन सम्पन्न हुआ। **चित्र देखें पृष्ठ ४७ पर** ●

theryasamaj.org

देश के अनेक स्थलों पर वैदिक सत्संगों की धूम

आर्य जगत् के उद्भट विद्वानों के मुखारविन्द से प्रवाहित होगी वेदवाणी

आर्य जगत् की प्रखर वक्त्रि सुश्री अंजलि आर्या-करनाल

जावरा, जिला-रतलाम (म.प्र.) में दिनांक १५ से १९ जनवरी २०१५ तक सुश्री अंजलि आर्या के मुख्य आतिथ्य में वैदिक सत्संग सम्पन्न होगा

आर्य समाज धार (म.प्र.) के तत्वावधान में निकटवर्ती ग्राम-दिलावरा म गत् वर्ष की भांति इस वर्ष भी गायत्री महायज्ञ का आयोजन **दिनांक २० से २२ जनवरी २०१५ तक सुश्री अंजलि आर्या** एवं पं. भिष्म जी आर्य बिजनौर की गरिमामयी उपस्थिति में सम्पन्न होगा।

निवेदक - आर्य समाज धार

सम्पर्क - लाखनसिंह ठाकुर (प्रधान) ९९९३१७४८३२

महेश आर्य (मंत्री) ९७५५७७७८१६

आर्य समाज बड़नगर जिला-उज्जैन (म.प्र.)

अपनी स्थापना के १०० वर्ष पूर्ण होने पर **शताब्दी समारोह** के रूप में वैदिक सत्संग का आयोजन भव्य रूप में **दिनांक २६ जनवरी से ३० जनवरी २०१५ तक** बड़नगर में आयोजित करने जा रहा है।

इस गरिमामयी अवसर पर यज्ञ ब्रह्मा का दायित्व निर्वहन करेंगे आर्य जगत् के वयोवृद्ध विद्वान् **पं. कमलेश जी अग्निहोत्री,** अहमदाबाद तथा भजनों एवं उपदेश की सुमधुर वैदिक ज्ञान गंगा **सुश्री अंजलि आर्या**-करनाल व **पं. कमल किशोर शास्त्री**-बैरसिया (भोपाल) के मुखारविन्द से प्रवाहित होगी।

आर्य समाज बड़नगर के वयोवृद्ध, सेवाभावी विद्वान् **पं. नाथूलाल जी शमा** अपनी ओजस्वी वाणी में कार्यक्रम का संचालन करेंगे।

निवेदक - आर्यसमाज बड़नगर

सम्पर्क सूत्र - राजेन्द्र यादव **(प्रधान)** - ९७७०३१५११७, अरुण भावसार **(मंत्री)** - ९९९३४१४०१०मनोज आर्य **(वरिष्ठ कार्यकर्ता)** - ९९२६९६०८६२

कंकीनारा, पश्चिम बंगाल में दिनांक २३ से २५ जनवरी को सुश्री अंजलि आर्या एवं अन्य विद्वानों का वैदिक सत्संग

हरियाणा में पलवल के पास डिकरी ब्राह्मण में दिनांक ३१ जनवरी से ०१ फरवरी तक सुश्री अंजलि आर्या एवं अन्य विद्वानों का वैदिक सत्संग

भोगाँव उ.प्र. में दिनांक ०९ से ११ फरवरी तक सुश्री अंजलि आर्या एवं अन्य विद्वानों का वैदिक सत्संग

एटा उ.प्र. में दिनांक १२ से १४ फरवरी तक सुश्री अंजलि आर्या एवं अन्य विद्वानों का वैदिक सत्संग

रोहतक, हरियाणा में दिनांक ०८ फरवरी २०१४ को विशाल आर्य महासम्मेलन सुश्री अंजलि आर्या एवं अन्य विद्वानों की उपस्थिति में

जारी है १५६ दिवसीय चतुर्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ
एवं योग साधना शिविर
पूर्णाहुति दिनांक - ८ मार्च २०१५
स्थान - गुरुकुल यमुनातट मंझावली, जिला-फरिदाबाद, हरियाणा

आर्य जगत् के त्यागी, तपस्वी उद्भत विद्वान स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती द्वारा स्थापित गुरुकुल यमुनातट मंझावली के २१ वें वार्षिक उत्सव के अवसर पर आचार्य विद्यादेव जी के यज्ञ ब्रह्मत्व में सात भव्य यज्ञ शालाओं के बृहद आकार के यज्ञ कुण्डों पर ४ अक्टूबर से प्रारम्भ होकर १५६ दिवसीय चतुर्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ अनवरत् जारी है। इस महायज्ञ में सवा करोड़ गायत्री मन्त्रों से भी आहुतियाँ प्रदान की जावेगी। इसके साथ योग साधना शिविर का आयोजन भो सम्पन्न हो रहा है।

सम्पूर्ण आयोजन के अध्यक्ष एवं मार्गदर्शक स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी सरस्वती हैं। आर्य महानुभावों से विनम्र अनुरोध है कि इस बृहद एवं विलक्षण आयोजन में पधारकर धर्म लाभ प्रास करें।

सम्पर्क-श्री जगतसिंह जी आर्य, ०९८९९९१७६६४

आर्य समाज बेरछा द्वारा दिनांक २८ से ३० अप्रैल तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ सुश्री अंजलि आर्या के यज्ञ ब्रह्मत्व में, सुश्री अंजलि आर्या , प. हिरालाल जी भजनोपदेशक एवं अन्य विद्वानों का वैदिक सत्संग

निवेदक-प. सत्यपाल शास्त्री, ०९३००९६२२६४

आर्य महानुभाव ध्यान दें.....

इन्दौर म.प्र. के समीपवर्ती क्षेत्रों में **''वैदिक संसार''** मासिक पत्रिका द्वारा वेद प्रचार वाहन के माध्यम से वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार हेतु ग्रामीण अंचलों में भी योगदान दिया जा रहा है तथा वैदिक सत्संगों में दर्शन योग महाविद्यालय रोजड़, वानप्रस्थ आश्रम-रोजड़, सन्त औधवराम वैदिक गुरुकुल-भवानीपुर, श्री घूड़मल प्रहलादकुमार आर्य धर्मार्थ न्यास-हिण्डौन सिटी, अमर स्वामी प्रकाशन विभाग गाजियाबाद, आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट दिल्ली, वैदिक साहित्य प्रकाशन-दिल्ली, विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द-दिल्ली द्वारा प्रकाशित साहित्य एवं यज्ञ कुण्ड, सुर्वा, हवन सामग्री तथा वैदिक संसार मासिक पत्रिका की सदस्यता उपलब्ध करवाकर जन-जन तक वैदिक सिद्धांतों को पहुँचाने का प्रयास किया जा रहा है। समस्त ऋषिभक्तों तथा आर्यसमाज एवं वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार में संलग्न संस्थाओं के पदाधिकारियों से विनम्र अनुरोध है कि अपने द्वारा आयोजित किये जाने वाले आयोजन की जानकारी डेढ़ से दो माह पूर्व अवगत करवाने का कष्ट करें जिससे समय पर पत्रिका में प्रकाशित कर धर्म प्रेमी जिज्ञासु जनों को लाभान्वित किया जा सके तथा वेद प्रचार वाहन से क्षेत्र में प्रचार व वैदिक साहित्य विक्रय केन्द्र (स्टाल) हेतु समय पूर्व सम्पर्क करें।

निवेदक

सुखदेव शर्मा

प्रकाशक-**वैदिक संसार**

चलभाष-९४२५०६९४९१

thearyasamaj.org

वैदिक संसार आर्य जगत् की गतिविधियों का साक्षी बना

आर्य समाज निपानियाँ कलाँ के सत्संग भवन का शिलान्यास

निपानियाँ कलाँ, जिला-सिहोर (म.प्र.) एक छोटा-सा कृषक बहुल ग्राम है किन्तु यहाँ के अनेक परिवार वैदिक सिद्धांतों के प्रति दृढ़ हैं। आर्य समाज निपानियाँ कलाँ वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार हेतु सक्रिय रूप से कार्यरत है किन्तु उसका अपना कोई स्थान अथवा भवन नहीं था। इसके निर्माण हेतु वरिष्ठजन श्री प्रभुलाल जी एवं बालमकुन्द जी दोनों भाई आगे आये। इन्होंने ग्राम से सिहोर जाने वाले मुख्य मार्ग पर स्थित अपनी कृषि भूमि में से ३० X ३० का भूखण्ड वैदिक सत्संग भवन हेतु दान देते हुए भवन निर्माण के निमित्त भी २१००० रूपये प्रभुलाल जी ने तथा ११००० रूपये बालमकुन्द जी ने शिलान्यास समारोह के समय देने का संकल्प व्यक्त किया।

दिनांक २३ नवम्बर २०१४ को एक बृहद आयोजन मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री प्रकाश जी आर्य के मुख्य आतिथ्य में आयोजित किया गया। आयोजन के प्रारम्भ में **पं. रजनिश जी शास्त्री भोपाल के ब्रह्मत्व में देवयज्ञ** सम्पंन्न हुआ। इसी ग्राम से जिला-मुख्यालय सिहोर पर निवास करने वाले ऋषि भक्त डॉ. शिवचरण जी झलावा ने ५१०००/-, श्री कमलेश जी याज्ञिक ने १५०००/-, राजकुमार जी चौधरी द्वारा ११०००/-, आर्य समाज गंज सिहोर द्वारा ११०००/-, मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा भोपाल द्वारा ११०००/-, आर्य समाज मल्हारगंज इन्दौर द्वारा ५०००/- इसी प्रकार अनेकों बंधुओं ने ५०००/-, २१००/-, ११००/- रूपये भवन निर्माण हेतु दान देने की स्वैच्छा से घोषणा की लगभग ढ़ाई लाख रूपये की राशि आयोजन स्थल पर ही एकत्र हो गई। मंच संचालन मंत्री ब्रजेश जी झलावा ने किया। आभार-मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमंत्री कमलेश जी याज्ञिक ने व्यक्त किया। शान्ति पाठ स्नेह भोज के साथ आयोजन सम्पन्न हुआ।

आर्य समाज नागदा का ५१वाँ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

दिनांक १८ से २० नवम्बर २०१४ तक आर्य समाज नागदा, जिला-उज्जैन (म.प्र.) का ५१वाँ वार्षिकोत्सव हर्षोल्लास के साथ आर्य जगत् की प्रख्यात भजनोपदेशिका सुश्री अंजलि आर्या, ऋषि स्मृति न्यास जोधपुर से पधारे पं. रामनिवास जी गुणग्राहक, उत्तरप्रदेश से पधारे श्री तृषपाल जी विमल तथा एक दिवस हेतु पधारे स्वामी आर्यावेश जी, दिल्ली के प्रवचन भजन में आयोजित किया गया। आर्य समाज नागदा का परिचय प्रख्यात, कर्मठ, समाजसेवी स्मृति शेष सेवाराम जी पटेल के माध्यम से सुविख्यात है। पटेल सा. के निधन के पश्चात् आर्य समाज नागदा का प्रथम वार्षिकोत्सव मनाया गया। पटेल सा. ऋषि मिशन को समर्पित, जुझारू, राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त व्यक्ति थे। आपके प्रयासों से अनेक छोटे-छोटे ग्रामों में आर्य समाज पहुँचा। आप राजनीतिक प्रतिभा सम्पन्न कृषक एवं कृषकनेता थे इस कारण अनेकों कृषकों से सीधा सम्बन्ध होने से आपके माध्यम से अनेकों कृषकों ने वैदिक ज्ञान का अमृत पान किया और अपनी सेवाएँ वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार में अर्पित की और कर रहे हैं। आप एक व्यक्ति नहीं अपितु एक संस्था थे। जिस प्रकार व्यक्ति इस संसार से जाने के बाद अपने आश्रितों को धन-सम्पदा विरासत में देकर जाता है उसी प्रकार आपने अपने पुत्रों को विरासत में वैदिक धर्म और आर्य समाज का कार्यभार दिया है जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण इस आयोजन में देखने को मिला। आपके पुत्र कमल आर्य ने संस्था मंत्री के रूप में प्रधान-श्री पूनमचन्द जी, कोषाध्यक्ष-श्री भंवरलाल जी पांचाल, श्री रमेशचन्द्र जी चन्देल 'अधिवक्ता', श्री महेश जी सोनी, श्री अग्निवेश जी पाण्डे (पुरोहित) आदि सहयोगियों के सहयोग से सफलता पूवक सम्पन्न किया तथा पटेल जी की कमी को आपके भाई श्री रामसिंह जी आर्य संस्था संरक्षक के रूप में पूर्ण करने का प्रयास कर रहे हैं।

आयोजन में श्री गोविन्दराम जी आर्य देपालपुर, श्री लक्ष्मीनारायण जी आर्य बड़नगर, पं. काशीराम जी अनल कानड़, पं. हीरालाल जी शास्त्री बेरछा, पं. सुरेश जी शास्त्री महूँ से वेद प्रचार रथ एवं सहयोगियों के साथ, प्रभात आयुर्वेदिक फार्मेसी देवास के डॉ. प्रेमनारायण जी पाटीदार, पं. सत्येन्द्र जी आर्य पिपलिया मण्डी, श्री किशनलाल जी आर्य-भोपाल, श्री भारतेन्द्र जी आर्य खरसौदकलाँ, श्री बंशीलाल जी बरखेड़ा पंथ उपस्थित रहे, मंच संचालन डॉ. लक्ष्मीनारायण जी सत्यार्थी ने काव्य रूपी कसिदाकारी के साथ किया।

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय नर्मदापुरम् का १०३वाँ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

होशंगशाह द्वारा आबाद होशंगाबाद मध्यप्रदेश का एक जिला है जिसका नूतन नाम नर्मदापुरम है। ऋषि दयानन्द के जीवन प्रसंगों से जुड़ी पवित्र सलिला नर्मदा के तट पर बसे नर्मदापुरम् के नर्मदा नदी के खर्राघाट तथा रेल सेतु के समीप बृहद क्षेत्रफल में नगरीय कोलाहल से दूर वृक्षों से आच्छादित प्राकृतिक रमणीय वातावरण में **१०३ वर्ष पूर्व स्थापित यह गुरुकुल चन्द्रशेखर आजाद की आश्रय स्थली जैसी अनेकों ऐतिहासिक स्मृतियों को संजोए आर्य जगत् को अनेकों विद्वानों से विभूषित करने का गौरव रखता है।**

इस गुरुकुल का **वार्षिक उत्सव गुरुकुल के वर्तमान संरक्षक स्वामी ऋतस्पति जी परिव्राजक की अध्यक्षता में दिनांक ५ से ७ दिसम्बर को समारोह पूर्वक मनाया गया** प्रातः-सायं कालीन दोनों समय ब्रह्मयज्ञ तथा देवयज्ञ गुरुकुल की नित्य गतिविधि में शामिल है। दिनांक ५ को सायं स्वामी जी को बग्घी पर आरूढ़ कर गुरुकुल के ब्रह्मचारियों का शौर्य प्रदर्शन व एक वाहन पर देवयज्ञ करते हुए शोभायात्रा निकाली गई। वैदिक संसार के वेद प्रचार वाहन ने भी शोभायात्रा की शोभा में वृद्धि की।

गो आश्रम प्रांसला से पधारे धर्मबन्धु जी, योग मर्मज्ञ स्वामी गणेशानन्द जी सरस्वती, भजनोपदेश श्री उपेन्द्र जी आर्य चण्डीगढ़, पं. कमलकिशोर जी शास्त्री बैरसिया, आचार्य आनन्द पुरूषार्थी जी, स्वामी ऋतस्पति जी के प्रवचन-भजन का लाभ उपस्थित आर्यजनों ने प्राप्त किया।

मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश, छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा आदि अनेकों दूरस्थ स्थानों से बृहद संख्या में आर्यजन अपनी बैटरी रिचार्ज करने पहुँचे।

वैदिक साहित्य संस्थान दिल्ली, वैदिक संसार इन्दौर तथा गुरुकुल द्वारा स्थापित विक्रय केन्द्रों के माध्यम से साहित्य सुलभ करवा कर आत्मिक आरोग्यता हेतु सेवाएँ दी गई। प्रभात आयुर्वेदिक फार्मेसी देवास, वेदयोग आयुर्वेद संस्थान केहलारी, ओमप्रकाश आर्य तथा अन्य विक्रेताओं द्वारा आयुर्वेदिक औषधियों के विक्रय केन्द्र लगाकर शारीरिक आरोग्यता हेतु सेवाएँ दी गई।

अतिथियों के विश्राम-भोजन आदि तथा आयोजन की सम्पूर्ण व्यवस्था का कुशलता पूर्वक संचालन सरल सौम्य व्यक्तित्व के धनी आचार्य सत्यसिंधु जी कर रहे थे। पाकशाला एवं भोजनशाला के कार्यभार दायित्व मनोज आर्य देवगढ़ (देवास) देख रहे थे तो मंच संचालन, मंचीय व्यवस्था एवं यज्ञशाला की व्यवस्था का कुशलतापूर्वक निर्वहन आचार्य योगेन्द्र जी याज्ञिक कर रहे थे। सम्पूर्ण व्यवस्थाओं में पूर्व तथा वर्तमान ब्रह्मचारी मेरूदण्ड की भांति लगे हुए थे। वैदिक धर्म के उज्जवल भविष्य की सुखद आशाओं स्मृतियों को संजोए हुए आयोजन सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

आर्य समाज विदिशा का ९६वाँ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज, महिला आर्य समाज और आर्यवीर दल विदिशा के संयोजन में दिनांक १२ से १४ दिसम्बर तक आर्य समाज विदिशा का ९६वाँ वार्षिकोत्सव स्वामी ऋतस्पति परिव्राजक-संचालक-आर्ष गुरुकुल नर्मदापुरम्, शतायु अवस्था पूर्ण कर चुके योगाचार्य स्वामी सर्वानन्द जी सरस्वती, आर्य जगत् के ओजस्वी-तेजस्वी प्रखर वक्ता श्री वेदप्रकाश जी श्रोत्रिय-दिल्ली तथा आर्य जगत् की ख्याति प्राप्त भजनोपदेशिका सुश्री अंजलि आर्या के मुखारविन्द से प्रवाहित वेदवाणी की वृष्टि में सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर चतुर्वेद शतकम् यज्ञ तथा नवनिर्मित सभागार का लोकार्पण विधायक सूर्यप्रकाश जी दयानन्दपुर (शमशाबाद) मीणा के करकमलों के द्वारा सम्पन्न किया गया।

हॉल के समीप एक कमरे का निर्माण श्री बाबूलाल जी आर्य आनन्द की स्मृति में किया गया जिसका भी लोकार्पण सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर विषिष्ट अतिथि के रूप में विदिशा विधायक कल्याणसिंह तथा मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के

thearyasamaj.org

महामंत्री प्रकाश जी आर्य भी उपस्थित थे। इस अवसर पर वैदिक संसार इन्दौर के सह सम्पादक नितिन शर्मा तथा वेद विद्या मन्दिर धरमपुरी के संयोजक श्री मोहनलाल जी शर्मा द्वारा उपस्थितों को वैदिक साहित्य सुलभ करवाया गया। मंच संचालन संस्था मंत्री केदारनाथ चौरसिया तथा आर्य वीरदल के युवा साथी दिनेश जी वाजपेयी जी द्वारा किया गया।

आर्य समाज गान्धीधाम का हीरक जयन्ति समारोह सम्पन्न

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त, मानव सेवा कार्यों को समर्पित वर्ष के ३६५ दिवस सक्रिय आर्य समाज गान्धीधाम की स्थापना के ६० वर्ष पूर्ण होने पर हीरक जयन्ति समारोह आर्य जगत् के उद्भट विद्वान् पं. सत्यानन्द जी वेद वागीश, पं. कमलेश कुमार जी अग्निहोत्री, स्वामी श्रद्धानन्द जी सरस्वती, स्वामी शान्तानन्द जी सरस्वती, साध्वी डॉ. उत्तमा यति जी, आचार्य विरेन्द्र 'गुरु जी', आचार्या नन्दिता शास्त्री, ब्रिगेडियर चितरंजन जी सावंत एवं धर्मपत्नी प्रख्यात साहित्यकार श्रीमती सुधा सावंत जी, युनिवर्सिटी अहमदाबाद के संस्कृत मर्मज्ञ विजेन्द्र जी पण्डा, जीवन प्रभात के कुलपिता आर्य पथिक गिरिश खोसला जी, सुनिल मानकटाला जी, गुजरात प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान सुरेशचन्द्र जी अग्रवाल, महामंत्री-हसमुख भाई परमार, मुम्बई से पधारे संगीतज्ञ ललित साहनी जी तथा दूर-दूर से पधारे संन्यासी वृन्दों, आर्य पदाधिकारियों व गणमान्य महानुभावों की गरिमामयी उपस्थिति में हर्षोल्लास के साथ **दिनांक १२ से १४ दिसम्बर २०१४ तक मानव कल्याण आत्म संकल्प महायज्ञ** के साथ मनाया गया।

दिनांक १३ को सायं काल आर्य समाज द्वारा संचालित डी.ए.वी. (दयानन्द वैदिक विद्यालय) के बालक-बालिकाओं के सांस्कृतिक आयोजन के माध्यम से उनं विद्यार्थियों के अभिभावकों को भी आयोजन से जोड़ा गया।

दिनांक १३ को प्रात:कालीन सत्र सम्पन्न होने तथा भोजन पश्चात् अतिथियों को आर्य समाज द्वारा संचालित प्रकल्पों व कांडला बंदरगाह का भ्रमण-अवलोकन करवाया गया।

दिनांक १४ को यज्ञ के पूर्णाहुति पश्चात् अतिथियों को स्मृति चिन्ह, नव वर्ष तिथि पत्रक, दैनन्दिनी पुस्तिका आदि प्रदान कर भावभीना अभिनन्दन किया गया। आर्य प्रकाशन दिल्ली, विजय आर्य चण्डीगढ़, वैदिक संसार इन्दौर तथा सन्त औधवराम गुरुकुल भवानीपुर के द्वारा आर्ष साहित्य विक्रय केन्द्र स्थापित किये गये। योगाचार्य लोकपाल आर्य हरिद्वार द्वारा एक्यूप्रेशर सम्बन्धित परामर्श, उपकरण तथा आयुर्वेदिक औषधियाँ उपलब्ध करवाये गये।

अतिथियों को रेल्वे स्टेशन, बस स्टेण्ड से आने-जाने, भोजन-प्रात:राश तथा विश्राम का समुचित प्रबन्ध ट्रस्ट पदाधिकारियों ने स्वयं भागदौड़ कर किया। मंच संचालन ट्रस्ट महामंत्री आचार्य वाचोनिधि जी एवं मंत्री श्री मोहन जी जांगिड ने किया, आभार-संस्था प्रधान पुरूषोत्तम भाई पटेल ने माना।

ग्राम-कजलास में आयोजित वैदिक सत्संग से वैदिक धर्म प्रचार को गति मिली

ग्राम-कजलास, जिला-सिहोर (म.प्र.) में प. हीरालाल जी आर्य बेरछा द्वारा अपनी धर्मपत्नी श्रीमती शान्ति देवी के साथ किये गये अथर्ववेद प्रचार के संस्कार समय के अंतराल में मन्द हो गये थे। क्षेत्र में वेदज्ञान की टिम-टिमाती ज्योति को जलाये रखने में कजलास के अमृतलाल जी आर्य जूझ रहे थे। ईश्वरीय कृपा से आर्य जगत् की प्रखर वक्त्री सुश्री अंजलि आर्या तथा पं. कमलकिशोर जी शास्त्री बैरसिया, पं. हीरालाल जी आर्य बेरछा, श्री किशनलाल जी आर्य भोपाल का **दिनांक १५ से १९ दिसम्बर २०१४ तक** आकस्मिक वैदिक सत्संग का आयोजन श्री लक्ष्मीनारायण जी आर्य बड़नगर, उपप्रधान-मध्य भारतीय प्रतिनिधि सभा के अथक प्रयासों से निर्धारित एवं पाटीदार धर्मशाला कजलास में सम्पन्न हुआ। जिसका व्यापक प्रभाव होकर राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के जुझारू-समर्पित कार्यकर्ताओं की टीम वैदिक धर्म सिद्धांतों के प्रति आकर्षित हुई तथा इन युवाओं ने धर्म-संस्कृति राष्ट्र के रक्षार्थ वैदिक धर्म के महत्व को जाना तथा संकल्प लिया कि वे क्षेत्र में वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार हेतु सदैव सक्रिय रहेंगे। इसका और आयोजन की व्यवस्था का श्रेय ही श्री अमृतलाल जी, श्री जीवनसिंह जी, श्री घनश्याम जी उत्ता (मंच संचालक), श्री धर्मेन्द्र जी कुम्भकार, श्री भंवरलाल जी चौधरी, श्री गंगाराम जी पाटीदार, श्री कैलाशचन्द्र गुप्ता को जाता है।

वैदिक संसार ने वैदिक साहित्य सुलभ करवाया तथा प्रभात आयुर्वेदिक फार्मेसी देवास ने अपने उत्पादों से उपस्थितों को लाभान्वित किया। इस आयोजन में आर्य समाज खरसौद कलाँ, देवगढ़, बड़नगर, मौलाना, बेरछा, हरनावदा, करमन खेड़ी, खामखेड़ा, बैजनाथ, सिहोर के गणमान्य पदाधिकारी एवं ग्राम के महिला-पुरुषों ने बृहद संख्या में उपस्थित होकर आयोजन का लाभ प्राप्त किया तथा आयोजन को सफल बनाया।

ग्राम-करमनखेड़ी, जिला-सिहोर (म.प्र.) में सुश्री अंजलि आर्या के मुखारविन्द से गूंजी वेदवाणी

इन्दौर-भोपाल मुख्य मार्ग से लगभग १५ किलोमीटर की दूरी पर स्थित ग्राम करमन खेड़ी, जिला-सिहोर (म.प्र.) का कृषक बहुल, आवागमन के साधनों से विहिन छोटा-सा ग्राम है किन्तु शासकीय माध्यमिक विद्यालय के ठीक सामने रामसुख जी द्वारा निर्मित विशाल यज्ञशाला तथा प्रत्येक रविवार को पृथक-पृथक परिवारों में साप्ताहिक सत्संग यहाँ के निवासियों की वैदिक धर्म के प्रतिनिष्ठा तथा समर्पण की साक्षी देता है। इन ऋषिभक्तों को जब ग्राम-कजलास के वैदिक सत्संग आयोजन की जानकारी प्राप्त हुई तो वहाँ पहुँच कर लाभ तो लिया ही अपने ग्रामवासी भी सुश्री अंजलि आर्या के प्रवचनों का लाभ प्राप्त कर सके इस बाबद बहन जी से चर्चा कर स्वीकृति प्राप्त की और **दिनांक १९ के सायंकालीन व दिनांक २० नवम्बर के प्रात: कालीन सत्र का आयोजन** आयोजित कर दिया।

सुश्री अंजलि आर्या के ब्रह्मत्व में देवयज्ञ सम्पन्न हुआ पं. हीरालाल जी शास्त्री बेरछा तथा बहन जी के भजन-प्रवचन हुए। सुश्री अंजलि आर्या के मुखारविन्द से वेदवाणी सुनने, बगैर प्रचार-प्रसार के समीपवर्ती ग्रामों से एवं स्थानीय ग्रामवासियों का उत्साह प्रशंसनीय था। अल्प समय में आयोजन की उत्कृष्ट व्यवस्था भी सराहनीय थी। वैदिक संसार द्वारा वैदिक साहित्य का विक्रय केन्द्र स्थापित कर वैदिक साहित्य सुलभ करवाया गया। प्रभात फॉर्मेसी द्वारा भी औषधियाँ उपलब्ध करवाई गई।

वेद प्रचार अभियान - २०१४ सम्पन्न

आर्य समाज, **सेक्टर-६, भिलाई (छत्तीसगढ़) का ३१ दिवसीय वेद प्रचार अभियान २०१४ के द्वितीय चरण समापन २४ नवम्बर २०१४ को सम्पन्न हुआ।** द्वितीय चरण में २४ परिवारों में यज्ञ एवं सत्संग का आयोजन किया गया था। इस आयोजन में ट्विन सिटी भिलाई दुर्ग के विभिन्न मोहल्ले के परिवारों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। इन प्रोग्रामों में श्रद्धालुओं की उपस्थिति भी प्रशंसनीय थी।

इस दौरान ख्याति प्राप्त उपदेशक आचार्य चंद्रदेव जी फरूखाबाद से, आचार्य सत्यपाल जी मथुरा से तथा भजनोपदेशक पं. सहदेव 'सरस' एटा से पधारे। इनके प्रवचनों एवं भजनों से वेदवाणी का प्रचार-प्रसार किया। इनमें प्रमुखत: यज्ञ तथा सत्संग पर विशेष बल दिया गया। इस दौरान भिलाई इस्पात संयंत्र द्वारा संचालित सियान सदन में भी एक विशेष कार्यक्रम रखा गया जिसमें उपस्थित समुदाय ने द्वारा बढ़-चढ़ कर भाग लिया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में प्रधान श्री अवनी भूषण पुरंग तथा मंत्री श्री रवि आर्य का निरंतर सहयोग रहा।

बोधोत्सव का आयोजन

दिनांक १६ से १८ फरवरी २०१५ तक

आर्यजनों को यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि प्रतिवर्ष की भाँति आगामी वर्ष में **महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में शिवरात्रि के पावन पर्व पर भव्य ऋषि बोधोत्सव का आयोजन १६-१८ फरवरी २०१५ तक किया जायेगा।** आपसे निवेदन है कि आप यह तिथियाँ अभी से अंकित कर लेवें और इन तिथियों में अपनी संस्था का कोई कार्यक्रम न रखकर उक्त समारोह में अधिक से अधिक आर्यजनों के साथ टंकारा पधारने का कार्यक्रम बनायें। आपके आवास एवं भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगी।

hearyasamaj.org

आर्य संन्यासी सम्मान से सम्मानित

दर्शन योग महाविद्यालय, आर्यवन, रोजड़ (गुजरात) के निदेशक पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक को भारतवर्ष में वैदिक आर्य सिद्धांतों व मूल्यों के प्रचार-प्रसार में विशिष्ट योगदान देने हेतु दिनांक १५ नवम्बर २०१४ को महात्मा हंसराज की १५०वीं पुनीत पुण्य स्मृति दिवस पर प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धक समिति द्वारा आयोजित **''आस्था पर्व''** पर **''आर्य संन्यासी''** के सम्मान से सुशोभित किया गया है।

यह सम्मान श्री पूनम सूरी जी प्रधान, - (डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति एवं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली) द्वारा लगभग १२ हजार आर्य-वृंद की उपस्थिति में किया गया। **चित्र देखें पृष्ठ-४८ पर**

स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक - एक परिचय

स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक का जन्म २२ दिसम्बर १९५९ को दिल्ली में हुआ। आपने योग, सांख्य, न्याय, वैशेषिक, वेदान्त और मीमांसा, उपनिषद्, ऋग्वेद और यजुर्वेद का अध्ययन किया है। १९८६ से लगभग २० वर्ष तक दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड़, गुजरात में दर्शन, वेदादि शास्त्रों का अध्यापन किया एवं महर्षि पतंजलि के अष्टांग योग का प्रशिक्षण दिया। आप भारत के लगभग सभी राज्यों में दार्शनिक प्रवचन, ध्यान योग शिविर, जीवन विकास शिविर, दर्शन शास्त्रों की कक्षाओं, वेद-कथा आदि के माध्यम से वैदिक योग विद्या का प्रचार करते हैं। आप आध्यात्मिक शंका समाधान के विशेषज्ञ हैं। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में आपके लेख समय-समय पर प्रकाशित होते रहते हैं और आपने तत्वज्ञान, दुःख, कारण और निवारण और शंका-समाधान नामक पुस्तकें लिखी हैं। आप इंग्लैण्ड और नेपाल में वेद-प्रचार का कार्य कर चुके हैं। आपको विभिन्न पुरस्कारों (१) डॉक्टर मुमुक्षु आर्य महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति पुरस्कार, (२) स्वामी सत्यानन्द स्मृति पुरस्कार, (३) वैदिक प्रचार-प्रसार सम्मान, (४) आर्य विद्वान् दर्शन सम्मान, (५) वेद दर्शन प्रचारक संन्यासी सम्मान आदि से सम्मानित किया जा चुका है। **वर्तमान में आप दर्शन योग महाविद्यालय रोजड़, गुजरात में निर्देशक के पद पर कार्यरत हैं।**

आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री 'संस्कृति-गौरव' सम्मान से सम्मानित

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के वैदिक विद्वान्, ओजस्वी वक्ता, प्रख्यात लेखक, यशस्वी सम्पादक आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी को उनकी वैदिक धर्म प्रचार की अमेरिका एवं कनाडा यात्रा की सफल सम्पन्नता के उपलक्ष्य पर आर्यसमाज सैक्टर-७, रोहिणी, दिल्ली के विशाल सभागार में **'जय किशनदास सुनहरी देवी आर्या स्मृति ट्रस्ट'** की ओर से शाल, कलात्मक स्मृति चिन्ह, प्रशस्ति पत्र एवं मोतियों की माला भेंटकर **'संस्कृति गौरव सम्मान'** से विभूषित किया गया। उन्हें यह सम्मान भारत सरकार के सूचना प्रसारण मंत्रालय के पूर्व महानिदेशक पद्मश्री डॉ. श्याम सिंह शशि जी ने विशाल जनसमुदाय की उपस्थिति में प्रदान किया।

अध्यात्म पथ (पंजी.) मासिक पत्रिका के तत्वावधान में आयोजित इस भव्य कार्यक्रम में डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया (प्रख्यात साहित्यकार), श्री जयभगवान अग्रवाल (पूर्व विधायक), श्री ताराचन्द्र बंसल (चेयरमेन, रोहिणी जोन), श्री यशपाल आर्य (निगम पार्षद), श्री सुरेन्द्र गुप्ता (प्रधान, उत्तरी पश्चिमी दिल्ली वेदप्रचार मण्डल), श्री सोमनाथ आर्य (प्रधान-आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गांव), श्री हीरालाल चावला (उपाध्यक्ष-वेद संस्थान), डॉ. गोविन्दवल्लभ जोशी (वरिष्ठ पत्रकार), श्री सुखदेव आर्य तपस्वी (वेदप्रवक्ता), डॉ. धर्मवीर सेठी (संपादक-नीति), श्री राजेन्द्र आर्य (अध्यक्ष-जयकिशन-सुनहरी देवी ट्रस्ट), प्रो. अनिल राय (हिन्दी विभाग, दि.वि) श्री अतुल आर्य (माता कमला आर्या स्मारक ट्रस्ट) आदि गणमान्य महानुभावों ने आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी को तत्वचिन्तक, श्रेष्ठशिक्षा शास्त्री, प्रखर पत्रकार, निःस्वार्थ समाज सेवी बताकर उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम के प्रारंभ में आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में विश्व कल्याण महायज्ञ का आयोजन किया गया। जिसके मुख्य यजमान श्री आशीष गुप्ता एवं श्रीमती शालिनी गुप्ता तथा श्री सुरेन्द्र चौधरी एवं श्रीमती सुनीता चौधरी थे। यज्ञोपरान्त आर्य समाज सैक्टर-७, रोहिणी के यशस्वी प्रधान श्री शिव कुमार गुप्ता जी ने ध्वजारोहण किया।

उत्तरी-पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मंडल के प्रधान श्री सुरेन्द्र गुप्ता जी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। श्री नरेन्द्र आर्य **'सुमन'** के भजनों एवं श्री विनय शुक्ल विनम्र व श्री हर्षवर्धन आर्य की कविताओं ने सबका मन मोह लिया। कार्यक्रम का कुशल संचालन आर्यसमाज सरस्वती विहार के यशस्वी मंत्री प्रिं. अरूण आर्य एवं आर्यसमाज सैक्टर-७, रोहिणी के यशस्वी मंत्री श्री राजीव आर्य ने किया। समाज प्रधान श्री शिव कुमार गुप्ता जी ने सभी का आभार प्रकट किया। **-सूर्यकान्त मिश्र**

चित्र देखें पृष्ठ- ४८ पर

श्री रामनाथ सहगल, मंत्री-टंकारा ट्रस्ट आजीवन उपलब्धि पुरस्कार से सम्मानित

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति के संयुक्त तत्वावधान में डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, राजेन्द्र नगर, साहिबाबाद, गाजियाबाद (उ.प्र.) में आयोजित महात्मा हंसराज दिवस समारोह के अवसर पर प्रतिवर्ष दिये जाने वाले सम्मान में श्री पूनम सूरी, प्रधान-डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकत्री सीमित एवं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा द्वारा सर्वप्रथम सम्मान आर्य समाज के प्रसिद्ध समाज सेवी श्री रामनाथ सहगल को ९० वर्ष की आयु होने पर उनके द्वारा आर्य समाज और डी.ए.वी. को दी गई सेवाओं के लिए आजीवन उपलब्धि पुरस्कार (Life Time Achievement Award) से सम्मानित किया गया।

हम उनके स्वास्थ्य लाभ एवं दीर्घायु की कामना करते हैं ताकि वे इसी तरह समाज सेवा करते हुए हमारा मार्गदर्शन करते रहें। **चित्र देखें पृष्ठ - ४८ पर**

दानी महानुभावों से सहयोग हेतु विनम्र अनुरोध

झारखण्ड जैसे पिछड़े राज्य में जिला-पलामू आर्य समाज राज चैनपुर के कुछ ऋषि भक्त उम्र के अंतिम पड़ाव पर भी अपने अल्प साधनों के बावजूद वैदिक ज्ञान ज्योति को जलाये हुए हैं और युवाओं की तरह ऊर्जा से भरपूर वैदिक धर्म का परचम कैसे फहराता रहे और भावी पीढ़ी को भी लाभ मिले इसके लिये प्रयासरत हैं। जिसके लिये उन्होंने २-१/२ कट्टा (०.१० डेसीमल) जमीन प्राप्त कर उस पर विधायक निधि से एक हॉल का निर्माण तथा १५ X १५ की यज्ञशाला का निर्माण डाल्टनगंज निवासी कविराज ज्योति प्रकाश जी गोयल के द्वारा अपने पिता की पवित्र स्मृति में करवा दिया है।

इसके अन्दर चापाकत भी अवस्थित है किंतु चहारदिवारी व मुख्यद्वार के बगैर सम्पूर्ण आर्य समाज असुरक्षित है, अतः चहारदिवारी, मुख्य द्वार तथा अतिथि कक्ष के निर्माण हेतु दानी महानुभावों से यथाशक्ति सहयोग का विनम्र अनुरोध करते हैं।

सहयोग पंजाब नेशनल बैंक, चैनपुर के खाता क्र. १४१०००० १००१२७३१९ में बसन्त शर्मा पिता-जागा मिस्त्री, साधुशरण प्रसाद पिता-गणेश साव के संयुक्त नाम से जमा करें अथवा प्रधान/मंत्री आर्य समाज चैनपुर, जिला-पलामू, झारखण्ड, पिन-८२२११० के नाम मनिआर्डर से भेजे।

निवेदक-बसन्त आर्य (मंत्री) साधुशरण प्रसाद आर्य, राज चैनपुर

सम्पर्क-८८७३३००७५८, ०६५८६-२५११०६

(उपरोक्त महानुभाव वैदिक धर्मनिष्ठा, मध्यम आय स्त्रोत वाले, सरल, समर्पित सेवाभावी व्यक्ति हैं तथा आर्य समाज के कार्यों को गति देने हेतु जूझ रहे हैं। मैं इन्हें व्यक्तिगत रूप से जानता हूँ। सहयोग किया जाना उचित है - प्रकाशक वैदिक संसार)

thearyasamaj.org

आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन सम्पन्न

ऋषि दयानन्द, सरदार वल्लभ भाई पटेल, महात्मा गांधी, नरेन्द्र भाई मोदी जैसे व्यक्तित्व को जन्म देने वाली गुजरात भूमि की पावन धरा पर प्रथम बार आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन का आयोजन आर्य समाज आणंद में दिनांक २३ नवम्बर को राष्ट्रीय संयोजक अर्जुन देव चडढा के अथक प्रयासों से सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर गुजरात प्रांतिय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान-श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल, महामंत्री-श्री हंसमुख भाई परमार, प्रांतिय संयोजक एवं जामनगर के पूर्व महापौर डॉ. विनाश भट्ट, वृहत सौराष्ट्र आर्य प्रादेशिक सभा के प्रधान श्री रणजीतसिंह जी परमार, कोटा के रामप्रसाद जी याज्ञिक, आर्य समाज आणंद के प्रधान कनकसिंह जी वाघेला की गरिमामयी उपस्थिति में गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश तथा राजस्थान प्रान्त के अनेकों स्थानों से आए प्रतिभागियों ने कार्यक्रम को सफलता प्रदान की। इस अवसर पर परिचय विवरण पुस्तिका का विमोचन किया गया।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में पं. कनुप्रसाद शास्त्री तथा पं. विजयकुमार आर्य के पौरोहित्य में देवयज्ञ सम्पन्न किया गया। राष्ट्र की सुदृढ़ता में बाधक जातिवाद को दरकिनार कर समान गुण-कर्म-स्वभाव अनुसार शास्त्रोक्त निर्देशानुसार वैवाहिक रिश्तों को स्थापित करने में उपरोक्त आर्य वैवाहिक परिचय सम्मेलन आयोजन किये जाने पर हर्षव्यक्त करते हुए वक्ताओं ने इसकी भूरी-भूरी प्रशंसा करते हुए इसे मील का पत्थर बताया। आभार संस्था मंत्री डॉ. अशोक भाई पटेल ने माना।

चित्र देखें पृष्ठ - ४८ पर

आर्य समाज मेरी माता व दयानन्द मेरे धर्म पिता-**लाला लाजपत राय**

अमर बलिदानी पंजाब केसरी

लाला लाजपत राय का बलिदान दिवस सम्पन्न

आर्य जिला प्रतिनिधि सभा कोटा (राज.) के सद्प्रयासों से बालाजी एज्यूकेशनल इंस्टीट्यूट रंगबाड़ी में लाला लाजपतराय का बलिदान दिवस आर्य जिला प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान श्री अर्जुन देव चड्ढा की अध्यक्षता तथा **आर्यावर्त केसरी के सम्पादक डॉ. अशोक आर्य के मुख्य आतिथ्य में** मनाया गया।

इंस्टीट्यूट के मैनेजिंग डायरेक्टर हरगोविन्द निर्भिक ने अतिथियों का स्वागत-सम्मान किया।

वक्ताओं द्वारा लाला जी के जीवन पर प्रकाश डाला गया तथा गूढ़ तथ्यों से उपस्थित युवक-युवतियों को परिचित करवाकर राष्ट्रभक्ति के लिये प्रेरित किया गया। लाला जी के बलिदान को स्मरण कर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। संस्थान की प्राचार्या श्रीमती डॉ. सावित्री सिंगवाल ने अतिथियों का आभार माना।

चित्र देखें पृष्ठ -४८ पर

बधाई हो

राजस्थान प्रान्त के शहरी निकायों के निर्वाचन में बाड़मेर जिले की **बालोतरा नगर पालिका के वार्ड क्र.२० के पार्षद पद पर वरिष्ठ समाज सेवी श्री जीतमल जी सुथार** ने अपने निकटतम् प्रतिद्वंदी को १५ मतों से पराजित कर विजयश्री प्राप्त की आप कांग्रेस पार्टी के अधिकृत प्रत्याशी थे।

बाड़मेर नगर पालिका के वार्ड क्र.३९ के वार्ड पार्षद पद पर श्रीमती निर्मला देवी के. जांगिड ने अपनी निकटतम प्रतिद्वंदी को १६ मतों से पराजित कर विजयश्री प्राप्त की आप भा.ज.पा. की अधिकृत प्रत्याशी थी।

आप दोनों विजयी उम्मीदवारों को वैदिक संसार परिवार बधाई-शुभकामनां प्रेषित करता है तथा अपेक्षा करता है कि आप अपनी इस विजय को मानव सेवा का अवसर बनाकर यश और किर्ती प्राप्त करेंगे। - सम्पादक

आर्य समाज गान्धीधाम गौरवान्वित

आर्य समाज गान्धीधाम ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री सूर्यकान्त जी हरसौरा भी समर्पित सेवाभावी सदस्य है। **आपको कच्छ जिले के श्रेष्ठ व्यक्ति के रूप में जिला पंचायत कच्छ द्वारा चयन किया** जाकर जिला पंचायत की सामान्य सभा में कच्छ जिलाधीश श्री पटेल जी एवं जिला विकास अधिकारी द्वारा श्री हरसोरा जी को शाल ओढ़ाकर तथा सम्मान पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। हरसोरा जी का सम्मान सम्पूर्ण आर्य जगत् का सम्मान है। आपने अपने आर्यत्व को सार्थक किया है ऐसे सदस्यों को पाकर आर्य समाज गांधीधाम ट्रस्ट गौरवान्वित है। वैदिक संसार परिवार हरसोरा जी एवं आर्य समाज गान्धीधाम को बधाई प्रेषित करता है।

कौन कहता है हम बूढ़े हो गये हैं?

आर्यसमाज हाथी खाना राजकोट (गुजरात) के महामंत्री, गुजरात प्रांतिय सभा उपप्रमुख तथा वृहत सौराष्ट्र आर्य प्रा. सभा के प्रधान **टंकारा रत्न श्री रणजीतसिंह जी परमार आयु के ९२ वसंत पार करने के बाद भी** इतनी जिम्मेदारियों का निर्वाह कर ऋषि ऋण को समर्पित हैं। आप गुजरात में ही नहीं दुनियाँ में एक युवा की तरह ऋषि मिशन को आगे बढ़ाने में अपना योगदान दे रहे हैं। **हाल ही में अंतर्राष्ट्रीय आर्य सम्मेलन सिंगापुर और थाईलेण्ड में अपनी उपस्थिति दर्ज करवाकर लौटने पर दिनांक १६.११.२०१४ को** पारिवारिक सत्संग में यज्ञोपरांत आपका भावभीना अभिनन्दन आर्य समाज हाथीखाना के सदस्यों द्वारा किया गया।

वेद मन्त्रों की आहुति से सम्पन्न हुआ वार्षिक स्नेह मिलन समारोह

दिनांक २४.१०.२०१४ को जांगिड ब्राह्मण समाजवाड़ी, नरोड़ा, अहमदाबाद में प्रतिवर्षानुसार वार्षिक स्नेह मिलन समारोह दिपावली पर्व के दूसरे दिन सम्पन्न हुआ।

आयोजन के प्रारम्भ में **वैदिक विधि अनुसार बृहद यज्ञ का आयोजन दैनिक अग्निहोत्री तथा जांगिड ब्राह्मण समाज ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री ओमप्रकाश जी शर्मा धर्मपत्नी-सुमित्रा शर्मा तथा संस्था प्रधान-श्री रामअवतार जी शर्मा, महामंत्री-श्री मांगीलाल जी शर्मा, श्री नागरमल जी शर्मा एवं श्री रवि शर्मा ने सपत्निक यजमान बनकर आहुतियाँ प्रदान कर सम्पन्न किया।**

इस अवसर पर समाज के वरिष्ठजनों का सम्मान तथा प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन द्वारा अर्जित उपलब्धि पर ७वीं कक्षा के विद्यार्थियों को प्रमाणपत्र तथा ७वीं कक्षा से ऊपर के विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र के साथ रजत पदक प्रदान कर सम्मानित किया गया।

जांगिड ब्राह्मण प्रदेश सभा के अध्यक्ष श्री महावीर जी जांगिड, महामंत्री-श्री राधेश्याम जी शर्मा, जिलाध्यक्ष-श्री कमलेश जी शर्मा, प्रख्यात उद्योगपति-श्री सुरेन्द्र जी चोयल, श्री सीताराम जी शर्मा तथा ट्रस्टीगण-श्री ओमप्रकाश जी शर्मा, श्री राजेन्द्र जी शर्मा, श्री जगदीश जी शर्मा, श्री वेदप्रकाश जी शर्मा की गरीमामयी उपस्थिति में समस्त सदस्य गण सपरिवार सम्मिलित हुए। पूर्ण हर्षोल्लास के साथ सदस्यों में परस्पर स्नेह की वृद्धि करते हुए आयोजन स्नेह भोज के साथ सम्पन्न हुआ।

योग शिविर, संगीतमय वेद एवं उपनिषदों की कथा-सत्संग हेतु सम्पर्क करें

आकर्षक रूप में वेदज्ञान प्रचार-प्रसार के इच्छुक बंधु एवं संस्थाएँ योग शिविर तथा संगीतमयी वेद एवं उपनिषदों की कथा सत्संग आयोजन हेतु स्वामी सत्यव्रतानन्द जी सरस्वती, बुरहानपुर से सम्पर्क कर लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

सम्पर्क - स्वामी सत्यव्रतानन्द सरस्वती
दयानन्द आश्रम १, एल बी ४२, न्यू इन्दिरा कालोनी
बुरहानपुर (म.प्र.) ९९२६४५८५६३

thearyasamaj.org

सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव तथा योग साधना एवं चिकित्सा शिविर

दिनांक १३ से १८ जनवरी २०१५ तक

स्थान - पटेल प्रगति मण्डल, हनी पार्क रोड़, अड़ाजन, सूरत

पटेल प्रगति मण्डल, नन्दनी योग सेवा ट्रस्ट एवं आर्य समाज मन्दिर भट्टार सूरत के तत्वावधान में दिनांक १३ से १८ जनवरी २०१५ तक सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव का भव्य आयोजन किया जा रहा है। इस आयोजन में योगाचार्य डॉ. उमाशंकर जी महाराज द्वारा योग साधना के साथ-साथ व्याधियों से ग्रस्त महानुभावों को योग चिकित्सा परामर्श के साथ उपचार हेतु औषधियाँ भी प्रदान की जावेंगी।

आमंत्रित विद्वान् - यज्ञ ब्रह्मा - डॉ. सोमदेव जी शास्त्री, मुम्बई, आचार्य भकराचन्द जी शास्त्री - डी.ए.वी. स्कूल छत्तिसगढ़, पं. संजय जी सत्यार्थी-पटना, पं. मनोज शास्त्री-पटना, पं. रमेश जी वरिष्ठ पुरोहित-चण्डीगढ़, श्री भानुप्रताप वेदालंकार-इन्दौर, पं. कृष्ण शास्त्री-नागपुर, आचार्य इन्द्रजीत जी-दिल्ली, पं. ज्ञानेन्द्र जी शास्त्री-समस्तीपुर, स्वामी आर्येषानन्द जी-पिण्डवाड़ा, स्वामी ध्यानानन्द जी-उ.प्र., स्वामी प्रशान्तानन्द जी-अलीगढ़, स्वामी सत्यानन्द जी-हरियाणा, स्वामी रामानन्द जी-बिहार, स्वामी शंकरदेव जी-उ.प्र., आचार्य विरेन्द्र गुरु जी-भुज, हसमुख भाई परमार-महामंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा गुजरात आदि अनेक स्थानों से गणमान्य महानुभावों के दर्शन लाभ का अवसर प्राप्त होगा।

आर्य समाज सेवा चेरीटेबल ट्रस्ट की मंत्री गीता आर्या द्वारा अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर आयोजन का लाभ लेने का विनम्र अनुरोध सर्वजनों से किया गया है। साथ ही इस पवित्र आयोजन हेतु तन-मन-धन से तथा नवीन-पुरानी पुस्तकें, कम्बल, वस्त्र, खाद्य सामग्री से सहयोग की भी विनती की गई है।

सम्पर्क सूत्र - ०२६१-२२३४०८४, २२७३६७६, ९४२६१४०८२९

महर्षि दयानन्द सरस्वती एक्युप्रेशर सेवा केन्द्र का शुभारम्भ

आर्य समाज मन्दिर, महर्षि पाणिनि नगर पुजला जोधपुर में दि. ३० नवम्बर को जन सेवा हेतु महर्षि दयानन्द सरस्वती एक्युप्रेशर सेवा केन्द्र का शुभारम्भ किया गया। आर्य समाज के प्रधान श्री गजेन्द्रसिंह सांखला एवं उनके भ्राता श्री महेन्द्र सिंह सांखला द्वारा अपने माता-पिता स्व. श्रीमति मथुरादेवी एवं स्व. श्री मांगीलाल जी सांखला (भामाशाह रत्न से सम्मानित) की स्मृति में एक्युप्रेशर के समस्त आधुनिक उपकरण उपलब्ध कराये गये। **प्रतिदिन सायं ४ बजे से ६ बजे तक विशेषज्ञों की देख-रेख में विभिन्न रोगों का उपचार होगा।** उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि श्री नरेन्द्र जी, किशोर सिंह जी टाक-पार्षद वार्ड क्र. ६२, राजेन्द्र सिंह जी-पार्षद वार्ड क्र. ६३, किशोर जी गहलोत, मेगाराम जी (समाजसेवा) को माला व स्मृति चिन्ह भेंट किया गया।

आर्य भजनोपदेशिका बहिन सुश्री अंजलि आर्या के भजनों की डी.वी.डी. का विमोचन पूर्व प्रधान सेठ खेमसिंह जी भाटी, श्री संवाईसिंह व अतिथियों द्वारा किया गया। जोधपुर के समस्त आर्य समाजों से आर्य जन सर्वश्री सेवाराम जी, अमृतलाल जी, रामेश्वर जी जसमतिया, दुर्गादास जी वैदिक, लक्ष्मण जी, विक्रमसिंह जी, धिरेन्द्र जी भाटी, मदन जी तंवर, दाऊलाल जी, सवाईसिंह जी, अरविन्द जी, आनन्दस्वरूप जी, सुरेन्द्रसिंह जी, सम्पतराज जी, रूपवती देवड़ा, अदिति, प्रमीला, रेणु, मीमा, मनीशा भाटी, सरोज भाटी, सन्तोष आर्या, शिवराम जी, नरेन्द्र जी, आशुतोष परिहार, राजेन्द्र जी, दिलीप टाक, किशन जी, इन्द्रप्रकाश तथा अन्य गणमान्य महानुभाव उपस्थित रहे। अल्पाहार कि व्यवस्था की गई थी। उद्घाटन के पश्चात् वेदगोष्ठी का आयोजन रखा गया। नई पीढ़ी को आर्य समाज से जोड़ने हेतु आर्य वीरदल की शाखा संचालन व पारीवारिक यज्ञ करवाने के प्रस्ताव पर विचार विमर्श किया गया। मंच संचालन श्री शिवराम जी शास्त्री व धन्यवाद श्री करण सिंह जी भाटी व अमृतलाल जी जसमतिया द्वारा किया गया। -**कैलाश चन्द आर्य,** कोषाध्यक्ष, मो.-९४६००८३१३३

गुरुकुल प्रभात आश्रम का वार्षिकोत्सव

गुरुकुल प्रभात आश्रम, टीकरी, भोला झाल, मेरठ (उ.प्र.) का वार्षिकोत्सव कुलाधिपति स्वामी विवेकानन्द जी सरस्वती के आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन में भव्य समारोह पूर्वक आयोजित किया जा रहा है जिसमें धर्मनिष्ठ जन सादर आमंत्रित हैं।

कार्यक्रम

ऋग्वेद पारायण महायज्ञ प्रारम्भ - दिनांक-५ जनवरी २०१५

वैदिक वाङ्मय में देवताओं का स्वरूप विषय पर वेद संगोष्ठी - दिनांक-१३ जनवरी २०१५

वार्षिकोत्सव मुख्य आयोजन - १४ जनवरी २०१५

नव प्रविष्ट ब्रह्मचारियों का उपनयन व वेदारम्भ संस्कार तथा महायज्ञ पूर्णाहुति - प्रातः ९ बजे से

प्रवचन, भजन एवं ब्रह्मचारियों की बौद्धिक प्रस्तुति - ११ से ४ बजे तक

ब्रह्मचारियों का शारीरिक शौर्य प्रदर्शन - सायं ४ से ५ बजे तक

निवेदक एवं सम्पर्क सूत्र- आचार्य वाचस्पति (मन्त्री) ७५९९१५६७८१

गुरुकुल प्रवेश सुचना

श्री कृष्ण आर्ष गुरुकुल (गोमत) अलीगढ़ (उ.प्र.) में अप्रैल २०१५ में प्रवेश होंगे। प्रवेश छटी कक्षा से होते हैं। विद्यार्थी कुशाग्र बुद्धि व शारीरिक रूप से स्वस्थ होना चाहिए। **स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती की देख-रेख में संचालित यह गुरुकुल मुस्लिम क्षेत्र में युवा निर्माण का कार्य कर रहा है।** आर्ष शिक्षा प्रणाली के माध्यम से ब्रह्मचारी विद्या अध्ययन करते हैं। एक छात्र से वार्षिक शुल्क ११००० रू. लिए जाते हैं।

-स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती, आचाय

सम्पर्क-९४१६२६७४८२, ८०५३३५५४९६, ८८५९८२७९१०

वेद प्रचार कार्यक्रम सम्पन्न

आर्य समाज गुनसारा, जनपद-भरतपुर (राज.) के तत्वावधान में चार दिवसीय वेद प्रचार कार्यक्रम का आयोजन किया गया। ग्रामीण क्षेत्र में वेद प्रचार करना कठिन कार्य है लेकिन असम्भव नहीं है। यह सिद्ध करके आर्य सामाजिक कार्यकर्ताओं ने दिखला दिया।

श्री कृष्ण आर्ष गुरुकुल (देवालय) गोमत, जिला-अलीगढ़ (उ.प्र.) के **आचार्य स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती के द्वारा वैदिक मान्यताओं से लोगों को अवगत कराया गया। उन्होंने कहा कि ईश्वर के स्वरूप व धर्म को लेकर समाज में भ्रान्तियाँ फैलाई जा रही हैं। भ्रमित जनता ईश्वर के स्थान पर व्यक्ति-स्थान व प्रतिमाओं की पूजा कर रही है।** जब कि ईश्वर निराकार व सर्वव्यापक है-ईश्वर के स्थान पर किसी की पूजा या उपासना करना अज्ञानता है। उन्होंने बताया कि धर्म के नाम पर धार्मिक पाखण्ड फैलाया जा रहा है। **मजहब-मत अथवा सम्प्रदाय विशेष को धर्म बताया जा रहा है।** धर्म व ईश्वर के नाम पर दुकानदारी चल रही है। **धर्म के नाम पर होने वाले पाखण्ड के कारण युवाओं का विश्वास ईश्वर व धर्म से उठता जा रहा है।** आर्य समाज धर्म और ईश्वर के वास्तविक स्वरूप का प्रचार और प्रसार करता है-जब ईश्वर एक है तो धर्म अनेक कैसे हो सकते हैं मानव मात्र का एक ही धर्म है जिसे हम वैदिक धर्म-मानव धर्म या सनातन धर्म के नाम से जान सकते हैं।

सत्य-अहिंसा, न्याय, प्रेम आदि धर्म हैं। घृणा-हिंसा-मिथ्याचरण, अन्याय के लिए धर्म में कोई स्थान नहीं है। वेद प्रचार कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री ओमप्रकाश आर्य, होश्यारी देवी आर्या, श्रीमती सत्यवती आर्या, श्री भगवानसिंह आर्य, महाशय टीकमसिंह, श्री वीरेन्द्रसिंह आर्य, श्री रतनसिंह आर्य, श्री वेदवीर आर्य, महात्मा देवमुनी आदि का विशेष योगदान रहा। डॉ. बदनसिंह जी आर्य ने भजनों द्वारा प्रचार किया।

thearyasamaj.org

आर्य इण्डस्ट्रीज का शुभारम्भ

महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्य भक्त, लंदन में इंडिया हाउस की स्थापना एवं इण्डियन सोशीयोलाजिस्ट पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ कर विदेशों में बसे भारतियों को एकजुट कर स्वतंत्रता की अलख जलाने वाले **भारत माता के सपूत श्याम जी कृष्ण वर्मा के गृहग्राम मांडवी** से मात्र २ किलोमीटर दूर मस्का ग्राम में अंजार वाले श्री लखमशी भाई वाड़िया द्वारा स्थापित **आर्य इंडस्ट्रीज का शुभारम्भ आर्य जगत् के उद्भट विद्वान् स्वामी शान्तानन्द जी सरस्वती एवं गुजरात शासन के गौ संवर्धन राज्य मंत्री माननीय ताराचन्द भाई छेड़ा की गरिमामयी उपस्थिति में आप महानुभावों के करकमलों द्वारा किया गया।** इस अवसर पर आचार्य विरेन्द्र गुरु-जी-भूजोड़ी, श्री अमुल ईठिया, तहसील प्रधान-भा.ज.पा., चंदूभाई पांड्या प्रधान-तालुका पंचायत, आर्यसमाज मांडवी के प्रधान-श्री नवीन भाई वेलाणी आदि उपस्थित थे। विद्युत चलित विशाल उद्योग का कार्य शुभारम्भ वेदमंत्रों की ध्वनी के साथ विद्युत बटन दबाकर करने पश्चात् अतिथियों का पूर्ण वैदिक गरिमा युक्त मंच जिस पर ओ३म् ध्वजाओं के बीच उद्योग का नामपट्ट (बैनर) के दोनों और महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा हलधर बलराम के चित्र लगे हुए थे।.

मंत्री महोदय द्वारा अपने उद्बोधन में क्षेत्र के विकास हेतु कृषि, पशुपालन एवं औद्योगिक विकास हेतु राज्य सरकार द्वारा प्रयत्नशील होने, क्षेत्र में कोल्ड स्टोरेजों एवं कांडला तथा मुन्द्रा बन्दरगाहों के अतिरिक्त एक ओर बन्दरगाह विकसित करने की जानकारी से अवगत करवाते हुए हरसंभव सहयोग सरकार की ओर से किये जाने का विश्वास दिलाया। वैदिक मान्यताओं के पोषक एवं मार्गदर्शक स्वामी शान्तानन्द जी सरस्वती जिनके अथक प्रयासों से कच्छ क्षेत्र एवं देश के दूरस्थ स्थानों पर वैदिक धर्म ध्वजा का परचम फहरा रहा है के द्वारा कर्म तथा पुरुषार्थ को केन्द्रित करते हुए मानव जीवन के कल्याणकारी उपदेशों युक्त सारगर्भित प्रवचन हुए। **चित्र देखें पृष्ठ - २ पर**

स्पष्टीकरण

गत अंक नवम्बर २०१४ के पृष्ठ -४३ पर **'बाबाओं से विवादों का पुराना नाता'** प्रकाशित किया गया था उपरोक्त समाचार हमने नई दुनियाँ समाचार पत्र से लिया था, जिसका संदर्भ हमने समाचार के अन्त में दे दिया था तथा उपरोक्त विषय में किसी का नाम लिखे बगैर अंधविश्वास और पाखण्ड निवारणार्थ जन जागृति निमित्त अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की थी। हमारी किसी के प्रति दुराग्रह व दुर्भावना नहीं थी।

गीता स्वाध्याय पत्रिका के सम्माननीय सम्पादक डॉ. श्रीलाल जी ने पत्र द्वारा अवगत करवाया है कि उपरोक्त समाचार में **शंकराचार्य जयेन्द्र सरस्वती का उल्लेख भ्रान्तिवश या दुर्भावना से किया लगता है। जयेन्द्र सरस्वती जी को उपरोक्त अभियोग (नव. २००४) में माननीय उच्च न्यायालय द्वारा दोष मुक्त किया जा चुका है। इतना ही नहीं माननीय न्यायालय ने पुलिस अधीक्षक को षडयंत्र पूर्वक/दुर्भावना से कार्यवाही तथा जाँच हेतु फटकार भी लगाई है।** उपरोक्त संदर्भ में पुनः निवेदन है कि यह समाचार समाचार पत्र से लिया गया है वैदिक संसार की किसी व्यक्ति अथवा संस्था के प्रति दुराग्रह नहीं है। यहाँ प्रसंग मात्र उठने वाले विवादों का है कौन दोषी है या नहीं यह देखना मानवीय अदालतों का कार्य है। अगर किसी को अदालत ने दोष मुक्त कर दिया है तो वह भी जग जाहिर है। हम उसके लिये पुनः स्पष्ट करते हैं कि हमारी भावना किसी को भी ठेस पहुँचाने की नहीं है। अगर किसी की भावना को ठेस पहुँची हो तो उसके लिये खेद व्यक्त करते हैं। इतना भर अवश्य कहना भी चाहेंगे कि आज कोई धर्माधिकारी/मठाधीश जिनकी भारत में बाढ़ आई हुई है वे किसी अपराधिक आरोप के दोषी हो या न हो किन्तु धर्म के गीरते स्वरूप को न बचा पाने के दोषी तो वे हैं ही। - **सम्पादक**

विशाल युवा शक्ति सम्मेलन

दिनांक १४ फरवरी २०१५

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द जी सरस्वती के १९१वें जन्मोत्सव के पावन अवसर पर **१४ फरवरी २०१५ शनिवार को पलवल (हरियाणा) में विशाल युवा शक्ति सम्मेलन** होगा। इस अवसर पर इक्कीस कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का अनुष्ठान भी किया जायेगा। धार्मिक पाखण्ड, जातिवाद, नशाखोरी, कन्याभ्रूण हत्या, माँसाहार, भ्रष्टाचार, साम्प्रदायिकता आदि मुद्दों पर **डॉ. प्रमोद जी परमार्थी, आचार्य दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय हिसार, स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती आदि विद्वानों के प्रवचन होंगे।** युवाओं से पाखण्डवाद माँसाहार, नशा आदि से आजन्म दूर रहने का संकल्प कराया जायेगा। उपस्थित युवाओं को महर्षि दयानन्द जी सरस्वती के चित्र देकर सम्मानित किया जायेगा।

संयोजक-राजेन्द्र बैसंला, **आयोजक**-सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद, पलवल

महामहिम प्रणव दा के मुख्य आतिथ्य में वैदिक राष्ट्र कथा यज्ञ शिविर

दिनांक २७ से ४ जनवरी २०१५ तक

धर्म प्रेमी सज्जनों को सूचित किया जाता है, कि लगभग १६००० हजार छात्र-छात्राओं का शिविर आयोजित होने जा रहा है, जिसमें अनेक प्रदेशों से विद्यार्थीगण भाग ले रहे हैं। इस शिविर में शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, विकास तथा आत्मविश्वास राष्ट्रभक्ति तथा माता-पिता, गुरुभक्त बनाने की शिक्षा मिलेगी। इस कार्यक्रम में शिक्षाविद् न्यायमूर्ति, वैदिक विद्वान् उपदेशक, योगाचार्य, व्यायामाचार्य, शिक्षक, वैज्ञानिक तथा आर.पी.एफ. एवं बी.एस.एफ द्वारा आपदाओं से निपटने के सूत्र भी सीखने को मिलेंगे। तथा अन्य विधाये भी सीखायी जायेगी।

इस कार्यक्रम में विशेष आकर्षण भारत के महामहिम राष्ट्रपति महोदय पधार रहे हैं।

फिल्म अभिनेता मुकेश खन्ना तथा भजनोपदेशक भानुप्रकाश शास्त्री बरेली भी पधार रहे हैं।

अतः अनुरोध है, कि अधिक से अधिक संख्या में पहुँच कर शिविर का लाभ प्राप्त करें।

-: कार्यक्रम स्थलः-

प्रांसला आश्रम (वैदिक गऊ शाला)
तहसील-उपलेटा राजकोट (गुज.)

शिविर संयोजकः-
स्वामी धर्मबन्धु जी महाराज,

सम्पर्क सूत्रः- ०९०९९९०००००

मार्ग पहुँचः- राजकोट से राज मार्ग पोरबन्दर पर लगभग ४० किलोमीटर की दूरी पर धरती होटल से प्रांसला जाने की रोड़ है।

नोटः- शिविर की ओर से भोजन एवं आवास की निःशुल्क व्यवस्था आंगतुकों हेतु की गई है।

वैवाहिक आवश्यकताऐं

हाथरस (उ.प्र.) निवासी जांगिड ब्राह्मण ४० वर्ष, तलाकशुदा, ६ वर्षीय बालिका सहित, पश्चिमी उ.प्र. में सरकारी अध्यापक, कद-५ फिट ६ इंच, एस.एस.सी. (भौतिक विज्ञान), एम.ए. (सामाजिक विज्ञान), बी.एड., निर्व्यसनी, शाकाहारी, आर्य परिवार हेतु शिक्षित, मंगली (विधवा)/ सामान्य, निःसन्तान संस्कारित युवती चाहिए। **सम्पर्क** - ०९९९७२२१६७५

बड़वानी (म.प्र.) निवासी तलाक शुदा युवती, आयु-१८.११.१९८६, कद- ५ फिट २ इंच, रंग-गेहुआ, शिक्षा-भारतीय संस्कृति पर्यटन में एम.ए. देव संस्कृति हरिद्वार से, बी.एड, पी.एच.डी. पूर्ण (मन्दिरों का शिल्प वैभव इतिहास में) हेतु सुयोग्य वर की आवश्यकता है।

विषेश :- आर्यसमाज के शास्त्री व आचार्य को प्राथमिकता, शासकीय नौकरी वाले भी सम्पर्क कर सकते हैं।

सम्पर्क - ०९४०७१७६०६३, ०९४२४८९४४८६

thearyasamaj.org

निर्वाचन सम्पन्न

स्त्री आर्य समाज वैदिक आश्रम अलीगढ़ (उ.प्र.) का नव निर्वाचन सर्व सम्मति से निम्नानुसार सम्पन्न हुआ:-

संरक्षक - श्रीमती रत्नेश आर्य, श्रीमती श्रीदेवी शर्मा, **प्रधान** - श्रीमती दर्शन देवी भारद्वाज, **उपप्रधान** - श्रीमती माण्डवी चौहान, **मन्त्री** - श्रीमती ऊषा गर्ग, **कोषाध्यक्ष**- श्रीमती डॉ. कमला कुमार निर्वाचित हुए।

प्रस्तोता :- उषा गर्ग (मन्त्री)

शोक-सूचनाऐं

डॉ. उमांकान्त उपाध्याय की कमी महसूस होती रहेगी

आर्यसमाज के शीर्षस्थ विद्वानों में जिनका नाम सदा अग्रणी रहता था उनकी मृत्यु का समाचार सुनकर अत्यन्त दुःख हुआ। लगभग ४० वर्षों से भी अधिक श्री उपाध्याय जी के लेखों से आर्यजनता अवगाहित होती रही है। वे प्रत्येक विषय के ज्ञाता थे। चाहे इतिहास, अध्यात्म, संस्कृति या राजधर्म हो आपने हर क्षेत्र में अपनी लेखनी उठाई है। आप एक अच्छे वक्ता भी थे। हैदराबाद के वैदिक संसद में मैं और पं. उपाध्याय जी वक्ता के रूप में आमन्त्रित थे। पं. उमाकान्त जी ने आर्यसमाज की तीसरी पीढ़ी की शोभा बढ़ाई है। आपके विचारों से हिन्दू और आर्य युवक प्रबोधित हुआ है। आपका साहित्य नव युवाओं को प्रेरणा देता रहेगा। ऐसा मुझे विश्वास है। **(जीवन परिचय पढ़े आगामी अंक में)**

भजनोपदेशक पं. बेगराज जी आर्य एवं माता प्रेमलता शास्त्री जी को शतशः श्रद्धांजली

आर्यजगत् के सम्माननीय भजनोपदेशक एवं प्रखर वक्ता पं. बेगराज जी आय को नई और पुरानी दोनों पीढ़ियाँ जानती हैं। उनके ओजस्वी भजनोपदेश सुनकर श्रोता झूम उठते थे। मैं जब गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में पढ़ता था अक्सर पं. बेगराज जी को आमंत्रित किया जाता था। उनके भजनों एवं वक्तृत्व शैली का मेरे जीवन पर बड़ा प्रभाव पड़ा है। मैं १९८१ से १९८७ तक महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा में भजनोपदेशक के रूप में सेवारत था तब मेरे संगीत और वक्तृत्व पर पं. जी की शैली का भी प्रभाव था। उनकी वीर रस से और मधुर संगीत में भीगी वाणी सुनकर श्रोतागण झूम उठते थे। वे नवयुवकों के प्रेरणा स्थान थे। आगे आने वाली पीढ़ी उनके विचारों से प्रेरणा लेती रहेगी।

उसी तरह **माता प्रेमलता शास्त्री जी** के देहावसान से भी आर्य जगत् की भी बड़ी हानी हुई है। माता प्रेमलता जी ने अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के माध्यम से वनवासियों तथा पिछड़े विभागों में शिक्षा द्वारा हिन्दू आर्य जाति का प्रचार-प्रसार कर बड़ा महत्वपूर्ण कार्य किया है। ९२ वर्ष की आयु तक आप दीन दुर्बल पीड़ित लोगों की सेवा कर नवयुवकों को एक प्रेरणा दी है। आपके सेवा कार्य से आर्यजन पिछड़े वन क्षेत्रों में हिन्दू आर्य संस्कृति का प्रसार करते रहेंगे ऐसी आशा है, यही उनके लिए सच्ची श्रद्धांजली होगी।

-**प्रा. डॉ. चन्द्रशेखर लोखण्डे,** सीताराम नगर, लातूर (महा.)

डॉ. विश्वकर्मा जी को पितृ शोक

श्री जगन्नाथ प्रसाद जी विश्वकर्मा, पिता-श्री घूड़मल जी विश्वकर्मा निवासी-नसरूल्लागंज, जिला-सिहोर (म.प्र.) का निधन ९७ वर्ष आयु अवस्था में दिनांक ३०.११.२०१४ को हो गया। आप आध्यात्मिक प्रवृत्ति के मिलनसार व्यक्ति थे। आप अपने पीछे दो सुपुत्र **श्री बाबूलाल जी विश्वकर्मा** (से.नि. अध्यापक), **डॉ. रमेशचन्द्र जी विश्वकर्मा** (शल्य चिकित्सा विशेषज्ञ-सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र नसरूल्ला गंज) का भरा पूरा परिवार छोड़ गये है।

वैदिक संसार के प्रतिनिधि हजारीराम सोलंकी को पितृ शोक

श्री अर्जुन जी सोलंकी के पड़ पौत्र **श्री अन्नाराम जी** पुत्र श्री कुसटाराम जी का दिनांक २६-०९-२०१४, शुक्रवार को निधन हो गया है। श्री अन्नाराम जी ने अपने भरे पुरे परिवार को छोड़ आगामी जीवन यात्रा हेतु प्रस्थान किया। श्री अन्नाराम जी हसमुख स्वभाव के थे जो पूरी जिन्दगी किसी के हरी भरी में नहीं रहे हमेशा निश्छल, निष्पक्ष भाव लिए बुजुर्गों के साथ बुजुर्ग, युवाओं के साथ युवा एवं बच्चों के साथ बच्चे जैसा व्यवहार कर अपना जीवन जिया।

प्रपौत्र का नामकरण संस्कार किया और संसार से विदा हो गये

श्री नारायण जी शर्मा, निवासी-गोविन्द गढ़, जिला-अलवर (राज.) के परिवार में प्रसन्नता का पारावार न था। लगभग शतायु अवस्था में चल रहे नारायण जी के यहाँ कुलदीपक रूप में प्रपौत्र ने जन्म लिया था। वैदिक सिद्धांतों के दृढ़ सिपाही बालक के दादा जी श्री मुन्नालाल जी शर्मा **''अध्यापक''** महो. ने पं. विनोदीलाल जी दीक्षित राजगढ़ (अलवर) वालों से बालक के नामकरण संस्कार हेतु विचार-विमर्श कर दिनांक १ दिसम्बर का दिन नियत किया। स्नेहीजनों, सगे-सम्बन्धियों को आमंत्रित किया गया। वैदिक संसार प्रकाशक सुखदेव शर्मा को भी आमंत्रित किया गया। **पूर्ण वैदिक विधि विधान से नामकरण संस्कार सम्पन्न किया गया।** बालक की माता-श्रीमती रजनी शर्मा, पिता-सुरेन्द्र मोहन जी शर्मा, पितामह-मुन्नालाल जी शर्मा तथा प्रपितामह-श्री नारायण जी ने अन्य परिवारजनों के साथ यज्ञ में आहुतियाँ प्रदान की। **बालक का नाम आदित्य रखा गया।** इस अवसर पर पं. दीक्षित जी को दक्षिणा के साथ वैदिक संसार को भी सहयोग स्वरूप ११०० रूपये भेंट किये गये। इस अवसर पर आर्य समाज गोविन्दगढ़ के पदाधिकारी तथा बड़ी संख्या में स्नेहीजन उपस्थित हुए स्नेह भोज का आनन्द लिया। बधाईयाँ व बालक के उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएँ दी।

इस उल्लास पूर्ण वातावरण में बालक के प्रपितामह श्री नारायण जी पूर्ण रूपेण स्वस्थ थे। सबसे प्रसन्न चित्त होकर मिले। सबको और पधारने का कह विदा किया और दूसरे दिन २ दिसम्बर को इस संसार से विदा हो गये। **आपका अंतिम संस्कार पूर्ण वैदिक विधि अनुसार किया गया।**

प्रथम पुण्य तिथि पर विनम्र श्रद्धांजलि

इस पंच भौतिक तत्वों से निर्मित शरीर को नश्वर देह कहा गया है। **स्मृति शेष श्री छोगाराम पुत्र लुणाराम जांगिड, शासन-पाखरवड़, ग्राम-जाणादेसर, जिला-जोधपुर, राजस्थान** का निधन दि. ०२/०१/२०१४ को हो गया था। आपके मिलनसार स्वभाव को हम कभी भूल नहीं पायेंगे। जो इस संसार में आया है उसको एक न एक दिन जाना ही है इसीलिये ईश्वर दिवंगत आत्मा को शान्ति दे। प्रथम पुण्य तिथि पर हम परिजन अपनी भावरूपी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

जब तक जीवन है आप स्मृतियों में रहेंगे

श्रीमती हेमीबाई (पत्नी), मांगीलाल, मीखाराम तथा अमृतलाल (पुत्र), पेमाराम तथा चैनाराम (भाई), भगवानराम फौजी, लिछीराम एवं बाबूलाल (भतिजे), श्रीमती सुन्दर देवी एवं श्री सुखदेव जी, श्रीमती सोहनी देवी एवं श्री दोलतराम जी, श्रीमती गोमी देवी एवं श्री अनोपराम जी (पुत्रीयाँ व जंवाई) रमेश, राकेश, निषिकेत, यशराज (पौत्र), डूंगरराम, घेवरराम, दिपाराम, चुत्राराम लोढा आराबा (ससुराल पक्ष)।

समस्त दिवंगत आत्माओं के प्रति वैदिक संसार परिवार अपनी भावांजलि व्यक्त करता है तथा शोक-संतप्त परिजनों के हेतु गहन शोक-संवेदना व्यक्त करता है -सम्पादक

thearyasamaj.org

मृत्युभोज के स्थान पर बृहद वैदिक सत्संग का आयोजन धरमपुरी, जिला – इन्दौर में

विस्तृत विवरण पृष्ठ ३८ पर

स्वामी शांतानन्द जी सरस्वती प्रवचन करते हुए

पं. कमलकिशोर जी शास्त्री बैरसिया भजनोपदेश करते हुए

श्रीमती सरीता आर्या बड़नगर द्वारा भजन प्रस्तुति

यजमान दम्पत्ति एवं अन्य देवयज्ञ में आहुति प्रदान करते हुए

स्वामी शान्तानन्द जी यजमान दम्पत्तियों को आशीर्वाद प्रदान करते हुए

आर्य समाज की स्थापना का कार्यभार श्री मोहनलाल जी शर्मा को सौंपते उपस्थित महानुभाव

वेदवाणी का अमृतपान करते हुए भद्रजन

वेदवाणी श्रवण का सौभाग्य बृहद संख्या में उपस्थित मातृ शक्ति एवं स्नेहीजन को

हरियाणा एवं राजस्थान के स्नेहीजनों के मध्य श्री मोहनलाल जी शर्मा एवं प्रकाशक वैदिक संसार

आर्य समाज गान्धीधाम (कच्छ) गुजरात का हीरक जयंती समारोह हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न

विस्तृत विवरण पृष्ठ ४१ पर

हीरक जयंती पर सुसजित आर्य समाज गान्धीधाम का संस्कार केन्द्र एवं ध्वाजारोहण करते गणमान्य महानुभाव

आचार्या नन्दिता जी शास्त्री आत्म कल्याण संकल्प महायज्ञ सम्पन्न करवाते समीप विराजित है साध्वी डॉ. उत्तमायति जी

आत्म कल्याण संकल्प महायज्ञ में यजमान दम्पत्ती अपनी आहुतियाँ प्रदान करते हुए

आर्य समाज गान्धीधाम के ट्रस्टीगणों को उनकी कर्त्तव्यनिष्ठा के फलस्वरुप स्मृति चिन्ह से सम्मानित किया गया

जीवन प्रभात एवं डी.ए.वी. के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक आयोजन राष्ट्रभक्ति गीत की प्रस्तुति

बिग्रेडियर चित्तरंजन जी सांवत एवं अन्य गणमान्य महानुभावों का आत्मीय अभिनन्दन ट्रस्ट द्वारा

thearyasamaj.org

आर्य जगत् की सम्पन्न विविध गतिविधियों की चित्रावली

स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक रोजड़ आर्य संन्यासी सम्मान से सम्मानित

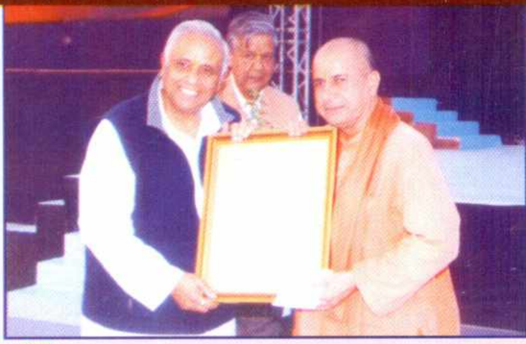

मा.पूनम सूरी जी प्रधान –आर्य प्रादे.प्रतिनिधि सभा दिल्ली एवं प्रधान डी.ए.वी.कॉलेज प्र. विशाल सभागार में बृहद संख्या में उपस्थित आर्यजनों को संबोधित करते हुए

विस्तृत विवरण पृष्ठ ४२पर

स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक, रोजड़ के सम्मान अवसर पर आयोजन की गरिमा में वृद्धि करती मातृशक्ति

स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक रोजड़ के सम्मान समारोह के साक्षी आर्यजन

आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री संपादक – अध्यात्म पथ को संस्कृति गौरव सम्मान से सम्मानित किया गया।

विस्तृत विवरण पृष्ठ ४२पर

श्री रामनाथजी सहगल मंत्री – म.दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा को आजीवन उपलब्धी पुरस्कार से सम्मानित किया गया

विस्तृत विवरण पृष्ठ ४२पर

डॉ. अशोक आर्य सम्पादक आर्यावर्त केसरी लाला लाजपतराय बलिदान दिवस पर कोटा में समीप हैं जिलाध्यक्ष अर्जुनदेव चड्ढा

गुजरात राज्य में प्रथम बार आयोजित आर्य परिवार वैवाहिक युवक–युवती परिचय सम्मेलन आणंद में आयोजित

विस्तृत विवरण पृष्ठ ४३पर

विस्तृत विवरण पृष्ठ ४३पर

भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक महोदय द्वारा पंजीकृत, पंजीयन संख्या, एम.पी.एच.आई.एन.- २०१२/४५०६६,डाक पंजीयन-एम.पी./आई.डी.सी./१४०५/२०१२-१४

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक - सुखदेव शर्मा 'जांगिड'-इन्दौर, इन्दौर ग्राफिक्स-२४ कुंवर मण्डली खजुरी बाजार से मुद्रित, १२/३, संविद नगर-इन्दौर-४५२०१८ से प्रकाशित, संपादक - गजेश शास्त्री, चलभाष - ०९९९३७६५०३१, कार्यालय - ०७३१-४०५७०१६